भकली – जकली

(छत्तीसगढ़ी उपन्यास)

डॉ. रमेश टण्डन

राज पब्लिशिंग हाउस
जयपुर

प्रकाशक :

किरण परनामी

राज पब्लिशिंग हाउस

44, परनामी मंदिर, गोविन्द मार्ग, जयपुर–302004

Cell : 09414051782

Email : shreerajpublishing@gmail.com

भकली – जकली

(छत्तीसगढ़ी उपन्यास)

© डॉ. रमेश टण्डन

International Standard Book No. (ISBN)
978-81-69301-01-5

संस्करण : 2026

मूल्य : 100/–

पुस्तक वितरण क्षेत्राधिकार : सम्पूर्ण भारत

पुस्तक प्रकाशन में सम्पूर्ण सावधानी बरती गई है। फिर भी किसी त्रुटि, कमी अथवा लोप का रह जाना मानवीय भूल के कारण संभव हो सकता है। पुस्तक में प्रकाशित लेख के विचारों हेतु सम्पादक एवं प्रकाशक की कोई जिम्मेदारी नहीं हैं।

मुद्रक

ट्राईडेन्ट एन्टरप्राइजेज, दिल्ली

मोर गोठ

छत्तीसगढ़ही भासा म 8 स्वर अऊ 29 व्यंजन कहे गेहे। स्वर म – अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ओ होथे।

व्यंजन म –

क, ख, ग, घ,

च, छ, ज, झ,

ट, ठ, ड, ढ, ण,

त, थ, द, ध, न,

प, फ, ब, भ, म,

य, र, ल, व, स, ह होथे। एला डाक्टर नरेंद्र देव वर्मा हर कहे हे।

मोर बिचार से व्यंजन म एक ठन अऊ अक्छर जोड़े के काम ए– 'ड़'। एकर बिना काम नई चलत हे। 'ड़' ल मिला के व्यंजन के संख्या ह 30 हो जाही। जईसे, हिन्दी म एक वाक्य हे – ''उसने पुस्तक पढ़ी।'' एला छत्तीसगढ़ही म 29 व्यंजन के अनुसार लिख के देखबो त ''वो ह पुस्तक पणहीस'', वो ह पुस्तक पडहीस'', वो ह पुस्तक पढीस'', वो ह पुस्तक पढहीस'' होथे। एमा के कोनो वाक्य ह जमत नीए। छत्तीसगढ़ही म एकर सही वाक्य होही– ''वो ह पुस्तक पड़हीस।'' त आज ले मोर अनुसार (डॉ. रमेश टण्डन के अनुसार) छत्तीसगढ़ही म 8 स्वर अऊ 30 व्यंजन होईस –

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ओ = 08 स्वर।

क, ख, ग, घ,

च, छ, ज, झ,

ट, ठ, ड, ढ, ण,

त, थ, द, ध, न,

प, फ, ब, भ, म,

य, र, ल, व,

स, ह, ड़

= 30 व्यंजन।

हिन्दी के अऊ आने अक्छर, जेमन छत्तीसगढ़ही म नीए, ओमन ल अईसे लिखे बर हे –

ऋ = रि

ऐ = अई

औ = अऊ

अं = अंग

अः = अहा

ङ = अंगा

ञ = निया

श = स

ष = स

क्ष = छ

त्र = तरा

ज्ञ = ग्य

ढ़ = ड़ह

श्र = सरा

हिन्दी म एक वाक्य के उदाहरण देथों– मैं जा रहा हूँ। एला छत्तीसगढ़ही म कई प्रकार से कहे जाथें। अलग–अलग छेतरा म अलग–अलग बोलथें। मोर छेतरा अरथात् खरसिया आसपास म ''में जाथों''

बोलथें। रइपुर डाहर ''मँय जावत हों'' बोलथें। मोर ए बिचार ए कि में आने छेतरा के बोली ल काबर चोराँव। में अपनेच छेतरा के बोली म काबर नी लिखों। एकरे सेंथी मोर ई उपन्यास के छत्तीसगड़ही सब्द म बिलासपुरिहा या रईपुरिहा छत्तीसगड़ही ले अंतर मिलही। मोला अपन के आवाज देय बर हे, अपन के भासा–संस्कीरिती ल बगराय बर हे। जईसे ऊपर के वाक्य ''में जाथों'' ल अंगरेज मन अपन के अंगरेजी भासा म –''हाई हेम घोईंग'' कहीं अऊ भारत के मन ''आई एम गोईंग'' बोलहीं। त हमन अपन के जीभ ल काबर बिगाड़ी ? अपन के बोली–भासा ल छोड़ के आने के नकल काबर करी ? कँउवा ह कोयल के नकल करही त ओ ह कोई अंगत के नी रह पाय। अईसने हमु मन अपन के मूल चरित्तर म रही। ए मोर बिचार ए। ई उपन्यास म कुछु सब्द या वाक्य अईसे घलो हे जे ह कोनो विसेस भासा के विसेस सब्द ए, ओला ओकरेच भासा म लिखे के प्रयास करे गेहे। कुछु सब्द अईसे घलो हे जे ह हिन्दी म हे, लेकिन छत्तीसगड़ही म ओमन बर उसनेच अक्छर नी मिलीस त छत्तीसगड़ही के अक्छर म ओमन ला लिखे गेहे, जईसे– 'छत्तीसगढ़ी' ल 'छत्तीसगड़ही', 'भाशा' ल 'भासा', 'अक्षर' ल 'अक्छर', 'श्रीनयना' ल 'सीरीनयना', 'पैसा' ल 'पईसा', 'ऐसे' ल 'अईसे', 'मौत' ल 'मउत' आदि लिखे गेहे।

ए उपन्यास के नाम भकली–जकली ए। भकली ह दाई ए, जकली ह बेटी ए। भकली ह भेकलीन ए अऊ समाज सेविका ए। जकली ह जेकलीन ए अऊ कलेक्टर ए। एमन ल ही प्रमुख पातरा बनाए गेहे। संग म एमन के काम ल अमर–जमर बनाए खातिर 'भकली–जकली' के रूप म एक संस्था के रचना घलो करे गेहे। ए उपन्यास म संस्कीरिती ल आज के समे म परखे गेहे। संग म ठग–भुलवारे वाला मया ल घलो उकेरे गेहे, जेमा मईलोग मन के सोसण होथे अऊ ओमन पता घलो नी पाय। दिल के मया ह ई उपन्यास म पोट जगा पाईसे। एमा अधिकार–कानून–संविधान के बात, ईस्वर के निर्गुण–सगुण के सच, अंधविस्वास–ढोंग के चलन–प्रथा अऊ दुख के कारण–परिणाम के दार्सनिक भाव के बखान करे गेहे।

परिवार के ददा कौशल प्रसाद टण्डन, दई फूलकुँवर टण्डन, दादी लैनमती टण्डन, ससुर जी फूलसाय कुर्रे, सासु माँ बिसाहीन कुर्रे सबो झन ल गोड़ छू के पाँव परत हों। पत्नी पूर्णिमा टण्डन, बेटी हेमलता टण्डन, दामांद वीरेन्द्र अजय, बेटी देवला टण्डन, दामांद उपेन्द्र नाथ भारद्वाज, बेटी डिम्पल

टण्डन, बेटी दोलिका टण्डन, बेटा सानिध्य टण्डन, नाती गीतार्थ भारद्वाज, पोता कियांश टण्डन, नाती ईशांक रात्रे ल मया–दुलार–आसीस।

ए उपन्यास के कत्था अऊ गोठ–बाठ म कई झन मइनसे के नाँव अऊ जगा के नाँव आईस हे, ओ सब ह काल्पनिक ए। यदि एमे के कोनो घटना ले काकरो घर, परिवार, समाज, राज, देस, धरम या संस्कीरिती ल या कोनो मइनसे ल ठेस पहुँचही त या आने कुछु बात ले नराज होईहा त ओकर बर में अपन क दिल ले माफी मांगत हों। ए उपन्यास म जान–बूझ के काकरो मन ल ठेस नी पहुँचाय गेहे, तभो ले यदि कोनो आहत हो जाहा, त माफी दिहा। जय जोहार। जय गुरतुर छत्तीसगढ़ही भासा।

डॉ. रमेश टण्डन
(उपन्यास के लिखोईया)

खरसिया,
21 जुलाई 2026 ई.

मोर पापा....

जेखानी में मिडिल स्कूल म पड़हत रहें, ओखानी हमन सब कोई गरमी महीना म अंगना म सूतन। अंगना के एक तीर म एक खटिया म दई सुते, ई अंगत कोला जाय के डाहर रहे। दूसर तीर म जेती खोलंग जाय के डाहर रहे, ददा सुते। मांझा म हमन सब लईका मन सुतन। हमन एकेक खटिया म दूदी झन सूतन। दउ ह एक ठी खटिया म एके झी सुते, नींद परे त पापा ह दउ संग म आके सुत जाय। ददा ल हमन कत्था कना, पापा; कहन त पापा ह अपन लइकई खानी के दिन के गोठ ल अऊ पड़हई–लिखई के गोठ ल बताय। हमन अब्बक होके सुनत रहन। सुनत–सुनत नींद पर जाय हमन के। ओई खानी, पापा ह कुछु–कुछु गोठ बताय हे। सुना –

गाँव म काकरो बिहा होत रहीस। मुंधियार होत रहे, पापा ह आने लईका मन के संग म चूलमाटी मे गे रहीस। पापा ह चार–पाँच साल के रहीसे। चूलमाटी ले फिरे के बाद गाड़ा करा मउहा डार के पूजा करीन, तेकर पाछू गुरहा चिला ल एक झन डोकरा ह बाँटे के सुरू करीस। ओकर आघू–पाछू लईका मन झूमे रहें। पापा ह देखीस कि चिला रोटी बाँटे के सुरू होगे हे त झोंकाय बर कुदत जात रहीस, त पापा ह झाय ल गिर गे। पेट के जउनी बाखा ह बनेच छोला गे। अऊ कहाँ के चिला रोटी ? आँसू पोंछत–पोंछत पापा ह घर आगे। बबा ह खाना खा के अंगना म भिंया म यूरिया बोरा म बईठ के बीड़ी ल सुधारत रहीसे। तीन ठन खटिया अंगना म बिछाय रहीसे। पाछू अंगत के खटिया म पापा जाके सूत गे। सुते नी सकीस, उठ के खटिया के चारों तरफ दू–तीन घँ पापा ह

घुमरीस। फेर सुते, फेर रेंगे। छोलाय रहीस, तेकरा जलत रहीस। घर म कोनो ल बतात नी रहे। बड़े पापा ह एक घरी के गेय ल पूछीस– ''का होगे रे, खटिया के एक भाँवर किसे रेंगत हस ?'' पापा कहीस– ''कुछु नोहे।'', बड़े पापा फेने पूछीस– ''बने बता, नी त ठोंखिहाँ।'' पापा हिम्मत करके कहीस– ''गिर गेंय।'' बड़े पापा कहीस– ''कोनो ढकेल दिन का रे?'' पापा नाक सुरकत कहीस– ''नहा, मँईच गिर गेंय।'' ओमन ल कोन बताय कि पापा ल सिरतो म कोई ढकेले रहीस। पापा ह बताथीस त उल्टा अऊ मार पड़थीस, तभो ले एक चटकन पागे। बई ह उठीस अऊ छोलाय रहीस तेकरा माटी तेल लगाईस। पीरा के मारे ओ दिन बनेच रथिया होय के बाद पापा के नींद परीस।

कोला म लई भाजी लगे रहे। पापा ह परिया के मेड़–पार म चलत रहीस त ढेला म हपट गे। डेरी गोड़ के अंगठा ह ठनठना गे। ओईच करा बईठ गे। भारी पिराईस। घर म पापा, बड़े पापा अऊ पापा मन के बड़कादाई रहें। बई अऊ बबा दुनों झन चपले करा के कुनकुनी गाँव म ईंटा बनाय गे रहीन। जादा दुरिहा नी रहीस, ऊँहा सोर दिन। बबा ह सईकिल म लेहे आईस। पापा ल कुनकुनी लेगीस। बिहान दिन चपले के अस्पताल लेगीस। अंगठा म पीप भरे रहे। डाक्टर ह मसक–मसकी के पीप ल बाहर निकालीस, दवाई दिस। दू–तीन दिन पापा ह कुनकुनी में बबा–बई संग र गीस। मझन के अऊ रथिया झाला म सब रहें। हमर गाँव के संग म आने गाँव के मन घलो कमाय गे रहीन ऊँहा। सब के अलग–अलग झाला रहे। संझा सब घर के मईलोग मन अपन–अपन झाला के आघू म पथरा के चूल्हा बना के भात–साग रांधे। कईच्चा ईंटा ह फड़ म सुखात रहे। सुखाय ईटा ल एक के ऊपर एक गांजे रहें। घनघई नी गांज के पोल्ला–पोल्ला करके गांजे रहीन, अऊ सुखाही कके। संझा–संझा पापा ह खोरात–खोरात जा के सबके गंजाय ईंटा ल गन देय। मुंसी के हिसाब अऊ पापा के गनती म एकोरच फरक नी पड़े। मुंसी ह पापा के उमर ल अऊ हिसाब करई ल देख के अबक रहे। पापा ह, जे ईंटा गंजाय रहे, तेकर लंबाई, चउड़ाई अऊ ऊँचान म कतका–कतका ईंटा हे, तेला गन के गुणा कर देय अऊ कुल कतक ईंटा हे, तेला ओईद्दे बता देय।

एकर बाद, सन् चउरासी के बात ए – स्कूल सिक्छा मंतरी बंसीलाल घृतलहरे अऊ ओकर संग म बनेच झन नेता–अधिकारी मन जईत खाम के उद्घाटन करे आईन। गुरू घासीदास के जईत खाम हमरेच घर के आघू म बने रहीसे, अभी तक हे। घर के आघू रोड के एक तीरंग तीन ठन लीम के पेड़

रहीसे। ओला काट के गड्ढा करीन। ओ ह नी बनीस। बाखा म दूसर गड्ढा करीन, अहू ह नी बनीस। फेर बाखा म तीसर गड्ढा करीन, ओमे जईत खाम बनीस। गाँव के दरसन मिस्तरी ह बनाईस। ऊपर के डिजाईन ल बनाय बर माटी के एक ठन गघरी ल लगाय रहीस। जब सीमेंट ह पक गे तब गघरी ल फोर के गिरा दीस। पापा मन के आमापलिहा गुरूजी अऊ बंधिया गुरूजी मन पापा अऊ पापा के संग मन ल जन–गण–मन गाय के प्रेक्टीस करे बर कहे रहें। पापा मन आठ दिन पहीली ल जगा–जगा म अऊ कतकोच जोहान सावधान ठड़ा होके जन–गण–मन ल गा–गा के प्रेक्टीस करत रहीन। मंतरी के आए के दिन आगे। हमरेच आँट म मंच बनीस। पापा ह सादा कुरता पींधे रहे। खालहे के बटन ह टूट गे रहे। बनेच उपाय कर देखीस, बटन नी लग पाईस। बड़ मुस्किल म एक ठ पिन क जुगाड़ होईस। टूटे बटन के जगा म सेफटी पिन लगा लीस। एमन तीन–चार झन पूरा तईयार रहें। मंतरी आगे। बड़ अकन अधिकारी, पुलिस अऊ आने गाँव के मइनसे मन आय रहीन। कार्यकरम म जन–गण–मन होबे नी करीस। पापा मन आमापलिहा गुरूजी अऊ बंधिया गुरूजी ल बड़ खोजीन, लेकिन ओमन कोई करा नी दिखीन। अंते अंगत रहीन होही। कार्यकरम खतम होगे। सब झन हमरेच घर म नावा घर अंगत जेमा दर्रा पाठ के धुरमुस चलाय रहीन लेकिन माटी म छबाय नी रहीस, जमीन म बईठ के खाना खाईन अऊ चल दीन। रथिया बई ह पापा के गोड़ लगड़ीस त नींद परीस, पापा ह थक गे रहीसे।

अगस्त 1991 के महीना रहे। पापा ह फगुरम के लकेसर बबा, जेहा पापा के बड़कादाई के महापरसाद रहीसे, के संग म बारमी कक्छा म भर्ती होय बर डभरा गीस। बारा बजे हटवारा करा के स्कूल पहुँचीन। प्रिंसीपल सर ह नई रहे। फरसवानी के स्कूल गेय रहे चेक करे बर। फिर पापा दुनों साईकिल ल बस म चड़हाके गोबराभांठा गीन। साईकिल ल ढुलात–ढुलात अऊ दुनों झन पइदल चलत–चलत फरसवानी गीन। सर ह फिरत रहे। प्रिसीपल खूँटे सर ह लकेसर ल चिन दारीस। एमन एके संग पड़हे रहीन। सर ह कहीस – ''बता लकेसर, कईसे आय हस?'' नाम ल नी भुलाय रहीस। लकेसर– ''दे दऊ के भरती कराय आय हों। मोर नाती ए। बनेच होसियार ए। सोड़का स्कूल म गणित के गुरूजी नीए, तेकर सेथी तोर स्कूल म पड़ही सर, भरती कर ला।'' क्लासमेट होके घलो लकेसर ह अदब नी भुलाईस, सर ल सर बोलीस। सर ह कहीस– ''काल टीसी लेके स्कूल भेज देबे, तोला नी आय बर लागे।'' पापा खुस होगे। साम के दुनों झन फगुरम आ गिन। रथिया फगुरम म ही पापा ह सुतीस। रात के लकेसर के

नतनीन करा बनेच समे ल बात करत रहीस। ओकर नतनीन ह ओकर दाई–ददा के संग म पाँच साल पहिली हमर घर आय रहीस। ओ समे हमर गाँव म तीन–चार सव एकड़ म मूंगफली लगे रहीस। पापा मन घलो दु खाड़ी मूंगफली लगाय रहीन। मूंगफली उबकाय अऊ तोड़े बर एमन सब कोई हमर गाँव आय रहीन, ओई खानी के पहचान ए, रिस्ता हर तो पहिलीच ल रहीस, मया हर ओमेर ल अऊ बड़ गे। दूसर दिन पापा ह डभरा म जाके बारमी म भरती होगे। पापा के एक झन अऊ संग नावागाँव के ह सोड़का म गणित गुरूजी नी रहीस तेकर कारण किरारी (ड) म भरती होगे।

पापा ह बारमी पढ़हत रहीस। डभरा के हटवारा पारा म आखिरी घर म किराया म रहत रहीस। पापा अऊ बड़े पापा दुनों झन रहें लेकिन बड़े पापा ह कभु नी रहीस। ओ ह कालेज करत रहीस। एक दिन आगी नी बरीस त पापा ह पानी ल चूल्हा म उलद दीस। फिर रोड अंगत चल दीस। थोरकुस पान ठेला म बईठे रहीस। पान ठेला ल एक झन भारी मोटका ह चलाय। कुरता म ओकर पेट ह कभु नी तोपाय। ओकर बोर्री ह खीक अकन दिखे। पापा कभू–कभू पान खाय। कई घँ अईसे होय कि ओला पान बनाय बर क दारे, ओकर बाद ओकर बोर्री ल देखे। मन नी रहे तभू ले पान ल खाय बर लागे। ओकरा बईठे के बाद, उठ के थोरकुन आघू अंगत गीस, ओकरा केला के ठेला रहीस। पापा ह दू ठन केला बिसाईस। खात रहीस, ती समे म पापा के एक झन क्लासमेट लड़की ह पार होईस। ओ ह पापा ल देख के मुस्कुराईस। पापा ह ओई खानी केला ल खात रहीस, पापा न हाँस सकीस, न खा सकीस। ओकर पार होय के बाद पापा ह केला ल लिलीस। ओ दिन, रथिया बनेच समे बाद पापा के नींद परीस। पापा ह हमन ल ए नी बताईस के काबा नींद नी परीस; पूरा पेट नी भरे रहीस त या केला ठेला म क्लासमेट ह मुस्कुराईस त।

दिवाली के बाद पापा, बड़े पापा अऊ नावापारा के मिरी तीनों झन छुहीपाली म छबिलाल के घर म किराया म रहीन। कुछु दिन के गेय ल कोटमी म गहिरा मेला होईस। पापा ल एके झी छोड़ के ओमन मेला देखे चल दीन। ओमन तीन–चार दिन बाद आईन। पापा करा एको रूपिया नी रहे। बस वाला ह दू–तीन किलोमीटर बर विद्यार्थी मन करा पईसा नी लेय, ओकरे सेंथी बिन पईसा के चल गीस, लेकिन पापा के मन ह भारी हदर गे। अपन संग जे बितीस तेला अऊ पईसा नी रहीस हाथ म, तेला पापा ह अपन के डायरी म घलो लिखीस, ओ तीन–चार दिन ह पापा बर रोय के दिन रहीसे। बनेच दिन के गेय

ल, एक घँ बड़े पापा घर आईस। ओ ह अपन के बड़कादाई ल कहीस कि तोर छोटे नाती (अरथात् मोर पापा) ह एक ठन मस्त नावा घड़ी पाय हे। कोंकी बई (पापा के बड़कादाई) ह खुस होके कहीस– 'सही म बेटा।' वास्तव म पापा के बड़कादाई ह गोठ ल सुन के खुस होगे, घर के सब आदमी मन के आँखि ह चमक गे, जईसे कुछु पाय ल चमक जाथे। होय ए रहीसे कि स्कूल ल फिरे के बाद पापा बाल्टी लेके ठनगन रोड के बोरिंग म पानी लेहे बर गे रहीस। घड़ी ल निकाल के बोरिंग के ऊपर म रख दीस, गोड़–हाथ धोईस, पानी भरीस अऊ रूम आ गीस। हाथ ह हल्का लागीस त देखीस, घड़ी नी रहीस। कुदत बोरिंग गीस त घड़ी ह नी रहीस, कोनो धर लेय रहे, झुंझवात आईस।

एक दिन रथिया लगभग गियारा बजे के बात ए। जगा छुहीपाली के रूम ए। संग के मन कोई नी रहीन, पापा ह एके झन रहत रहीसे। पापा ह रथिया पोट खाँसत रहे। एको मिनट घलो नी थिरकत रहीस। पापा ह खाँसत–खाँसत अल्लर हो जाय। खाँसे के अवाज ल घर के मन सुनीन। छबि लाल के बड़कादाई ह नी सहे सकीस। डोकरी ह उठीस, सरसों तेल गरम करीस, पापा के छाती म लगाईस। थोरकुस के गेय ल पापा ह बने सुतीस।

दू–तीन दिन के गेय ल, पापा ल एक दिन घर आना रहीसे। ठंडा के दिन। सुबे पउने पाँच बजे डभरा के थाना चउक ले बस पण्डरीपानी चले। पापा ह घड़ी ल गँवा दार रहे। रात के कुकराबस्ता उठीस। झोला ल धरीस। चलत–चलत डभरा आ गे। डाहर म पुलिया करा जादा अंधियार परे, ओकरा चार–पाँच ठन कुकुर मन पापा ल भूँकीन, पापा ह धुर्रे–धुर्रे कहत पार होगे, मन म कुछु आने बुदबुदात रहीस। बस करा पहुँच गे। खलासी ह सुते रहे। पापा ह नरियाईस, ओ ह नी सुनीस। पापा ह आघू अंगत चल दीस, ओकरा अंजोर रहे। रोड तीर ल देखीस त गायतरी मंदिर रहीस। गाना–बजाना चलत रहीस ऊँहा। पापा अंदर पेल गे। सीधा म घड़ी टंगाय रहीस, पउने बारा बजत रहे। पापा ह ऊँहा के हाल म बईठ गे। एक घरी के गेय ल ऊँहा जे मइनसे रहीन, तेमन पूछीन– ''गाय–बजाय जानथस ?'' पापा कहीस– ''गाय नी जानों, बजाय जानथों।'' फिर पापा रघुमति राघव राजा राम के धुन ल हरमोनिया म बजाईस, एक झन ह तबला बजाईस। बबा ह पापा ल हरमोनिया बजाय बर थोरकुन सिखोय रहीस। घर म हरमोनिया, तबला, मंजीरा, रामायण सब रहीसे। अभी भी हे। कुछु समे तक बजाय के बाद ओमन मंदिर म सुत गीन, पापा घलो सुत गे। पापा

बीच–बीच म कई घँ जाग–जाग के घड़ी ल देखत रहे। बिहना घर आ गीस। पापा के बड़कादाई ह कहीस– ''घड़ी ल गँवा के आय हस, हत् रे भड़वा।'' पापा कुछु नी कहीस।

पापा पढ़हे बर फेने डभरा आगे। एदारी एकेझन डभरा म रहे लागीस। जड़कल्ला के महीना रहे। एक दिन पापा ह अपन क्लासमेट के घर सुखापाली गीस। क्लासमेट ह पापा ल रथिया बारा–एक बजे चल घुमे जाबो कके टिकरा अंगत लेगीस। जात–जात एमन नजदीक के गाँव म पहुँचीन। ऊँहा एक ठी सुन्ना कुरिया म पेलीन। ऊँहा बनेच अकन बोरा रहीस। एक ठी बोरा ल पापा के पीठ म ओ ह लाद दीस, अपन खुद एक ठी बोरा ल लाद लीस अऊ घर ले आनीन। डाहर म पापा ल सुरताय बर लाग गे, बोरा ह बिछलत रहीस अऊ खांध ह पीरात घलों रहीस। पापा ह कभू अईसने काम नी करे रहे, ओतकी वजन खांध म उठा के नी चले रहे। बोरा ह मोटा कागज के रहीस, भीतर म पीसान जईसे कुछु चीज रहीस। पापा के खांध ह पीरात रहे अऊ डर घलो लागत रहे, कोनो भेंट दारथीन त पीटान घलो खाथीन एमन। पापा के क्लासमेट ह चोराय गे रहीस, संग म पापा ल घलो ले गीस। ओ रथिया ह एदे–ओदे करके पहा गे। पापा करा साइकिल रहीसे। बिहान दिन पापा ह डभरा जाथों कके बबा के सारा घर पहुना चल दीस, ओईच गाँव म। पापा के ममा ह नी रहीस, स्कूल पढ़हाय गे रहीसे। पापा के ममादाई अऊ ममाददा मन रहीन। रथिया खा के पापा ह खटिया म सुतीस। ओढ़हे बर एक ठी कमरा (कम्बल) दीन। ओ कमरा ह भारी गड़े, ओ दिन रात भर पापा ल जाड़ लागीस, नींद नी परीस। लटपट रथिया ह पहाईस। बिहान दिन पापा ह सिरतो म डभरा आगे।

बड़े पापा अऊ भोजराम मिरी दुनों झन डभरा कालेज म फस्टीयर पढ़हत रहीन। जनवरी म ऊँहा एनुअल फंक्सन होईस। ओ समे रथिया होय। डांस देखे बर पापा घलो ओमन के संग म गीस। पापा ह ओमन के पीछूच–पीछू रहे, गँवाहा झन कके, पहिली बार गे रहे। एक झन स्टुडेंट ह मंच म जादू दिखाईस, ओ ह खरकेना के रहोईया ए। ओ ह जादू दिखात रहीस, ती समे म एक झन प्रोफेसर ह ओकर जादू म अपन जादू कर दीस, सर ह ओकर ल बड़खा टोनहा रहे। ओ विद्यार्थी ह अपन जादू ले जेला गायब करे रहे, तेहा सर के जादू के वस म होके वापिस नी आत रहे, विद्यार्थी ल मरन होगे। मंच म ही ओ ह सर के गोड़ा–पँइया करीस, तब जाके सर ह अपन जादू ल हटाईस। पापा ह ए सब ल देख के डरा गे। बड़े पापा मन ल कहीस कि चल अब घर जाबो।

छुहीपाली म तीनों झन रहें। बड़े पापा अऊ मिरी कालेज वाला रहें। जल्दी जाय बर नी लागे। जाएच बर नी लागे। पापा के स्कूल ह साढ़हे दस बजे लगे। पहिली पीरियड प्रिंसीपल खूंटे सर के रहे। ओ ह हिन्दी पढ़हाय। पापा ह जल्दी–जल्दी खाना बनाय। एको दिन भात अऊ चटनीच बना दारे। एक दिन अंधना म दू ठन आलू ल डाल दीस चटनी बनाय बर। भात पसाय के पहिली आलू ल निकाल लीस। भात पसाय के काम होगे। सील करा ले जाके मिरचा, नून, लेसून ल पीस के आलू ल सील ऊपर राख के पापा ह पीस दीस, ओकर बाद पिसाय आलू चटनी ल कटोरी म निकाले त निकलबे नी करे, सील म चिपक गे रहे, चींथे ल नी चींथाय। लटपट चींथ–चींथ के निकालीस।

पापा ह बस म डभरा जाय। बस स्टेण्ड म उतर के पइदल स्कूल के क्लासरूम तक के जात ल प्रिंसिपल सर ह हाजिरी लेत रहे। रोज जंगाय, कहे– ''खाना बना या स्कूल आ।'' अंग्रेजी के पीरियड म सर्मा सर ह एक दिन पेसिभ भ्वाएस के एक ठन प्रस्न दीस। ''व्हू ब्रोक दिस जग ?'' के पेसिभ भ्वाएस बनाय बर कहीस। पाँच–छे झन मन हाथ खड़ा करीन। पापा घलो हाथ खड़ा करीस। सर के भांची झुर्री चूंदी के घलो पढ़हे, ओ ह हाथ नी खड़ा करीस। पापा ह पाछू अंगत बईठे। गणित के कई झन होसियार विद्यार्थी मन ल सर ह पहिली पूछीस। नी जानीन। पापा ल पूछीस। पापा ह कहीस– ''बाई व्हूम वाज दिस जग ब्रोकन ?'' सर ह भेरी गूड कके आघू अंगत बुलाईस अऊ ब्लेकबोर्ड म एक्सप्लेन करे बर कहीस। ओ दिन ठी ले पापा ल सब झन जाने बर लगीन, बईठे के जगा ह तो पाछूच अंगत रहीस, लेकिन कई झन मन देख–देख के मुस्कुराय लागीन।

बारमी के रिजल्ट निकले के बाद सबले पहिली अंकसूची प्रिंसीपल खूँटे सर ह ईमन ल दीस। पापा ल अऊ गाँव के ही दीनबंधु ल, आजकल दीनबंधु ह गणित के लेक्चरर हे, प्रिंसीपल सर ह बधाई दीस। पापा ह रेगुलर म टॉप करीस, दीनबंधु ह प्राभेट म टॉप करीस। दुनों झन गणित के विद्यार्थी रहीन। ओईच दिन कुछ समे के गेय ल डभरच म पापा के संग मन करा पापा के भेंट परगे त ओमन ठीक से बात नी करीन।

1992 के बात ए। पापा ह केजी कालेज रायगढ़ म बी एससी करत रहीस। कयाघाट म किराया के रूम म रहत रहीस। रूम नीही, आंट रहीस। घर मालिक ह अपन के आँट ल छेंक के कमरा बना दे रहीस, उई ल पापा ह किराया म लेय रहीस। ओ घर ह एक झन नता–रिस्ता के रहीस। बबा के ममा के बेटी के

ससुराल रहीस ओ घर ह। एक दिन रथिया पापा ह साग बनात रहीस। आलू–कलेरा ल मस्त तरे के बाद, हरदी–मसाला डारे के बाद, कराही म नून ल डारीस। डारे के बाद चटवा म खोईस। थोरकुस के गेय ल साग ह गाजा–गाजा होगे। ओई समय आघू घर के एक झन लड़का ह पापा करा बईठे रहे। ओ ह देख के कहीस– ''किसे गा तोर साग म गाजा फूटत हे। देख तो बने, का ल डार दारे हस ?'' पापा ह भिंया ल देखीस त ओ करा दू ठन पना रहे, दुनों ह सादा रंग के रहे। एक ठी म सर्फ रहे, एक ठी म नून ह रहे। नून के भोरहा म कपड़ा धोय के सर्फ ल साग म डार देय रहीसे। साग ह तरवा मस्त बनत रहीसे, लेकिन सब ल फेंके बर लाग गीस, अखर गे।

कुछु दिन के गेय ल, स्टो ह खराब होगे। ओखानी गेस भरे वाला स्टो आए। नी जले त पिन म कई घँ कोंचके बर लागे। हर कोई ओला नी जला सके। पहिली सीखे बर लागे। स्टो ह खराब होगे त खाना कहाँ ले बने ? स्टो ल बनाय बर पापा ह सहर में दे दीस। संझा होगे, लेकिन नी बन पाईस। पईसा बचा के चले बर हे, पढ़हाई म बड़ खर्चा होत रहे, पापा ह ओ दिन आधा कुटी पियाज ल खाके दिन पवहाईस। स्टो ह दूसर दिन रथिया मिलीस, ए दिन गोगा मिल के प्रसाद ल खाके पेट ल भरीस। साल भर के पढ़हाई ल पूरा करे के बाद पापा ह हिसाब करीस, त कुल खर्चा तीन हजार तीन सव पंचानबे रूपिया होय रहीस।

पापा के लाड़ली, हेमा

❑❑❑

पापा बताईस, मम्मी बताईस, दऊ घलो बताईस, पापा के आँखि ह कमजोर होगे हे कके। तभू ले पापा ह कार चलाई ल नी छोड़ीस। पापा कथे – ''कार चलाय ल छोड़ दहाँ त फेर कभू चलाय के हिम्मत नी होय, तेकर ले जतना दिन सकहू, चलाहूँ।'' मम्मी ह पापा संग कार में बईठे बर डराथे अब। पहिली दऊ संग बईठे बर डराय। अब कार ल दऊ चलाथे, त बईठथे। लेकिन में नी डराँव, पापा ऊपर भरोसा हे। मोला लागथे, पापा ह पहिलीच जईसे कार ल चलात हे। बबा घलो नी डराय।

ए उपन्यास ल पूरा पढ़हें में। मोला अईसे लागीस कि उपन्यास म पापा ह कोनो–कोनो चरितर म घुसे हे। कभू आर्के सर बन गे, त कभू बलदेव सर।

लेकिन वास्तव म, पापा ह ओ दुनों नोहे। आँखि ह पूरा नी दिखे, एकर बावजूद, पापा ह अभी उपन्यास लिखत हे, एकर ले पहिली ईसनेच स्थिति में एक ठी काव्य संग्रह लिखे हे, गजब!

पापा के लाड़ली, देवला

❑❑❑

पापा ह बीच–बीच म हमन ल अपन के लाईफ के बारे म बतात रथे। इक्कीस तारीख ह पापा के लक्की डेट ए। बनेच दिन तक गुड लक्की रहीस। पाछू बेड लक्की घलो होगे। पापा ह केजी कालेज रायगड़ म बी एससी फस्टीयर गणित म एडमिसन 21 तारीख के दिन लीस। 21 नवम्बर 1992 के दिन प्रजापिता ब्रम्हकुमारी ईस्वरीय विस्वविद्यालय रायगड़ म अध्यात्मिक गियान लेय के सुरू करे रहीस। 21 जुलाई 1993 के दिन पापा ह स्कूल सिक्छक के रूप म मिडिल स्कूल अण्डोला म जायनिंग करीस। 21 अगस्त के दिन ही दीदी ह जनमीस। नवम्बर 2012 म कालेज खरसिया म सहायक प्राध्यापक के रूप म पापा के जायनिंग होईस, ओ दिन घला 21 तारीख रहीस। पापा ह पी–एच0डी0 करत रहीस, ते समे अपन के गाईड संग ओकर घर नन्हेसर गीस, जात–जात सर के कहे म डॉ0 सुरेस आचार्य करा भेंट होय बर विस्वविद्यालय सागर दुनों झन गीन। सर ह कहीस– ''पहिली ल फोन नी कर पाएन, पता नी, भेंट हो पाही या नीही।'' पापा ह कहीस– ''सर, आज 21 तारीख ए, सर मन करा पक्का भेंट होही।'' वास्तव म डॉ0 सुरेस आचार्य सर ह अपन के घर म ही रहीस, ओमन करा भेंट होगे। 2019 ले 21 तारीख ह पापा बर बेड लक साबित होथे। का–का होईसे, नी जानत हों, लेकिन पापा ह तब ले जरूर दुबलाथे। बेड लक सुरू होय के बाद ही पापा ह कार खरीदीस, नावा घर बनाईस, एम. ए. हिन्दी बर पाँच ठन किताब संपादित कर दीस, एक ठन सेमिनार के किताब संपादित करीस, एक ठन काव्य–संग्रह लिखीस, कुछ जमीन खरीदीस, दू झन दीदी मन के बिहा करीस। का ए ह बेड लक ए ? पापा ह दुख म खुस होय के सुरू कर देहे। पापा ह दुख म हँसे के, मुस्कुराय के, खलखलाके हाँसे के कला सीख गेहे। बबा ह अऊ मम्मी ह पापा के दुख ल समझथें अऊ साथ देथें।

पापा के होसियार बेटी, डिम्पल

❑❑❑

पापा जे सोचथे, तेला लिखथे। जे लिखथे, तेला पूरा करे के कोसिस करथे। अभी 2025 म पापा के एक ठन किताब दिल्ली ले छपीस। ओ ह हिन्दी म हे। ओ ह काव्य संग्रह ए, जेकर नाँव ''मैं मर गया'' हे। ओकर पेज नंबर 34 म पापा ह ए लिखे हे —

नव व्याहता को

मुँह दिखाई में

न राशि — उपहार, न कीमती सामान दूँगा,

अपने कर्त्तव्य को जाने, ऐसा सम्मान दूँगा।

प्रताड़ित न हो ससुराल में, ऐसा ज्ञान दूँगा,

जाने अधिकार को, भारतीय संविधान दूँगा।

क्योंकि

अभी मैं जिंदा हूँ।

पुस्तक छपे के बाद, पहिली मउका जईसे ही आईस, पापा ह अपन जान—पहिचान के बिहा म 'भारत का संविधान' देय के सुरू कर दिस। तारीख 15/04/2026 के दिन एम ए हिन्दी चतुर्थ सेमेस्टर के विद्यार्थी उमा साहू के मायन रहीस। पापा ह ओला ओकर घर जाके 'भारत का संविधान' दीस अऊ पढ़हे बर घलो कहीस। 19/4/2026 के दिन पापा ह तीन ठन बिहा अटेन करीस। लछमनभांठा म साढ़हे दस बजे कुलदीप अऊ ओकर सुवारी ल ये किताब दीस, एक दिन पहिली एमन के बिहा होय रहीसे। दू बजे छपोरा करा के अचरित पाली म सोनिया ल दीस, ओकर तेलवाही होत रहीसे। रथिया कटंगपाली म मधुकांत अऊ मुस्कान के रिसेप्सन होत रहीसे, ऊँहा एमन ल स्टेज म जाके ए किताब ल पापा ह दीस अऊ एकर बारे म कुछु गोठ भी ओमन करा करीस।

पापा के परी, दोलिका

❑❑❑

ईच दारी के घटना ए। कोनो तिहार रहीसे। तिहार के बाद, एक दिन बिहना पापा ह उठीस, त ओकर जउनी आँखि ले एकरच धुँधला दिखे लागीस।

दु दिन तक उसनेच रहीस। फिर आई हास्पिटल रायगढ़ गीस, ओ ह बड़े–बड़े सुई ल बोतल म डाल के लगवाबे कहीस। आँखि ह बने नी होईस। कुछु दिन बाद दई संग म पापा ह ईलाज बर चेन्नई गीस। संग म दई के मोसी–मोसा मन घलो गीन, डोकरा ल अपन के एक ठी आँखि म लेंस लगवाय बर रहीसे। ऊँहा डाक्टर ह कहीस– ''आँखि के नस ह सुखा गेहे। एहा एक प्रकार के अटेक ए, जईसे हार्ट अटेक होथे, ब्रेन म अटेक होथे, उसने सुगर के कारण आँखि के नस म अटेक होय हे। ए ह ठीक नी होय, बस सुगर ल कंटरोल करे बर लागही।'' चेन्नई म सात–आठ दिन घूमिन, ओकर बाद जईसे जहाज म गेय रहीन, उसने फिर गीन। चार महीना के गेय ल फेने प्राब्लम होगे। एदारी डेरी आँखि ह कमजोर होगे। बिलासपुर म पापा ह पहिली दिखाईस। मन नी माड़हीस, त फेने चेन्नई गीस। एदारी संग म में गेंय। उसनेच प्राब्लम। जउनी आँखि म पचास परसेंट विजन हे, त डेरी आँखि म तीस परसेंट विजन बाँचे हे। एति–ओति, सागर खड़ कोति घुमेन, खायेन, घर आ गेयेन। एक महीना के गेय ल पापा एके झन चेन्नई चल दीस। पापा के हिम्मत ल सलाम करत हों। एदारी पापा ह रामेस्वरम घलो घुम के आगे। विस्वास नी होय!

बेटा, सानिध्य

❑❑❑

भकली-जकली

‘‘देख न बहिनी! में जुच्छा हाँवा, त ल मोला ओ ह दुईच ठी बरा दीस, चार ठन नी देईस।’’ दूरिहा ले ओकर अंगत नीहार के कहिस, ‘‘बरा नितो।’’

कुछु नी होय भकली, तोर साड़ी–चूरी ला देख के ओला भोरहा होगिस होही। भेकलीन कहे लागीस– ‘‘जेकलीन के पापा संग महू मर जावाँ का ओ। मे मरथे त का ओ ह सादा साफी पहिरथीस ? का ओ ह घड़ी पहनई ल छोड़ देथीस? अऊ तो अऊ ओ ह मोर बर बरा घलो नी मांगथीस। मई हर ओं त दसकरम म ओकरो बर बरा मांगत हों, अऊ दइझी के हा, ऊहू ह मिलत नीए। दूरिहा ले ओकर अंगत फेने नीहार के कहीस, ‘‘बरा नितो।’’

बलदू समझ तो गीस कि ओ मईलोग हर ओइच ल गारी देथे। दु घँ ल ओकर अंगत देखीस अऊ दुनों घँ अपन हाथ के अंगठी ल पटापटा के फोरीस। भगवान जाने, दूसरईया बार ओकर अंगठी ह कइसे फूट गे। बाबू पिला मन के ह तो एकेच घँ फूट थे। अऊ झिन फोर दीही, गुन के बलदू ह ओ करा ले थोर–थोर खिसके लागीस। मन म गुनत घलो रहीस कि ओ मईलोग ह हरियर साड़ी पहिरे हे, मूड़ घलो गँथाय हे, तरवा म बड़खा अकन टिकली घलो लगाय हे, हाथ म भर–भर चूरी हे, गोड़ म पँयरी–बीछवा घलो बाजत हे। कोन ह जानही कि ओ ह जूच्छा होगिसे। भोरहा म पर गेंय। ओ ह दू ठन अगराहा बरा घलों मांगिस, फेर में ह नी देंय। अईसने कई झन मन मांगत रथे– ‘‘अऊ देना गा, अऊ देना गा कके।’’ फेर सबो ल अईसने देत जाय रथें त मोर चुरकी के सबो बरा ह पोरसे के पहिलीच सीरा जाय रथिस। मईनसे मन फूल ल काबर नी कहें कि एकरच अऊ दे, सरधांजलि दहाँ कहिके ? गुनत–गुनत, चुरकी ल दादू घर अंगत पका के बलदू ह चलत–चलत एक ठन पथरा म जाके बइठ गे।

थोरकुन बइठे के बाद बलदू ह घर कोति गीस। डाहर म ओई मईलोग ह मिलगे। बलदू ल आघू बढ़हत नी बनीस, ओला पूछेच बर लागीस – ‘‘कस ओ, तें मोला काबर गारी देत रहे ?’’

''में तोला काबर गारी दहाँ गा ?'' ओ ह सफा–सफा नट दीस।

''त मोरंग ल बटेर के अपन अंगठी ला दूदी घँ काबर फोरे तें ?''

''में तोला गारी नी देहों गा। तें तो जे सीखे हस, ओहि ल करे। सादा साड़ी, जुच्छा मांग, जुच्छा हाथ अऊ जुच्छा गोड़ के मई लोगन ल ही ए समाज ह राँड़ी कथे। लेकिन तें मोला सुघ्घर साड़ी, टिकली, पँयरी अऊ चूरी म देख के ये समझे कि मोर आदमी जीयत हे। अऊ तें मोला मोर आदमी के दू ठन अऊ बरा नी देय। बस ओतकिच्चे न!''

बलदू ह चस्मा हेर के डेरी आँखि के थोरकुन आँसू ल पोंछीस। पोंछे के पाछू थोरकुस तरी मुड़ करके ठाड़हे रहीस, तहाँ ले गुनत–गुनत ओमेर ल चल दीस। ''में गारी खा के घलो गारी नी खाएँ, अइसने कइसे हो सकत हे ?'' बलदू ह लहुट के पीछू अंगत ल एक घँ देखीस। ओ मईलोग ह ओकरेच अंगत ल देखत रहीस। ओकर हाव–भाव ल देख के लागीस कि ओ ह गारी देके पछताथ रहीस। बलदू ह आघू अंगत बड़गे। खँचवा–डिप्पा ह बने दिखत नी रहे। हपटत–गिरत घर के डाहर धरीस। करिया चस्मा म अऊ अँधियार दिखत रहे। बरा ल बाँटे बर ओई ल दे दे रहीन। का करथीस ? बाँटे बर लागीस, गारी खा–खाके। ओला गारी ह नी खुपे अब। ओकर डेरी आँखि ले आँसू ह अपने आप गिरत रहीस, ओ खुद नी गिरात रहीस। बलदू ह गुनत–गुनत खुद करा गोठियात हे– ''आँसू ह बिन रोए अपने–आप काबर गिरत हे, मोला समझ नी आथे। सायद में अपन घर के तीर म पहुँच गेंय, सायद मोला बचपन के खेला–लीला सुरता आगे। मोर करेजा के कोंटा म कोई तो हावे, जे ह आज मोला जादा पिरा देथे। लेकिन मोर काम होगे हे। जिनगी म मोला अऊ कुछु नी चाही। तभो ले आज में ओला भेंट दार रथें त बन जाथीस, जाती–मिलाती थोरकुस देख दार रथें।''

❑❑❑

सुन्दरलाल ह पीट अंगत एक ठन बेग ल ओरमाय हे। डेरी हाथ म सेव के पन्नी ल धरे हे, जउनी म सइघो एक ठन सेव ल खात रोड म चलत हे। खात रहीस ते सेव ल जतकी खाईस, ओतकी खाईस, बाचीस तेला जउनी हाथ म धर लिस, अब ओला खात नीए। ये सब ला दू झन टूरी मन देखत रहें। ओई खानी आघू अंगत ले एक प्रोफेसर साहब ढीला–ढाला कुरता पईजामा पहीरे केरा खात

आत रहीस। केरा ला खाके छाली ला ओ गुरूजी ह सड़क म फेंक के रेंग दीस। सुन्दरलाल ह ओ केरा के छाली ल चक ले धर लीस अऊ अब सेव के बाचे–खोंचे अऊ केरा के छाली ल दोनों ल धरे हे। ए सब ल ओ दुनों टूरी मन देख के अकचकाय हें।

भेकलीन – कस ओ बहिनी, तोला कइसे लागथे, ओ टूरा ह अइसने बिन – बिन के खात होही का ?

रजनी – होही बहिनी। लेकिन ओ ह तो एकरच बने घर के दिखथे।

भेकलीन – परन दिन अऊ देखे रहें ओला में। ओ दिन संतरा के छाली ल बिन के धरीस। फेर मोर क्लास रहीस त चल देहें। नी देख पाएँ, का करीस ओकर।

रजनी – एक काम करी। आज चुपचाप कोई करा रूक के लुका के ओला देखबो कि का करथे ओ ह आज।

भेकलीन – चल त ठीक हे।

दुनों झन लुका के देखे लागीन। सुन्दर ह जउनी अंगत मुड़ के छत्तीसगढ़ही विभाग म घुस गे। ये दुनों टूरी मन कुछु देख नी पाईन। मन के इच्छा ह दुच्छा होगे। लेकिन अहू मन, मन म ठान ले रहीन कि आज देखनच हे। कुदत पीछू–पीछू चलीद्दीन। जाके एमन देखथें कि ओ टूरा ह कूड़ादान म सेव अऊ केला के छाली ल फेंकत रहे। फेंके के बाद सुन्दर के नजर ह ओ टूरीमन अंगत पड़ीस। सोंचीस – एमन ईंहा का करत हें। टूरी मन ओला अपन अंगत ल देख के लजा गीन। भेकलीन ह ऊपर कति देखीस अऊ एक घँ फेने नजर मिलिस, तहाँ ले हाँस के भाग गीस। ओकर संग के रजनी ह घलो ओकर पाछू–पाछू चल दीस। भेकलीन ल अब गुदगुदी होत रहीसे।

एक ठन होटल ले सुन्दर ह निकलीस। एहा एक ठन पन्नी म कुछु रखे हे। डेरी अंगत भेकलीन अऊ रजनी मन ल आत देख दारीस। फिर.... एहा आक देखिस न पाक, सीद्धा एक झन खोरवा मंगोइया करा चल दीस अऊ अपन के पन्नी ले भात साग ल निकाल के ओकर पेलेट में डाल दीस। मंगोइया ह आसीस देय बर अपन के हाथ ल ऊपर उठाथीस, ओकर पहिलीच सुन्दर ह चल दीस।

चारेच मिनट म भेकलीन मन देखथें कि सुन्दर ह एक झी अंधवा ल सड़क पार करात हे।

सुन्दर ह भेकलीन मन से नजर बचाके चुपेचाप होटल भीतरी पेल के कांछा के पीछू म लुका के देखे लागीस।

भेकलीन – रजनी, कहाँ गीस ओ ह ?

रजनी – कोन जनी भकली, कति गीस त।

दुनों झन आक–पाक देखे लागीन, उई बेरा म सुंदर ह एक पन्नी म कछु धर के निकलीस।

सुंदर ह कथे – तुमन तो सिवसंकर यूनिवर्सिटी के इतिहास विभाग केय न ? में ह छत्तीसगढ़ही विभाग के छातरा ओं। आज कईसन इति। आवा नास्ता कर ल। में तो ओ भीख मंगोइया बर भात–साग ले देत रहें।

भेकलीन ह मुस्कुरा के कथे – आन दिन करबो, आज हमन अन्ते जाथन।

भेकलीन अऊ रजनी चल दिन। थोरकुन के गेय ले, सुंदर ह होटल के भीतरी अंगत जाथे। ऊँहा एहर देखथे कि भीतरी म भेकलीन ह एके झन बइठे हे। आघू के कुरसी ह खाली रहीस। सुंदर जाके बइठ गे। दुनों झन एक–दूसर ल देख के मुस्कुराइन। सुंदर ह वेटर ल ईसारा करके अपन कति बुलाईस अऊ कहीस– ''आधा–आधा पनपुरवा रोटी दु जगा ले आन। एकर संग पताल के चटनी घलो लानबे।''

दुनों झन रोटी खात–खात गोठियात हें।

''मोर नाम भेकलीन ए। में मिसन पारा में रथों। मोर ददा हर चर्च म फादर ए। एम ए इतिहास करत हों सिवसंकर म। लास्ट सेम म हावाँ। अऊ तें ?''

रोटी म उरीद मिले हे। मस्त नरम हे।

''में सुंदर ओं। मोर ददा के बिजनेस हे। लेकिन मोला ओकर पइसा के एको रच घमंड नीए।''

''तें रोज अइसने भीख मंगोइया मन ला खाना खवाथस ?''

भइया, थोरकुन अऊ चटनी दे ना।

''रोज नीही। लेकिन जब भी मउका मिलथे, खवाय के, मदद करे के

कोसिस करथों।'' सुंदर के धियान ह रोटी म नीए, भेकलीन अंगत जादा हे। सुंदर के चटनी ह सिरा गे। भेकलीन ह अपन चटनी ल ओकर कटोरी म डार दीस। अब दुनों झन ओईच कटोरी के चटनी ल खात हें।

''मोला तें अऊ ए तोर आदत–बेवहार, सोच अच्छा लागीस। मोर संग दोस्ती करबे ?''

(मन म, नेकी अऊ पूछ–पूछ) ''ठीक हे, तोर मन हे त बन जाही। फेर में ह उसने लड़का नोहों।'' (पटवा के डोरी फेंका गे।)

सुंदर – (मन म, अब खटिया तो बन के रही।) ''कालि साम के गारडन म मिलबो।''

''हव'', दुनों झन एक–दूसर के हाथ ल धरे–धरे होटल ले बहिर कोती निकले लागीन। अचानक सुंदर ह कुछु काँव–काँव सुन के होटल मालिक करा आगे। भेकलीन ह रूक गे अऊ पाछू अंगत ले देखे लागीस।

''का होईस बलदेव जी ?''

''सुंदर भाई, मोला बनेच भूख लागत हे। कालि के खाय नियों। अऊ मोर करा पईसा भी नीए। होटल मालिक ल बोलें कि मोला खाना दे दे, बदला म में एक दिन तोर होटल म काम कर दहाँ कहें। लेकिन एहर विसवास नी करत हे अऊ कहत हे– पहिली काम करे बर लागही। तँईच बता न भाई, पेट म एक दाना नइए त कइसे काम करे सकिहों ? एकरे हल्ला–गुल्ला होत रहीसे।''

''हूँ, तोला काम करे बर नी लागे। ए ले दु सव रूपिया, रख ले।''

पइसा देत भेकलीन ह देखीस। मने–मन म बड़ खुसी होईस।

भेकलीन – ''सुंदर, आ न। चली।''

थोरकुन चले के बाद, भेकलीन – ''बाय।''

सुंदर – ''बाय, झिन जा न!''

''जाय बर तो लाग ही, तभे तो कालि मिलबो।''

''ले त ठीक हे। अपन खियाल रखबे।''

भेकलीन – ''हव, तहुँ।''

भेकलीन के मन ल सुंदर ह भा गे। ओकर करेजा म समा गे। एहर ओकर मयारू बन गे। कोई मईनसे के बने काम ल देख के कोई भी पिघल सकत हे। कोई ल दिल म बसाय बर अऊ का चाही ? आज भेकलीन के मन ह भारी उदकत हे, बल्ले–बल्ले कहत हे। ओला जे चाही, वो आज मिल गे। भेकलीन – (अपन आप ल) काल मोर मन के बात ल सुंदर ल बता दहाँ, क दहाँ कि में तोर होगे हों, मोला तोर से मया होगे हे, तोर बिना में जिए नी सकाँ, ...। आज भेकलीन के गोड़ ह भियाँ म परत नीए, खुसी के मारे हवा म उड़यात हे; जइसन मोंगरा फूल के खुसबू ह हवा म कहरत–उड़ियात जात रथे। भेकलीन ह अपन के घर ल पहुँच गे। लेकिन रद्दा म का–का होईस, नी जानत हे। रद्दा म एक जगा चक्का जाम होय रहीस, जे करा एला एक घण्टा रुके बर लागे रहीस, ऊहू ल नी जानत हे। पाँच बार फोन आईस, अहू ल सोर नी पात हे। एकर मन म एकेच धून चलत रहीस –

बाजही डीजे बाजा, हमर मड़वा जल्दी छा जा।
रहे नी सकों तोर बिन, मोर तिर जल्दी आ जा।
जब ले देखे हों तोला, कुछु भाय नीही मोला।
बही हो गेय हों मे ह, घूमत रथों बारी कोला।।
तें छोड़ के कभू ना जा, मोर मन म समा जा।
रहे नी सकों तोर बिन, मोर तिर जल्दी आ जा।।
नींद लागे नई बईहा, तोर बिन कहाँ रइहाँ;
पड़हे के मन नी लागे, कालेज काबर जइहाँ
तोर संग मया बड़ लागे, मोर धड़कन, मोर राजा।
रहे नी सकों तोर बिन, मोर तिर जल्दी आ जा।।

भेकलीन ह अपन खोली म जाके मोबाईल ल देखीस, त रजनी के पाँच ठन कॉल आय रहीस। फेर का हे, जल्दी–जल्दी भेकलीन ह अस्पताल पहुँच गे। रजनी के भउजी के पेट के आपरेसन होत रहे भीतरी म। रजनी ह बताय लागीस – का करबे बहिनी! परन दिन भउजी ह तीजा उपास रहीसे अऊ कालि गनेस के उपास। पूजा–पाठ हो गीस त फरहार के बेरा म रथिया बरा रोटी ल खाईसे हबर–हबर। तीनेच ठन खा पाय रहीसे, फेर अभोल हो गे। अस्पताल लाय हन।

लान नी पाय हन कि डाकडर मन आईसू म लेगीन अऊ पेट ल चीड़—फाड़ करे के सुरू कर दीन।

रजनी के भउजी के दाई ह रोवत—रोवत कथे — इसनेच बाते भकली नोनी। का करबे, हमर बेटी आज सनझा बने रहीसे अऊ अभी अस्पताल म परे हे। कोन ल का कबे। ओकर किसमत के दोस ए सब। हे भगवान।

भेकलीन — डाकडर ह का कहीस ?

रजनी — दू दिन के खाली पेट रहीस त भात जाय के नाली अऊ अंतरी ह सूखा गेय रहीस। फेर सूखा बरा रोटी ह पेट म गीस त अंतरी ह फाट गे। अभीच्चे आपरेसन करे बर लागही बोलिन डाकडर मन।

❑❑❑

आगी ह बरत रहे। एकरच धूरिहा म भेकलीन अऊ रजनी तरी मूड़ी करके ठाड़हे रहें। दू—तीन झन मन आगी के तीर म रहें अऊ बीच—बीच म नून ल छींच—छींच के एक ठन लकड़ी म आगी कोति हुरसत रहें। तीन—चार जगा बाबू पिला मन चारझन—पाँचझन करके ठाड़हें हें अऊ खुसुर—फुसुर करत हें।

बड़ेदाऊ — ए दादू ल घलो समझे के काम ए, ए नोनी पिला मन ल नी बरजीस। ओकर बहिनी ह बनेच पढ़ दारीसे त का समसान घाट म आ जाही। लजाईन तको नीहीं। नोनी पिला ए, त नोनी पिला सहीं रहे। अभी तो जान दी। गूड़ी म एकर जबाब देय बर लागही दादू ल अब।

समारू — नकचड़ही हो गेहें गा, का कबे एमन ला। कुछु क देबे त बादीबात लीहीं।

आज सुंदर ह ओमन तीर म नी गीस। लेकिन बड़ेदाऊ के सब बात ल कान देके सुनत रहीस। दस झन के आघू म कछु नी कहीस। मन मार के रह गीस। भेकलीन ह बड़ेदाऊ अंगत ल देख के मने—मन म बड़बड़ाथे— हमन के चारी करत हस, बरा नीतो।

गारडन म भेकलीन अऊ सुंदर बइठे हें। थोरकुन चुपेचाप बइठे के बाद भेकलीन ह कथे — उपास के का मतलब ए ? का पेट ल भूखन मारे ला परभू मिल जाथे ? यदि अइसने बात ए, त जेमन भूखन मरथे, जइसे कि भीखमंगा... एमन बर परभू परसन हो जाथीस, फेर एमन जो मांगथीन परभू करा, ओ पूरा हो

जाथीस। फेर एक दिन कहूँ करा भूखन ले कोनो नी मरथीन, कोनो करा भीखमंगा नी दिखथीन। कोनो करा गरीबी नी रथीस। सब झन अमीर रथीन।

सुंदर – एक बात तो सोरा आना सच ए कि कुछु समय खाली पेट रहे ल भगवान मिले चाहे झन मिले लेकिन स्वास्थ ह बने जरूर रथे।

भेकलीन – तोर कहे के ए मतलब ए कि उपास परभू बर नी करें, स्वस्थ सरीर बर करथें। त तोला में ए पूछथों कि रजनी के भउजी हर काबर मरीस ? ओला आज स्वस्थ रहना रहीसे। ओकर आगी–माटी म काल तहुँ तो गे रहे। उपास के बाद ही मरीस ओहा, तहुँ जानत हस।

सुंदर – पहिली जमाना म बड़े–बड़े रिसी–मुनी मन जंगल म बिना खाए–पिए तप करें अऊ कई सव बरस तक जीएँ। अभी थोरकुन नी खात हें, तहाँ ले मर जाथें।

भेकलीन – पहले सुध हवा पानी रहीस। अभी जगा–जगा फेकटरी खुल गे। पहिली जमाना सहीं वातावरण अब नी रह गीसे। त हमन ल अभी के जमाना के हिसाब से जिए बर लागही। नी खाना पूरा–पूरा गलत बात नोहे। लेकिन पूरा–पूरा नी खाना, एहा गलत बात ए। अपन सरीर ल चलाय बर कुछु तो फल–दूध खाय–पिए बर लागही, आकसीजन ल सरीर म दौड़ाय बर कुछु तो पानी–कांजी पिए बर लागही। एक बात अऊ कहत हों – चाहे तोर तँयतीस करोड़ देवी–देवता भगवान रहे या मोर एक झन ईसा मसीह रहे या अब्दुल मन के अल्लाह खुदा रहे; ओला तोर पेट के भरे या खाली से कोई मतलब नी रहे। ओला तोर भकती अऊ सरधा से मतलब हे।

सुंदर – तोर बिचार म उपास के का अर्थ हे ?

भेकलीन – देख सुंदर, एहर न तो मोर बिचार ए, न तोर बिचार ए। एहर सब गुनवान मन के बिचार ए। उपास ल हिन्दी म उपवास कथें। उप के मतलब होथे– तीर म, वास के मतलब होथे– वास करना, रहना। तीर म रहना हर ही उपास ए। अपन आराध्य देव के तीर म रहे के बुता ल उपास कथें, न कि बिना खाए–पिए रहई ल। अपन परभू के तीर म रहई मतलब परभू के किरपा अऊ भकती पाय के कोसिस करई। ए कोसिस ल हमन हफता म सिरिफ एक दिन या दु दिन काबा करथन, रोज काबर नी करन। हफता के सातों दिन एला एकर बर नी करन काबर कि एला सब आदमी मन खाली पेट से जोड़ के रखे हें। एला

खाली पेट से झन जोड़ा, फेर देखा, उपास ल हमन सब दिन कर सकथन। पूरा खाली पेट रहई ल जब–जब हमन उपास मानबो, तब–तब एहर हफता म एक–दु दिन ही हो पाही। काबर कि हफता के सातों दिन खाली पेट रहई सम्भव नीए। ओकरे सेथी उपास के मतलब खाली पेट रहई नोहे, बल्कि परभू के तीर म रहई हर ही उपास ए। संसार के मईनसे मन भरपेट ल उपास एकर बर नी कहें, काबर कि जब पेट हर पूरा भर जाथे त आलस लागथे, आलस लागथे त नींद लागथे, फेर परभू म मन नी जाय। ओकरे सेंथी खाली पेट रहे के बात करथें। लेकिन हमन मूरख हो जाथन अऊ एला पूरा खाली मान के चलथन। जबकि एहर वास्तव म हल्का खाना होथे। हल्का अऊ सुपाच्य खाय ल सरीर भी ठीक रथे, परभू करा मन भी लगथे, आलस भी नी लागे अऊ हफता में सातों दिन उपास हो सकथे मतलब हमन अपन परभू के किरपा अऊ भकती एक–दु दिन ही काबर पई ? रोज पई, एहर हमर मन सांति के एक ठन उपाय ए। त मोर मयारू सुंदर, हमन हल्का खाके रोज उपास रखी अऊ स्वस्थ रही। तें का कहत हस ?

सुंदर – तोर बर ताली बजाय के मन करत हे।

भेकलीन तरीच–तरी मुस्कुरा दीस।

सुंदर – अच्छा, ए बता; तुमन काबर गेया काल मरघट मेर ?

भेकलीन – अभी तो सुरू होथे। अवोइया दिन म, मरघट मेर दगित देय बर आधा मईलोग मन जाहीं, त आधा बाबू पिला मन। का ओ भउजी ह बेटा ल ही पीरा पाके जनमाय हे, बेटी ल बिना पीरा के जनमाय हे ? बता न ? बेटी, बहिनी, मतारी, फुफु ल अपन के ददा–दई, भई–बहिनी, बेटा–बेटी, भतीजा–भतीजी के माटी म जाय के कोनो हक नीए का ? सिरिफ बेटा, भाई, बाप, फूफा ल ही मरघट म जाय के हक हे ? रिस्ता, रिस्ता होथे। मया, मया होथे। मया हर पूर्लिंग स्त्रीलिंग नी होय।

सुंदर ह भेकलीन अंगत ल देख के मुस्कुरा के ओकर गोठ के तारीफ करीस। एमन के गोठ–बाठ ल सुन के बनेच कन मईनसे मन तीर म आ गे रहीन, काबर कि एमन के गोठ म रस आत रहीस। एमन के चारों कोति भीड़ होगे रहीस, एला एमन पता नी पात रहीन अऊ अपन म मगन रहीन। ओई में के कई झन मन छेधा म ताली घलो बजा दीन। ताली के अवाज ल सुन के एमन भीड़ अंगत ल देखीन त ओमन के ताली ठोंकाई ह अऊ बड़ गे। एमन लजा गीन, लजा के एक–दूसर ले लिपट गीन।

काम होय बर एक दिन बाचे रहे। संझा कुन बर तरी गुंड़ी होथे। गाँव के पटेल ह कहे लागिस – सागर, दामोदर, लेखराम, डमरू,, दिनेस, मुकेस, सोनू, रतिराम अऊ सोनमेस्वर मन काल खाना बनाही अऊ परोसहीं घला। जे नी आही तेहा अपन जगा म दूसर ल भेजही। नी भेजे सकही त ओहर अभी बताय। ओहर तीन सव रूपिया दीही, ओकर जगा म हमन आने ल भात रांधे बर राखबो। आज रथिया दादू घर बरा बनाय बर बोतलदीहीन, चुरतेलहीन, नावागींहीन, कुनकुनहीन, देरघटहीन, बरतुंगहीन अऊ फगरूमहीन ल नेवतत हन। बाबू पिला म भोला, हितेस, कांता, किसन, रामकुमार, उत्तम, यसवंत अऊ बड़ेदाऊ जाहीं।

बड़ेदाऊ – ठीक हे, हमन जाबो। लेकिन एक बात कहना हे मोला।

पटेल – ले कना।

बड़ेदाऊ – कोई करा तुमन सुने–देखे ह कि कोई नोनी पिला ह मरघट्टी जाथे? नी जाय न, लेकिन ओ दिन सब देखे ह, रजनी ह अपन सहेली संग मरघट गीस, पाँचलकड़िया भी दीस। जाय खानी कोई नी बरजीन, दादू घलो कुछु नी कहीस। मुरदा ला खांधा देय के भी जिद करत रहीस ओ नोनी ह। पढ़–लिख दारिसे त का ओ ह अईसने करही। एकर ब दादू ल डांड़ देय बर लागही। नीही त दादू ह एके झन अपन कारज ल कर दारे, हमन रांधे–खाय नी जान। सफा बात।

पटेल – किसे गा दादू, तोर का कहना हे ?

दादू – मे तो कुछु नी जानत हों गा सियान मन। मोर सुवारी मोला छोड़ दीस। मोर चेत–भूत नी रहीस। कोन गे रहीस, कोन नी गे रहीस। का जानों।

समारू – में जानत हों, रजनी अऊ ओकर संग भकली दुनों झन गे रहीन। सब देखे हें।

ओई बखत म भेकलीन अपन इस्कूटी म बइठ के ठीक ओ रद्दा म पार होत रहे। ओ ह भकली सब्द ल सुन दारीस। इस्कूटी ल रोक के ओकरा चल दीस। कथे – का होगे भकली ला ?

समारू सकपका गे। बड़ेदाऊ कहे लागीस – तुमन दुनों झन का समझ के ओ दिन मरघट्टी गेय रहा ?

भेकलीन – मोर सहेली के भउजी बर महू ल दुख होईस। काकरो मरे म, का बाबूच पिला मन दुखी होथें ? नोनी पिला मन ला कुछु दुख नी होय ? जब

नोनी मन जहाज चला सकत हें, वायु सेना म भरती होके लड़ सकत हें, कबड्डी खेला म विस्व के चेम्पियन हो सकत हें, किरकेट वर्ल्ड कप ल जीत सकत हें, अंतरिक्छ म जा सकत हें, पोरफेसर, बेग्यानिक, डाकटर, जज बन सकत हें, अइसने सबो छेतरा म महिला मन पुरूस मन संग बराबरी कर सकत हें, त काबर दुख के समे म पुरूस मन महिला मन संग दूजा भाव रखथें ? हमू मन दुख के समे म बाबू पिला मन के संग दे सकत हन। जब हमन डाकटर बन के मईनसे मन के पोस्टमारटम कर सकत हन, त हमन मुरदा ल समसान घाट म जलत भी देख सकत हन, मुरदा ल कांधा भी दे सकत हन। अऊ सुन – जो मरथे, तेहर पुरूस मन के ही दई, ददा, भाई, बहिनी, भउजी, ननंद, बई, बबा नी रहे; महिला मन के भी कुछु रिस्ता रथे। हमू मन ल भी ए हक हे कि हमन मरोइया ल कांधा देइ। बेटा अऊ भांचा मन ही चिता ल आगी दिहीं ? बेटी – बहिनी मन के कोनो हक नीए ? कइसे गा सियान मन, बतावा।

गुड़ी के एक आदमी हर भूला गीस कि ओहर गुड़ी म बइठे हे। ओला अइसे लागीस कि मंच ले कोनो बड़े नेता के भासन ल सुनत हे। अऊ खुसी के मारे जोस म खड़ा होके ताली ठोंक पारीस। ओकर संग म आधा गुड़िसार मन अपन आप ताली बजा दिन।

बड़ेदाऊ के मुहु ह सिला गे।

भेकलीन – मोला एक ठन अऊ बात कहे बर हे।

पटेल – कना बेटी।

भेकलीन – काकरो मरे म भोज नी होना चाही। मरोइया के घर म दुख छाय रथे, तभू ले ओमन समाज ल खुस करे खातिर एक–से–एक चीज बनाय के उदीम करत रथें। काकरो जवान बेटा, बेटी मरथे, त ओकर दुख ल ओइच हर जानथे। आने का जानही। आने ल तो खाय से मतलब। खवोईया सगा मन तो उल्टा ए कथें कि ए खंग गे, ओ खंग गे अऊ निनास के चल देथें। का एहर सही बात ए कि काकरों मरे म पेट भर के, छाती–बूका के आत ल बनेच खई? न, मोर बिचार कुछु अलग हे। ओ ए हे कि काकरो मरे म मृत्यु भोज बिलकुल नी होना चाही। एक सोक सभा रखना चाही, ऊँहा मरे आदमी के फोटो ल आघू म राख के ओकर आत्मा के सांति बर दू मिनट के मउन रहना चाही। फेर सियान–सियान आदमी अऊ परिवार के बाबू पिला–मई लोगन मन एक–एक करके फूल अर्पित करें, ओकर अच्छाई के बारे म कुछु बोलें, तहाँ ले परसाद के रूप म दूदी ठन बरा

लेके बिदा लेंय। माड़ी मोर के छाती बूका के आत ल खीर, गुलाब जामुन अऊ नाना परकार के पकवान खाय के का जरूरत हे ? दुख म आय हें त दुख मनाय अऊ घर जाएँ।

पटेल – ठीक कहत हस नोनी। त गाँव के सियान मन, एक काम करी हमन। भात–साग रांधे के काम ल बंद करी। बरा बनोईया मन बस आ जाहा काल बिहना। एक ठी अऊ गोठ, सब झन अपन घर ले फूल लेके आहा। ले दादू, अब चलत हन हमन।

भेकलीन जीत गे अऊ मने–मन म बड़ेदाऊ अऊ समारू ल गारी देत चल दीस– बरा, दुख म भात बोजही। संसकिरती के गलत पक्छ ल छोड़े के बजाय, ओला बढ़ावा देत हे।

❑❑❑

फूटहा पहाड़ मंदिर अंगत ले सुंदर अऊ भेकलीन दुनों झन उतरत रहें। अब भेकलीन बर ईसा मसीह के संगे–संग सिव हर भी परभू होगे। दुनों एक–दूसर के हाथ ल धरे हें। बरमाला ल निकाल के बेग म राख लीन। भेकलीन हर तरवा के चूंदी ल आघू अंगत खालहे जादा गिरा लीस। मुहुँ ल स्कार्फ म तोप लीस। खालहे उतरे के बाद डेरी अंगत एमन ल दिलखुस लाज दिखीस। सुंदर के आँखि म चमक आगे। एक घंटा बाद सुंदर अऊ भेकलीन दुनों झन सरीर ले थके–हारे दिखत, लेकिन चेहरा ले खुस होके दिलखुस लाज ले बाहर कोति निकलीन। निकल के पईदल चले लागीन। भेकलीन गुनगुनात हे – तोर मया के मारे, मोर जिया हारे। मोर पिया न जा रे, तें मोर मया रे। .... गुनगुनात–गुनगुनात एक ठी छोटकुन पथरा म भेकलीन के गोड़ ह थुरा जाथे। गाना के लय हर टूट जाथे अऊ धियान ह भंग हो जाथे। ओई खानी अपन हाथ अंगत ल देखथे त सोर पाथे कि ओकर हाथ ल तो सुंदर ह धरे हे। अब संसो म भेकलीन ह दिखे लागीस। ओकर आँखि म एक घंटा पहिली के दृस्य ह दिखे लागीस। थोरकुन के गेय ल भेकलीन ह अनमने ढंग ले पूछथे – मया अऊ बिहा म तें का अंतर समजथस ?

सुंदर – ''मया–पेरेम म जियरा के संग–संग सरीर भी एक–दूसर के हो जाथे। बिहा म सिरिफ सरीर एक–दूसर के होथे। पेरेम करे के बाद बिहा होय ले एक–दूसर ल बात–बात म सक करथें। बिना मया के बिहा होय ल विस्वास बने रथे। ए ह मोर बिचार ए।''

भेकलीन – ''एक–दूसर के जियरा मिलई हर ही मया ए। जब सरीर पाय के इच्छा जागथे, तब वो ह मया नी रह जाए, वासना हो जाथे। टूरा मन मया ल घुमा–फिरा के समरपण के नाम देथें, फेर गलती से भी टूरी मन एक घँ अपन के सरीर ल सँउप तो दीन, टूरा मन अऊ–अऊ कके जान खा देथें। फेर एक दिन ए वासना ह खतम हो जाथे, संग म मया ह घलो खतम हो जाथे। बिना वासना के मया ह बिहा तक जाथे। बिहा के बाद ही लईका पाय के इच्छा ह ओमन में जागथे। यदि मया ह बिहा के पहिलीच वासना तक आघू बड़ जाथे, त मया ह धीरे–धीरे खतम हो जाथे, बिहा तक नी पहुँच पाए। गलती से भी यदि टूरा–टूरी मन मया करत–करत वासना म फँस गीन, अऊ ओकर पाछू बिहा होत हे; त ओ बिहाव हर लंबा नी टिके।''

सुंदर – ''मोर विचार से मया म आत्म समरपण होना चाही, तभे मया ह सफल कहलाथे। टूरी मन अपन ल नी सँउपीन, त समझ ले कि ओहर कोई अऊ ल घलो मया करत हे।''

भेकलीन – ''में तोर गोठ ल काटत हों। मया ह अमूर्त ए। मया ह भावना म रथे, जेला मन ह, आत्मा ह अनुभव करथे। जइसे सरधा होथे, भकती होथे, वइसे मया हर भी होथे। ए सब हर निरगुन, निराकार होथे; चाहे गियान ल क ले, चाहे मया ल क ले, ए सब हर मन के आँखी ले दिखथे। कबीर साहेब ह, गुरू घासीदास ह, संत धरमदास ह जे निरगुन गियान के बात करे हे, जायसी ह जे निरगुन आत्मिक मया के बात करे हे, लेखक चन्द्रधर सर्मा गुलेरी ह 'उसने कहा था' कहिनी म जे असरीरी पेरेम के बात करे हे, ओहर सिरतोन मया–पेरेम ए। हिन्दी के एक झन बियंगकार ह अपन के मयारू संग सिरिफ एकरे खातिर बिहा नी करीस कि बिहाव के बाद मया ह खीक हो जाही। तें कहत हस आत्म समरपण ह मया ए! गलत, ए ह वासना ए, जेकर होय के बाद मया ह खीक हो जाथे।''

सुंदर – ''मया–पेरेम ह पईसा के लोभ ए। जिहाँ जादा पईसा दिखीस, ऊँहाँ मया के खेल सुरू हो जाथे, सुवारथ सुरू हो जाथे।''

भेकलीन – ''जिहाँ सुवारथ होईस, ऊँहाँ मया नी टिक सके। पईसा के रहत ल जोन मया ह रथे, ओला मया नी कहे जाए, सुवारथ कहे जाथे। सुवारथ अऊ मया एक साथ कभू नी रह सकें, काबर कि सुवारथ जिहाँ रही, ऊँहाँ वासना आथे, मया नी आए। मया ह तो सूछ्म सक्ति ए, प्रकिरती के सुंदराई ए, फूल के

मुसकुराई ए, सीतल हवा के थोर–थोर चलाई ए, पान–पतई के लहलहाई ए; एमा पदारथ के अऊ सरीर के कोनो काम नी रहे। सुवारथ म सरीर के काम रथे। सुवारथ म सरीर ल पिचकोले जाथे, फेर पईसा के मरहम लगाय जाथे। पईसा, सुवारथ, आत्म समरपण, वासना सब एके परिवार के भई–बहिनी ए। एमन जिहाँ–जिहाँ जाथें, ऊँहाँ मया नी रह सके। अच्छा, सुंदर! ए बता, परिवार बसाय के बाद जो होथीस, ओहर हमर बीच आज होगीस। त अब बिहाव बर तोर का कहना ए ? तें कहत रहे न, एक–दूसर ल सफा जान दारी। आज तें जान दारे; कि अऊ बाँचे हे, जाने बर!''

सुंदर – बिहाव के बाद हमन घर मन के संग पूरा बंधा जाबो। ए काम कर, ओ काम कर, ईंहाँ जा, ऊँहाँ जा; घूमे–फिरे के आजादी खतम हो जाही। एकरे सेंथी, अभी इनजवाय करी। तोर का कहना हे ?

भेकलीन – बिहाव हर मोर बिचार म एक हँसी–खुसी बंधना ए। एमा बंधाय के बाद पतिदेव मन अपन के जिम्मेवारी ल समझथें। सुरु–सुरु म एक–दूसर संग मया नी रहे, लेकिन जिसन–जिसन सात भाँवर होत जाथे, मया एक–दूसर बर आत जाथे। जइसे ही पहिली भाँवर परथे, अच्छा–अच्छा जगा ल एक संग आय–जाय के मया ल समझथे। दूसर भाँवर परत ही, एक–दूसर के दाई–ददा ल अपन दाई–ददा समझे के मया आ जाथे। तिसरईया भाँवर म दुनों झन मिलके अपन परिवार ल पोसे–पाले के मया ल जानथे। चउथा भाँवर परे म दुनों के मया ह अब्बड़ बाड़ जाथे अऊ एक–दूसर ल खुस रखे के अऊ सम्मान करे के बिचार दुनों के दिल म समाथे। पाँच भाँवर जइसे ही परथे, अपन परिवार ल आघू बढ़ाय के मया अऊ होवईया लईका के देखभाल करे के मया ह दिखे लागथे। छे भाँवर के संगे–संग एक–दूसर के सबो दुख–सुख म संग रहे के मया ह पलपला जाथे। जइसे ही सात भाँवर परथे, मने–मन म एक दूसर ल कहे लागथे कि हमन सब दिन संग रहिबो, सुवारी ह अपन के पति ल कथे कि तें मोर छोड़ आने मईलोग ल कभू झिन देखबे, आने के सुवारी ल माता समान जानबे; अइसने पति घलो अपन सुवारी ल कथे कि तें भी मोर छोड़ आने मरद ल गलत नजर से कभू झिन देखबे। सातों भाँवर जईसे ही पूरा होथे, दुनों म अब्बड़ मया हो जाथे। ए मया–पेरेम हर जिनगी भर दुनों के साथ रहिथे। बिहाव होत रथे अऊ ए मया ह भाँवर गनिया दुनों म होत रथे। बिहाव के बाद तो होबेच करथे, बिहा होत रथे अऊ मया ह दुनों झन ल हो जाथे। जेखानी बिहा होत रथे, तेखानी भाँवर गनिया दूल्हा या दूल्हन ह कुछु किरिया घलों खाथें। ए ल सात भाँवर के सात

वचन कथें। पहिली भाँवर म दूल्हन ह पईसा–कउड़ी ह कभू झन खंगे कथे। दूसर भाँवर म दूल्हन ह कथे कि हमर सरीर ह बने रहे, पोट ताकत रहे। तिसरईया भाँवर म दूल्हन ह सुख–सुविधा मांगथे। चउथा भाँवर म दूल्हन ह परिवार बर सुख–सांति अऊ आपस म मया मांगथे। पाँचवा भाँवर म दूल्हन ह लईका मांगथे। छेठवाँ–सातवाँ भाँवर के खानी दूल्हा ह कुछु–कुछु किरिया खाथे। छेठवाँ भाँवर के समे दूल्हा हर हर मउसम म साथ निभाय के किरिया खाथे। आखिरी भाँवर के समे सात जनम तक संग रहे के बात दूल्हा ह कथे। बिहा म जे सात भाँवर होथे, ओ सात भाँवर के मतलब सात जनम के रिस्ता होथे। लेकिन कुछु गुनी मईनसे मन बिहाव के आने मतलब निकालथे। एमन एला समझउता कहे हें। मोर बिचार म ओमन गलत कहे हें। बिहाव हर समझउता नोहे, एहर बिहाव के पहिली के मया ले बनेच जादा मया ए अऊ सुघ्घर, टिकाऊ, स्वस्थ, सुप्पर ले भी ऊप्पर के मया ए। जेमन ल मया हो जाथे अऊ बाद म वासना के वस म आके बिहाव करथें; ओमन के बिहाव के पहिली जे किसिम के मया ओमन के बीच म रथे, ओ मया–पेरेम ह बिहाव के सात भाँवर के संगे–संग होवईया मया–पेरेम के आघू म कुछु नोहे। बिहाव करे म जो मया–पेरेम होथे, ओला परमानंद, सच्चिदानंद कबे तला चलही। ए मया म सांति रथे, जइसे अपन के परभू ले मया–पेरेम–भकती करे ल मन ह सांत हो जाथे। जे मया आजकल के टूरा–टूरी मन के बीच म होथे, ओहर बिहाव के सातवाँ हिस्सा से भी कम के बरोबर ए, एमन के बीच म एक भाँवर के बरोबर भी मया नई रहे। कई बार तो मया ही नी रहे, एक–दूसर के आँखि म एक–दूसर के पईसा ह या सरीर ह दिखथे। मोला लागत हे, बिहाव के मतलब ल तें समझ गेय होबे। अच्छा, सुंदर, तें का कहत रहे ? अभी इनजवाय करी ? अऊ इनजवाय करत–करत मोर पेट ह निकल जाही त !

सुंदर – ले न ओखानी देखा जाही, में हों न। तें काबर चिंता करत हस ? अब डेड़–दू महिना बाद मिलबो, कोई झिन जाने हमर मंदिर बिहाव ल, नीही त अलहन हो जाही। पीरयड नी होही त मोर करा भेंट करबे, ओ दिन अधार कारड ल ले आनबे, झिन भुलाबे ।

❑❑❑

दादू ह अपन संग मन के संग म एक झन कुँवारी लड़की ल देखे गीस। पसंद आगीस, ओकर बाद अपन घर के सियान मन ल लेके फेने गीस।

दादू के कका – कइसे ओ नोनी, का नाँव ए तोर ?

नोनी – नयना।

दादू के बड़े बबा के बेटा – ले दादू तहूँ गोठिया, कुछु पूछ।

दादू – कतक पडहे हस ?

नयना – बीए।

एक झन ह नयना के मुहुँ, कान, आँखि, तरवा अऊ मूड़ के चूँदी ल देखत हे। एक झन ह हाथ के अंगठी मन ल धियान से देखत रहे। त एक झन अऊ ह गोड़ के अंगठी ले देखत रहे, अंगठा के बाखा के अंगठी ह जादा लम्बा रहीसे। दादू के संग म जतकी झन आय हें ओ सब मन नयना के एकसरा करत रहीन। ए बात ल नयना अऊ एकर घर के सियान मन भी अजमात रहीन, लेकिन कुछु नी कहे सकत रहीन।

दादू – खाना बनाय ल जानथस ? बिरयानी, पालक–पनीर, पुलाव बनाय बर सिखे हस कि नीही ?

नयना – सब बना लेथों।

दादू – उमर कतह होथे ?

नयना – तेईस।

दादू – नाक बाजथे ?

नयना के दाई – थोर–थोर बाजथे, लेकिन हर घरी नी बाजे, जेखानी सुतथे, तिखानी बाजथे।

गोली मारे के पहिली सोले फिलिम के गब्बर सिंग ह अपनेच के दू आदमी ल हँसवाय रहीस। नयना के दाई ह घलो दादू मन ल गोठियाय के पहिली हँसवाईस।

सब झन हाँस दारथे।

दादू – तोला में ह मन–पसंद आँय हों या नीही ?

नयना – बाबू जानही।

दादू – अऊ का–का जानथस ?

नयना – किरकेट खेलथों। इंस्टरा भी चलाथों। रील बनाथों। रनर ओं। हाई जम्प के पलेयर ओं। एसाई के फिजीकल निकल गे हे।

दादू के कका – ले नोनी, तहूँ कुछु पूछ ले।

नयना – कतक पडहे हस ? पाँच के पहाड़ा पड़ के सुना तो !

दादू – आठवीं पड़हे हों। लेकिन पहाड़ा नी जानो।

नयना – खाना बनाय ल जानथस ? बिरयानी, पालक–पनीर, पुलाव बनाय बर सिखे हस कि नीही ?

दादू अपन कका के मुहुँ अंगत ल देखथे। कथे – ए मोर काम नोहे, नी जानो।

नयना – उमर कतह होथे ?

दादू – (थोरकुस रूक के) छियालीस।

नयना – का–का जानथस ?

दादू चुप।

नयना – तें अपन आप ल का समझत हस ? तोर म एक ठन भी तो गुन नीए अऊ तें मोला पूरा नाप–जोख करत हस। मोर चीनी अंगठी के भी बरोबर नियस अऊ चले हस मोला बिसाय बर। एको ठन लाज लागीस तोला ? अऊ में अब तुमन ल कहथों – तुमन मोला समान समझ के आखा–बाखा सब कति ल देखत हा ? तुमन बाजार आय हा का ? चिरहा बोरा म हीरा भर के लेगबो कहत ह, हीरा तो हीरा ए, कोयला भी नी मिले तुमन ला। लाली चहा पीया अऊ ए घर के डाहर ल भूला जावा। सुने गा दूजहा। तें नी बताबे, त का में नी जानहाँ, मोरे उमर के लइका के बाप अस तें अऊ सुन, तीन महिना घलों नी होए हे तोर सुवारी ल मरे, बिहा करे बर चले हस।

दादू के कका ह अपन तरवा के पसीना ल चुपेचाप पोंछीस। हड़बड़ी म दू झन मन अपन के चप्पल ल नयना मन के अंगनच म छोड़ दारीन। निकले के बाद सुरता आईस तभू ले लेहे नी गीन।

ओमन के जाय के बाद नयना मने–मन म बड़बड़ात हे – बरा, दूजहा होके मोला देखे आय हे। अपन के उमर ल देखे बर नीए। खुद ल कुछु बनाय बर नी आय अऊ मोला आनि–बानि के बनाय जानथस कि नीही पूछत रहीस।

दादू ह अपन के कका, बड़े बबा के बेटा अऊ फूफा के संग नयना के घर ल लटपट निकल के जाथे। दादू ह चुपे हे, बाकी तीनों मन गोठियात जात हें। ए तो पक्का ए कि गोठ ह नयना के बारे म ही होत हे। दादू ह संगेच म हे तभू ले ओमन के गोठ ल नी सुन पाथे। एकर धियान हर अन्ते अंगत गेहे। मने–मन म गुनत हे– अभी मोर काजल बेटी ह तेईस साल के होगे हे। अऊ मेहर तेईस साल के टूरी ल अपन बर देखत हों! मोर म कुछु गुन नीए। में कुछु नी जानो, जादा पढ़हे भी तो नी ओं। अऊ मेहर अपन बर बड़खा पढ़होईया टुरी देखत हों? नयना के दई–ददा के भी तो कुछु सपना होही कि ओकर बेटी के बिहाव बड़े घर म होय, लड़का नोकरी करत रहे, ओकर जहुँरिया रहे। ए! में ह का करत रहें ? अपन लोग लईका, बहिनी के बिहाव के बारे म नी गुन के अपन बारे म गुनत रहें। बड़ सुवारथी होगे रहें। भकली ह ओ दिन बने कहीस। अऊ आज नयना हर परस्न पूँछ–पूँछ के मोर आँखि ल खोल दीस। घर म रँधनी खोजे के मन रही त मोरे जोड़ा खोजहाँ, कोनो छाँड़ल ल खोजहाँ, कोनो कुँवारी के जिनगी बरबाद नी करों। कोई ल दईज के नाम से तंग नई करों। अंधविसवास म नी पड़ों। मोर बहिनी, लईका मन ल बने पढ़हाहूँ। मोर तीन–तीन ठ सुवारी मर गे, तभू ले मोला चेत नी आईस। मोरेच करम के फल ए, जेकर कारन मोर संग अइसने होत हे। अब महूँ भकली के रद्दा म चलहूँ। छि, में अब मोर बर नी सोंचों। परवार बर, समाज बर काम करहूँ अब। रजनी ल रईपुर म ही जतको सके ओहर, पढ़हाहूँ। काजल ल भोपाल के हासटल म भेजहूँ, पोट पढ़ के मोर नाम अमर करही। बेटा पवन ह अभी तो साइंस कालेज म बीएससी फस्ट सेमेसटर म गीसे, पढ़हन दे अहू ल बने। दादू के कका ह नरिया के कथे– ठीक कहें न दादू ? दादू ह कथे – अई, का कहे कका ? कका ह ओइच गोठ ल दूसरइया नी कहीस। सब झन अपन–अपन घर चल दीन। कोनो, कोनो ल कुछु नी कहीन। दादू ह संगेच म रके चलत रहीसे। लेकिन मने–मन म कुछु आने चलत हे।

काजल के दई ह साढ़हे तेईस साल पहिली दादू करा पेल देय रहीस। एकर मूड़ ल मुड़ के आठ गाँव के मन भात खाय रहीन अऊ ओखानी के सात सो रूपिया डाँड़े रहीन। सकिला ह पहिलीच ल सँचर गे रहीसे। छेइच महिना म

काजल ह होगे। तीन साल बने चलीस। ओकर पीछू तोर अम्मी घर ले कुछु नी लाने हस कके, रोज दू–दी बात होय। एक दिन घर के सब झन बजार गे रहीन, बेर बूड़ताहा आईन त देखथें – सकिला के मुहुँ ह गंधात रहे। ओ ह पेट ल धर के सुते रहीस। सायद एहा खेत के दवाई ल पी दे रहीस। डाकटर करा ले जात रहीन त डाहरेच म रेंग दीस। ओखानि काजल ह सिरिफ तीन साल के रहीस, दई के कोरा ह छूट गे।

दूसर सुवारी बनीस ओकरेच गोती के झूलबाई ह। बड़ लफड़ा होईस एकरो म। गुँड़ी–ऊपर–गुँड़ी रोज होय ओ बतर। बलदू ह ओखानि नव साल के रहीस। रोजिच ओमन ल चुरमुर खाय बर मिले। चुरमुर के लोभ म इस्कूल नी जाँए ओमन। ओकर संग म हुलस, दीपक अऊ जहाजराम मन घलो इस्कूल नी जाय। बलदू ले एमन एक–एक दू–दी साल के छोटे रहीन। गरमी महिना म हुलस घर के कोठार मेर ल एमन सबो झन गड्ढी ढुलाय के सुरू करें त मास्टर तरिया के पाछू अंगत ले कुदत – ढुलात सुरीतराम घरंग ल पेल के फेर हुलस घर के कोठार म पेलें। लकड़ी के गाड़ा बनाय रहें, तेमा संझा–संझा अरसिहीन के खेत ले नरई उबका के जोर के लाने अऊ बेर बुड़ताहा आगि तापें। कई झन के दई मन ओई नरई के आगी म धान ऊसने। नरई ल बरगंडा के लउठी म चूल्हा म हुरस–हुरस के आगी बारे के काम ल कोनो–कोनो लईका मन ल ओमन के दई मन गारी दे–देके करवाँय। ए लईका मन सोचें – ''सोझेच के हमन गाड़ा म नरई ल डोहारेन।'' गुड़ी के टुटती बेरा म सबो लईका मन गुड़ी करा सकला जाय, चुरमुर खाय बर। गुड़ी म फइसला होइस कि दादू के ममा रामनाथ ह एला गोद ले लेय। एहर आने गोती के बन जाही, तहाँ ले एकर नेंग–नाता ल चार झन मिल के कर दीहीं। चार दिन ल दादू ह समाज ल पोट खवाईस, अहु हर रेंग दीस। एक दिन खरही ले बिहिनचे झूलबाई ह पँईरा उलत रहीसे, त एक ठी डोर ह छू दीस। बइगा–गुनिया के मारे घर ह धरत नी रहे, समसेर लाल ह गँउहा के मन्तरा पड़हत रहे त बसंत सिंह ह डोमी के। सरीर ह नीला पड़त जात रहे। छेधा म चउहान मलेरिया ह अस्पताल ले जाय बर कहीस। अस्पताल ले जात रहीन त डाहर म झूल बाई ह ठग दीस। ओ खानी झूल के बेटा करमू ह चउथी पड़हत रहीस। मुनचुस देबो कके ठग के इस्कूल ले करमू ल लानीन। चुटुर के लोभ म बलदू ह पीछू–पीछू आ गीस। एकर संग म हुलस, दीपक अऊ जहाजराम घलो आ गीन। चुटुर नी पाएन कके, एमन पाँचमी के पड़हत ल करमू करा नी गोठियाईन, खिड्डी रहीन। पीछू ओमन में कब गोठ–बात होईस, मिट्ठी होईस, सुरता नीए।

दादू ह झूल के जाए के एक साल पाछू हसीना ल लाने रहीस। एहर अठारह साल के कुँवारी रहीस। आठ साल ले एमन कोसिस करत रहीन कि एको ठी हो जाथीस। लेकिन भगवान ह एमन के नी सुनीस। बईद–गुनिया, झाड़–फूँक भी बनेच कराईन। एक–दू घँ डाकटर ल भी देखाईन। कुछु नी होईस। फेर एक दिन डाकटर ह सोनोगराफी करे बर कहीस। रिपोट देखे के बाद डाकटर ह चुपे–चाप दादू ल बुला के कहीस– एकर पेट के तीन–चार घँ सफाई होय हे। ओकरे खातिर एकर बच्चादानी म पराबलम होगे हे। एहर दई नई बन सके। ओई मेर ल डाकटरी कोसिस ल छोड़ के दादू अऊ हसीना ह पूजा–पाठ, उपास म धियान लगाईन। हसीना के मरे के पाछू दादू ह पता पाईस कि बिहाव के पहिली हसीना के दस–बारा झन बीएफ रहीन अऊ बिना बेरेकप के तीन–तीन झन के संग म रहे। कोई फोन रिचारज करे, त कोई गुपचुप खवाय, त कोई कपड़ा बिसा देय। सब ल एहा भइया कहे। दू झन मन तो दादूच के संग ए। थोर–थोर पिए के बाद सब गोठ ल दादू करा एक दिन ओमन उगल दिन। सुन्दर घलो एकर बीएफ रहीसे। दादू ह ओ दिन कतको पीए तभू ले नी चढ़हे। पहिली दुनों सुवारी के मरे म एक–एक साल दादू ह रूक जाए। एदारी तो दुइच–तीन महिना म अपन बर सुवारी खोजे के सुरू करे हे। हो सकत हे, हसीना बर गुस्सा होही, तेकर खातिर साल भर घलो नई रुकीस।

❑❑❑

दिलखुस लाज के एक कमरा म सुंदर अऊ भेकलीन बइठे हें। भेकलीन सुंदर ल कथे – ''एदारी मोला अमली खाय–खाय के मन लागत हे।'' सुंदर ह कुछु नी कहे। भेकलीन ह फेर कथे – ''तें सुने हस कि नीही, काल मोर सहेली के बड़का भई दादू ह अपन बिहाव करे बर लईका देखे गे रहीस।'' सुंदर ह ए बात ल जादा नी जानत रहीस, कथे – ''बता न, लड़की ह एला मन करीस कि नी ?'' भेकलीन – ''का मन करही एला! एकर थोथना ल कुचर के राख दीस। दादू के मुहुँ म कहीस कि तें अपन उमर ल पहिली देख। देख न सुंदर, एकर ले टुरी के उमर ह आधा हे। अऊ एहर ओला देखे चले हे। थोरकुन घलो लाज नी लागीस ओला। ओ नोनी ह पुलिस के तययारी करत हे। सुघ्घर घलो हे। बीए कर दारे हे। अऊ दादू ह सिरिफ आठमीं पड़हे हे। कहाँ ले खपे ? ठीक हे, एकर उमर ह अभी पचास ल पार नी करे ए, त का एहा कुँवारी ल देखही ? अपन जोड़ा देखे। कोनो राँड़ी ल देखे। मिलिच जाही कोई–न–कोई। ओ ह मोर सहेली के भई होईस त का होईस ? अइसने ला गारी देय के मन लागत हे। बरा नितो!

सरकार ह पुनरबिहा के बेवस्था करे हे, त का कुँवारी ल ओ ह बिहा करही ? फेर राँड़ी मन के पुनरबिहा के बेवस्था के का होही ? सबो रँडवा मन कुँवारी मन ल बिहा कर लीहीं त राँड़ी मन के पुनरबिहा काकर संग होही ? राँड़ी मन ल घलो पुनरबिहा करे बर हे। लेकिन जेकर सुवारी मर गे, अइसे मरद जात ह छाँड़ल मईलोग नी खोज के कुँवारी खोजथे। अइसने, यदि छाँड़ल या राँड़ी ह अपन जइसे नी खोज के कुँवारा लड़का खोजही त ए रँडवा मन के का होही ?'' सुंदर ह मोबाईल म खेलत हे। मेसेज आय–जाय के आवाज आत हे। भेकलीन ह सल्लग कहत जात हे– ''एक अऊ घटिया मानसिकता हे, जेहर समाज ल तरीचतरी पोला करत जात हे। कोनो आदमी के अउरत मरही त, आदमी ह एक–दु महिना म ही अपन बर सुवारी लाने बर सोचे लागथे अऊ ई काम ल कोई अउरत ह करही त थू–थू हो जाही। ए घटिया सोच ल बदले के आवसकता हे। देख न, दादू घर के भउजी ल मरे एक महिना घलो नी होय हे, एहर सुवारी खोजत हे। ओ भी अपन के बेटी के उमर ल खोजत हे। बरा नीतो, लाज लागीस कि नीही ?' '

जइसने ओमन निकलत रथें, तीन चार झन लड़का मन आथें अऊ अपन हाथ के फोटो ल देख के कथें– इच हर ए। धर–धर। फिर थोर–थोर दू–तीन थपरा सुंदर ल लगा के घिल्लात बाहिर कोती ले जाथें। भेकलीन अब्बक खड़े हे। ओमन करिया रंग के मारूति भेन म आय रहीन अऊ सुंदर ल बईठार के चलते बनीन। भेन म नंबर नी लिखाय रहीस।

❑❑❑

भोपाल म अब्दुल ह लकर–लकर चलत हे। ओकर पाछू म जीन्स कुरती म काजल ह ओकर ले जादा लकर–लकर चलत हे। एक कोलकी ल पार कर दारीन। दूसर कोलकी ल घलो पार करत रहीन त छेधा म सुन्ना दिखीस। दुनों झन रूक गीन। काजल ह आक–पाक ल देखीस, कोई नी दिखीन त धरा–रपटा कुरती के ऊपर म करिया रंग के बुरका पहन लीस। दूसर कोलकी के पाछू तीसरईया कोलकी ले अब्दुल मन के डेरा सुरू होथे। अब दुनों झन आराम से चलत–चलत जात हें। जात–जात तीन–चार घँ कोलकी म जउनी–डेरी मुड़ीन। एक जगा रूक के हरियर पोताय सीढ़ही म चढ़हे लागीन। तीसरईया पटाव म चढ़ के एक घर म हमा गीन। जेखानी अब्दुल ह रायपुर म रहीस, तेखानी दादू के घर के आघू अंगत ल पार करके मस्जीद जाय। एको दिन आय के बखत त एको दिन जाय के बखत काजल ओला दिख जाय। हट्टी–कट्टी,

गोरी–चिट्टी काजल ल देख के अब्दुल के मन म कुछु–कुछु होय। अब्दुल भी ठीके–ठाक दिखे। हाथ म चूरा, सिर म टोपी, कान के खालहे तक चूँदी ओरमे रहे। एक कान म बाली चमकत रहे। एक दिन काजल के घर के आघू म पक्का चबूतरा म पन्नी म अब्दुल ह कुछु समान रखीस अऊ काजल अंगत ल देख के मुसकुराईस फिर चल दीस। चबूतरा के एक तिरंग सादा बिलई बइठे रहे, एहा चुपे–चाप जाके पन्नी ल सुंघीस, अपन लाइक कुछु नी पा के फेर ओईच करा जाके बईठ गे, जेकरा पहिली बईठे रहीस। बिलई ल जात देखीस त काजल ह रूक गे। एक घरी के गेय ल, आक–पाक ल देख के काजल ह चबूतरा करा गीस अऊ पन्नी ल बिन लीस। घर जाके खोल के देखीस त एकदम फेन्सी सलवार कुरती रहे ओमा। दूसर दिन संझा बेला म ओई नावा सलवार–कुरती ल पींध के अपन के मुहटा म ठाड़हे हे अऊ अब्दुल के डाहर देखत हे। थोरकुन के गेय ल अब्दुल ओई डाहर बर ले नाहकीस, हाथ म ईसारा करके मस्त दिखत हस कहीस अऊ एक ठन नानकन कागज ल ओकर आघू म गिरा के चल दीस। ओकर जाय के बाद म, काजल हर कागज ल बिनीस, ओमे के नम्बर ल अपन के मोबाईल म लिख के कागज ल एइसे खाईस जइसे कोनो रसमलाई ल खाथे। बिहान दिन ले एक–एक दिन के आड़ म कभू गारडन म, कभू रेलवे टेसन म, त कभू होटल म ओमन भेंट करे लागीन। तीन महिना के गेय ल नटखट काजल के जिनगी ह बदल गेय रहे। अब कुरती से बुरका अऊ बुरका से कुरती, इस्कूल से खोली अऊ खोली से इस्कूल।

अब्दुल ह मुरगी फारम में तीन सो रूपया रोजी म काम करथे। काजल के नाम ह बदल के कजरी होगे हे। एहर पराभेट इस्कूल सिसु मन्दिर म पढ़हाय के काम करथे। आय के खानि आधा रद्दा म जीन्स के ऊपर बुरका चड़ जाथे अऊ जाय के खानि बुरका निकल के कुरती ह दिखे लागथे। एहर रोज के काम ए।

सव मीटर के लम्बा ए अऊ बारा मीटर के चउड़ा। पँच–पँच मीटर के लंबाई म बीस ठन जाली वाला खोली बने हे, एकर चउड़ा हर चार मीटर के हे। एकर पाछू म चर–चर मीटर चउड़ा अऊ पँच–पँच मीटर लम्बा के बीस ठन फेने जाली वाला खोली हे। एकर पीछू म सव मीटर लम्बा के पूरा गोदाम बने हे, एकर चउड़ा ह घलो चार मीटर हे। ए बड़े गोदाम म आनी–बानी किसिम के अऊ रंग–बिरंगी बड़ अकन कुकरी भराय हे। ओमन के दाना–पानी के घलो बेवस्था हे। बिजली घलो लगे हे, एसी घलो लगे हे। रोज–के–रोज पचीस झन ल पगार मिलथे। बीस झन मन अपन–अपन खोली म कट्टा धर के खचाखच अपन बुता

म लगे हें। इहाँ टोकन सिस्टम चलथे। टोकन दे, चिकन ले। लीस–त–लीस, नी लीस त मोर गा गीस। पइसा तो अंते पटथे। गोदाम म सीसीटीवी केमरा लगे हे, बाहर के खोली मन मे सीसीटीवी के कोनो काम नीए, ओकरे सेथी एती केमरा नी लगे ए। बाहर सड़क अंगत तीन ठन केमरा लगे हे। एक–एक ठन एसटरा कट्टा मिले हे सब झन ला। कोई भी आदमी कोई भी खोली म बइठ जाथे। बुता सुरू करे के पहिली दुनों कट्टा ल टें थे ओमन। कोन दिन, कोन–कोन बीस झन मन खोली म काम करथें, एकर हिसाब काकरो करा नी रहे। कोईच–कोईच पाँच झन मन रोज बाहर कति जाके दंगा कराय के काम ल निपटाथें। सनिचर के दिन रहय। रथिया के बेरा रहे। जाय खानि एक ठन कट्टा ल अपन झोला म अब्दुल ह भर लीस, संग के मन देखीन अऊ मुसकुरा दिन। रोज कट्टा बाहर जाथे, कोनो बड़े बात नोहे। रोज पेपर म मारकाट छपथे, मडर छपथे, बोटी–बोटी काटे के घटना छपथे; कोनो बड़े बात नोहे। जात–जात डाहर म भट्ठी पड़ीस, दू ठन लाल बिसाके अपन पइजामा के जेब म भर लीस। फेर एक ठन मेडिकल भी पड़ीस, ओकर आघू म थोरकुन रूकिस, फिर ऊँहा जाके नींद के दू ठन गोली बिसाईस। अब अपन कोलकी अंगत चल दीस। जात–जात अब्दुल के आँखि ह लाल होगे।

जेखानि अब्दुल ह रायपुर में रहत रहीसे, ओखानि बानो के घर ह एमन के घर के बाजू म पड़े। अभी भी दुनों घर ह ओईच करा हे। अब्दुल अऊ बानो एके संग खेले बाड़हे हें। एके संग मदरसा घलो जाय। रोज बिहना एके टंकी के जड़ात पानी म दुनों नहाय। एमन दूसरी–तीसरी पढ़हत रहीन। जे दिन बानो के मोसी सकिला ह कुछु बुता म भुलाय रहे ओ दिन एमन बिना साबून के दु–दी मग्गा पानी रितोंय अऊ एमन के नहाई हो जाए, लेकिन ए ह कभू–कभू होय। अक्सर सकिला हर ही नवहाय एमन ल। पथरा म घँस–घँस के नवहाय, ठंडा दिन म हमाम साबून म नवहाय के पाछू सरसों तेल भी लगाय, तेल लगाय के बाद चर–चर मग्गा पानी भी ऊपर म रितोय। दुनों झन ल कपड़ा पहनाय फिर मूड़ भी कोरे। ए रोज के बुता रहे। रोज एमन ल चोरा के पँच–पँच के सिक्का भी देय। एक दिन सकिला के भाँटो ह अपन के सुवारी बर कड़कत रहे। साली चोरनी, हर हफता मोर पइजामा ले साएठ–सत्तर रूपया कहाँ उड़हिया जाथे। बरगंडा के सूँटी ल जइसे ही ओला मारे बर उबाईस, सकिला हर अपन दीदी के आघू म जाके खड़ा होगे। एक जबर सूँटी सकिला ल पड़े रहीस ओ दिन। अपन दीदीच के आघू म रोज दू ठन सिक्का सकिला ह निकालत रहे। एहर दूनों

लईका ल पइसा देय, ए बात ल एकर दीदी घलो जानत रहे। सकिला हर अपन के दीदी के ईसारा म ही पइसा ल निकालत रहीसे। सकिला के दीदी ह ओ दिन बनेच रोए रहीस। संझा कुन सकिला ल अपन के अब्बू घर भेज दीस। रोज रथिया अब्दुल अऊ बानो सकिला के संग म ही सुतें। ओ रथिया दुनों लईका दू घंटा तक रोईन, फेर सूत गिन। दूसर दिन ले अब्दुल ह अपन घर म सुते लागीस। बनेच दिन पीछू दादू पारा के मरघट्टी म सकिला के किरया करम होईस, त बानो ह फोन करके सुरू से आखिरी तक सब बात ल बताय रहीस। किसे में, जहर पी के मरीस, तहु बात ल कहे रहीस।

जईसे–जईसे अपन के खोली अंगत अब्दूल ह आघू बढ़हत जात हे, एकर आँखि ह अऊ लाल होत जात हे। एक हफता होगे, कजरी ह इस्कूल नी जाथे। अब्दुल ह घलो तीन दिन म अपन के खोली म आईसे। पड़ोस के एक अउरत ह पूछिस त अब्दुल ह बताईस कि कजरी ह नई सकत हे, त ओकर अम्मी करा गेहे। पन्दरा दिन कहत म आ जाही। सोला दिन कहत म एक अउरत ओकर खोली ले निकलीस। पड़ोसन के नाम सबाना ए, एहर ओला देख के पुछीस – ''कइसन कजरी, तें बनेच नी सकत रहे का? पातर होगे हस एदारी। बिटामीन–सिटामिन बने पी।'' अब्दुल के अउरत ह कुछु नी बोलिस। आठ दिन के गेय ल अब्दुल के मुहटा म नकपालीस लगे एक ठी अंगठी ह परे रहे। कोई आदमी ह बहरी म बाहर के धुर्रा–फुतका संग अंगठी ल ओ ठी कर देय रहीस। ओमे बनेच कस चाँटी हर झूमत रहे। रात होईस त सबाना हर अपन घरवाला करीम ल कथे – ''हजी, सुनत हा। अब्दुल के खोली के आघू म आज में ह एक ठी मईनसे अंगठी देखें।'' करीम – कुकरी गोड़ होही। तें बने देख नी पाय होबे।'' सबाना ह हँ कथे अऊ कुछु गुनत–गुनत रंधनी खोली अंग चल देथे।

❑❑❑

अब भेकलीन ह दिन भर घरेच म खुसरे रथे। कालेज जवइ बंद कर देहे। खाना बनोईया दीदी ह तीन टेम एकर खोली म खाना अमर देथे। भेकलीन के ददा ल चर्च के बुता काम अऊ मिसनरी काम ले फुरसत नीए। भेकलीन ह दिनमान सुतत रथे, रथिया जागत रथे। दिनमान का सुतही, रोवत रथे। अब एकर पेट ह दिखे लागीसे। रजनी ह बीच म एक–दू बार कहीस – मफिजेस्ट किट तोर बर लान देथों। लेकिन ए साफ मना कर दीस। मोर पहिली मया के चिनहारी ल में नुकसान नी करों। रजनी ह बीच–बीच म आके एकर करा भेंट करत रथे। भेकलीन ह पहिली के सब गोठ–बात ल सुरता कर–कर के रोवत

रथे – चपले के कालि पूजा मेला देखे आए रहीन। संझा के बेरा रहीस। सुंदर ह चाट खात रहीस, भेकलीन ह गुपचुप खात रहीस। गुपचुप के अमली पानी ह थोरकुन एकर गाल अंगत चुहा गे, फेर सुंदर ह अपन उरमाल ल निकाल के एकर गाल ल धीरे–से पोंछे रहीस। ओईच दिन गाड़ी करा फिरत रहीन त नानकन पथरा म भेकलीन ह हपट गे। थोरकुन खून पचपचाईस। ओइच दे सुंदर ह कुदत–कुदत अनिल मेडिकल गीस अऊ डेटाल, पोनी अऊ पट्टी लेके आईस। ओकर बाद घर जवई ल केंसिल करके थोरकुन सुरता ली सोचीन। भेकलीन ह कहे रहीस, का सुरताबो, थोरकुस तो पाय हे, तेकर ल झुलवा झूल ली। झुलवा के झूलत ल भेकलीन ह सुंदर करा लदाय रहीस। ए सुख ल कइसे भुलाय, आज ए सब हर सुरता आत हे। उरमाल ह कब के भींज गे रहे, अब दुपट्टा के बारी रहे। जोन दिन ले एमन म मया होईस, रोज संझा चार ले छे बजे तक सुंदर ह भेकलीन करा रहे, जे दिन नी रहे, ओ दिन इ समय म फोन म बात करे।

एक दिन, दू बजे दिन के नींद खुल गे। खुले के बाद पता पाथे, आँखि अंगत ले पानी गिरत रहे। अंचरा ह भींज गे रहे। नींद परे रहीस त सपना देखत रहीस या जागत–जागत सुरता आत रहीस; भेकलीन ह ए बात ल खुद नी जानत हे। सुंदर ह एमन के गारडन म आघू अंगत ल दुनों हाथ ल अलगा के दउड़त आत हे, भेकलीन ह ईति ल दउड़त जात हे। जइसने भेकलीन ह ओकर तीर म गीस, सुंदर ह पीछू अंगत दूरिहा भागत रहे। भेकलीन ह रुक गे, त सुंदर ह फेर भेकलीन अंगत दउड़त आत रहे। एहर ओकर अंगत जाय कस करे, त जइसने ओकर तीर म पहुँचे, सुंदर ह पीछू अंग फेर भागे। अइसने पाँच बार होईस। अब सुंदर ह सीमेंट के बेंच म बइठे हे। सुंदर ह हफरत रहे। भेकलीन ह ओला पानी पीअईस। पानी ह ओकर मुहुँ म नी गीस, पानी ह पलंग म उलदात रहे। एक घरी म रजनी ह एकर घरंग आईस। ई बात ल भेकलीन ह रजनी ल बताईस। रजनी ह कथे, ''तें ओ समय अर्धचेतन अवसथा में रहे। तुमन दुनों झन एक संग जइसने समय बिताय ह, ओहर तोला सुरता आत हे। तें ओ सब ल अब धीरे–धीरे भुलाय के कोसिस कर।'' अइसने कके, खुद सुरता करके अऊ कथे – ''भेकलीन, तोला सुरता हे, एक दिन सुंदर ह छत्तीसगढ़ही विभाग म ओकर एचोडी ल सुनात रहीस – सर, में रोज कालेज आत रहें, सब कार्यकरम में घलो रहों। एक दिन सब सर मन ल भजिया घलो खवाँय रहें। तुँहर मूड़ पीरात रहीस त दउड़त–दउड़त सारीडान लेहे गे रहे। सुरता हे ? त मोला इंटरनल म बीस म

सत–सत नंबर ही काबर मिलीस ? अठ–अठ दे देय रथा, त पास हो जाय रथें। अब में सुरू ले अन्ते पढ़िहाँ, अइसने कके सुंदर ह ओ दिन रो दार रहीसे। हमन ओ दिन छातरावृत्ति पता करे बर जात रहेन। ठीक ओमन के विभाग के आघू म ओकर गोठ ल सुन के रूक गेय रहेन। ओकर गोठ ल सुन के तें भीतर अंगत झांके भी रहे। ओकर बात ल सुन के तहूँ ओ दिन रो दार रहे। सुरता हे, ओई दिन ठी ले तें ओकर बारे म धियान देय के सुरू करे। आती खानि ओकर सर ह अपन विभाग के अऊ सर मन करा कुछु कहत रहीस। में कान लगा के सुनें त ओहर कहत रहीस – ए एससी मन बड़ राजनीति करथें, मोर पाछू पड़े रहीस। बड़ नार–फाँस करथें एमन। जा बेटा, फेल। अन्ते पढ़हत र अब।'' रजनी दुखी होगे – ''बेचारा सुंदर!'' भेकलीन चुपे हे। सब बात ल सुनीसे, ओकर बाद, एकर धियान ह अऊ पाछू अंग चल देथे।

एमन तीसरी पढ़हत रहीन। ओई खानि एक दिन भेकलीन ह अपन संग मन संग पँईरा के छोटे गादा म घुंडल–घुंडल के खेलत रहें। ओई खानि एक झन बइहा सहीं आदमी एकंग ल आईस अऊ बीड़ी पी के पँईरा गादा म फेंक दीस। आगी लग गे। भेकलीन के इस्केट के पाछू अंग ल आगी ह धर दारीस। भेकलीन ह जोर से चिल्लाईस – बलदू.....! बलदू भी संगेच म खेलत रहीस। दउड़त–दउड़त अपन के कुरता ल हेरत–हेरत आईस अऊ भेकलीन के इस्केट म लपट दीस। आगी तो भुता गे, लेकिन बलदू के हाथ अऊ बाखा ह थोरकुन जर गे रहे। बलदू ह बईठ भराईस, एकर ऊपर कोरा म भेकलीन लदा गे। बलदू ह उठ नी कहत रहे अऊ भेकलीन ह उठत नी रहे। भेकलीन ह पलट के बलदू के मुहुँ–कान अंगत ल देखथे। एकर जउनी आँखि के सादा वाला भाग म एकरच नीला रंग के बिन्दु रहे, जेहा मस्त दिखत रहे। भेकलीन नी रहे सकीस, कबेच करीस– ''तोर जउनी आँखि ल मोला देदे।'' बलदू कहीस– ''में काबर दहाँ तोला? दे दहाँ त में कामे देखहाँ?'' बलदू जोजवा रहीसे, भेकलीन ह बुधियार होगे रहे, भेकलीन ह ओकर गोठ ल सुन के हाँस दीस, ''मोर आँखि म देखबे न'' कके भाग गे। आज ओकर मुहुँ–कान ह परगट सुरता नी आथे, लेकिन नाँव हर सुरता हे। आज भेकलीन के मया हर डगमगाथे। सुंदर सुरता आथे, संग म बलदू घलो सुरता आथे। सुंदर के चेहरा सुरता हे, बलदू के सिरिफ नाँव। सुंदर के संग बिहाव सुरता हे, बलदू के सिरिफ नाँव। सुंदर के चिनहारी पेट म हावे अऊ मया के सबो गोठ–बात सुरता हे, बलदू के सिरिफ नाँव। आज घरी–घरी बलदू सुरता आत हे। मन म भेकलीन हर गुने लागीस कि काबर आज पँईरा आगी के घटना

हर सुरता आईस। थोरकुन के गेय ल बलदू ल ए भुला गीस। ए बीच म रजनी ह में जाथों बहिनी कहीस। भेकलीन कुछु नी बोलीस, काबर कि एहर अन्ते भुलाय रहीस, रजनी के गोठ ल सुनबे नी करीस। आधा घंटा के गेय ल रजनी ह एला फोन करके कथे कि आज के पेपर देखे हस ? रईपुर पतरिका के छत्तीसगढ़ही अंक के संछिप्त खबर म सुंदर के बारे म कुछु छपे हे। महूँ आथों। भेकलीन के पेपर खोजत ले रजनी आगे। भेकलीन ह एक साँस म पढ़ दारीस – ''एक कालेज पढ़होईया के मुड़ी कुचरके मउत। इस्थानी पुलिस ले जोन जानकारी मिलीस, तेकर अनुसार काल साम के रेल लाईन के तीर म एक झन विदयारथी के मउत होगे। एकर मुड़ हर पथरा म कुचराय हे। तीर म अधार कारड पड़े हे, लेकिन ऊहू म मुहुँ–कान ह सफा–सफा नी दिखत हे, फोटो म डेरेस हर सिवसंकर यूनिवरसिटी के ए। कारड म छेधा के चारेट्ठी अंक हर दिखत हे। कारड म एकर नाम सुंदर लिखाय हे। रथिया तक लास के चिनहारी करे बर कोनो नी पहुँचे रहीन। कहे जात हे कि ए ह सिंवसंकर म पढ़हत रहीसे लेकिन थोरकुन दिन पहिली ऊँहा ले निकाल देय गे रहीस। दिमाग हर विछिप्त हो गे रहीस। एक–दू झन टूरी मन संग घलो एला देखे गे रहीस। पुलिस के अनुसार, हो सकत हे टूरी के नाता रिस्ता मन दुसमनी म एकर मुड़ी ल कुचर के रेलंग फेंक दीन होही। पूरा तफसीस करे के पाछू ही पता चलही कि एकर संग का होय रहीस।''

भेकलीन के आँखि डाहर ले आँसू गिरे लागीस। रजनी के आँखि घलो डबडबा गे। भेकलीन आज टूट गे, कहे लागीस – ''का होगे बहिनी ? मोर लईका के ददा ह ओकर लईका के होय के पहिलीच चल दीस! मोर लईका ह बिन ददा के जनमही! एहर मोर किसमत ए कि लईका के या सुंदर के ए ? बता न बहिनी।'' रजनी – ''का बताँव बहिनी ? में सपना म घलो नी सोंचे रहें कि अइसने हो जाही।'' थोरकुन दुनों झन रोईन फेर खुद से चुप होगीन। ओ दिन रजनी ह भेकलीन के घरेच म सुतीस। रजनी के पर्स म एक–ठ–न–एक–ठ नोट्स हमेसा रथे। रथिया थोरकुन गोठ–बात करे के बाद भेकलीन ह सुत गे। भेकलीन के सुते के बाद म रजनी ह अपन क पर्स ल खोलीस, नोट्स निकाल के दु घंटा पढ़हीस, फेर सुतीस।

❑❑❑

एक झन नोनी ह रोज दिन दिल्ली म आईएएस कोचिंग कर के सके, तेकर पीछू निकलती बेरा म अपन के एक कोच ल नमस्ते सर कहे। सर के बाद हाँस के कका घलो कहे। छत्तीसगढ़ी म ए नोनी हर कका काबर कहे, कका सब्द ल कोन सिखोइस ? ए परस्न कोच ह ओला कभु नी पुछीस। सायद कोच ल घलो ओकर 'कका' कहई बने लागे। कोच हर हर दो साल म नावा–नावा चेहरा के लईका देखे। ओमा एकेच ठन चेहरा हर ओला जूना लागे। ओहर जेकलीन रहीस। अब तो जे दिन जेकलीन हर कोचिंग सेंटर नी आय, ओ दिन ह बलदेव बर अब्बड़ खीक लागे के दिन रहे। रोज–रोज कका सुने के आदत जो हो गे रहीसे। एक दिन पढ़हात–पढ़हात चलत–चलत अपन के टिफिन ल ओकर टेबल म रख देय रहिस। कंेटीन म जब जेकलीन हर टिफिन ल खोलिस, देख के भारी खुस होईस। ओमे ओकर मनपसंद चिला रोटी रहीसे। ओइद्दे अपन के मतारी भेकलीन ल फोन लगाके बालिस कि आज एक कोच अंकल ह मोला चिला रोटी देहे। तीन साल ले जेकर बर तरसत रहें, आज खाके मन खुस होगे। एति भेकलीन कोन अंकल ए कके सोच म पड़ गे। पचीस साल पहिली एहा चल दिस। एक दिन यूनिवरसिटी के केंटीन म भेकलीन अऊ रजनी बइठे रहें, तभे सुंदर, चयनी, सिरिया, मंजू, बलदेव, बलदेव के बड़का भई चीनीलाल, डिगेसी, रीना, राहुल, विवेक, मनोज, पिंकी, जहाजराम, सुमन, दीपक अऊ टेकराम घलो ओमेर आ जाथें। ओमे के एक झन हर अपन के टिफिन ला खोल के सब झन ल चिला खवाय रथे। कोन हर टिफिन लाय रहे, ओहा सुरता नी आत हे। बड़ सोचिस, लेकिन सुरता नी आईस। काकरो नम्बर घलो नी रहे, भेकलीन करा। लेकिन मनेमन म भारी खुस होईस कि बेटी के देखरेख करोईया कोई अपन राज ले ओकर तीर म अंकल बन के हावे।

चार साल के गेय ल जेकलीन के पोस्टिंग रायगढ़ होगे अऊ घरघोड़ा एसडीएम के बुता ह मिलीस। जेकलीन के संग सीरीनयना के पोस्टिंग जम्मू होगे। दुनों एके साल परीच्छा देय रहीन। जेकलीन ह आईएएस बनीस अऊ सीरीनयना ह आईपीएस बनीस।

सीरीनयना अपन के दल बल के संग म सेंटरल जेल के दउरा म हे। चार झन अपराधी मन ले आज विसेस पूछताछ करना रहीसे। एक कोठरी म एक झन ल उलटा लटका के एक झन पुलिस अधिकारी ह ठोंकत रहे। सीरीनयना के जाय के बाद म ओहर रूक गीस, एला जय हिंद करीस फिर दु मिनट तक कुछु कुछु बताईस। 'गुड' सीरीनयना ह कहीस। ''पानी पिला पिला के दु घण्टा अऊ ठोंक, फिर सब कुछ सही सही अऊ पूरा पूरा उगल दीही।'' कके सीरीनयना ह

दूसर कोठी के अपराधी करा गीस। ए ह सबकुछ उगल देय रहीस। ओ ह बताईस कि ओ ह सात जगा बम बलास्ट म सामिल रहीस। एक जगा निरदोस मईनसे मन ल भी बनेच झी मारे रहीस। अपन के नाँव–पता ल सही सही बता दीस ओ ह। अब ओकर कुटाई बंद हो गे रहे।

तीसर कोठरी म जेखानी आईपीएस सीरीनयना ह पहुँचीस, ओखानी अपराधी के मुहुँ म कपड़ा ठुँसाय रहीस। दु झन पुलिस अधिकारी मन ठोंकत रहें। सीरीनयना ह जइसे ही गीस, ओमन सेल्यूट मार के दूरिहा खिसक गीन। फाईल ल देखे के बाद,

''का नाँव ए तोर ?''

''अब्दुल ए साहब।''

''का करके आय हस रे?''

''दु सव रुपिया पाकिट मार के आय हों साहब।''

''लबारी मारथस।''

सीरीनयना ल गुस्सा आ गे। अपन के बेल्ट ल निकाल के अब्दुल के अइसे–अइसे जगा मारीस, जेला आईपीएस अधिकारी मन ल ट्रेनिंग के खानी आखिर म बताथें, आने पुलिस अधिकारी मन ए मार ल नी जाने। मार खाय के बाद अब्दुल ह अपन मन के बबकीस, ''साहब मेहा मोर बाई ल भोपाल म रहें त मार देंय, ओकर बोटी बोटी काट देंय। ओहर रायपुर के रहीसे। ओकर नाम काजल रहीसे। मोर दोस्त बानो के मोसी ल काजल के ददा हा बिगाड़ीस अऊ एक दिन सकीला ह मर भी गे। ओकरे बदला लेय बर में काजल ल फँसाय अऊ ओला भोपाल ले जाके मारें।'' एकर बाद अऊ कुछु गुनाह कबूल करवाय के जरूरत नी रहीस। जेल के अधिकारी मन ल कुछ समे तक निरदेस देय के बाद सीरीनयना ह कहीस – ''तीन दिन म ए चारों कोठरी के अपराधी मन ल रईपुर सेंट्रल जेल भेजे के बेवस्था करे जाए।'' एक झन पुलिस अधिकारी ह कहीस, ''मेडम सर, चउथा अपराधी ह विचितरा ए, जेकर कोठरी म आप मन बिना जाय वापस होत ह।''

''कइसे ?''

''ओकर विरूद्ध कोई केस नीए।''

''फिर!''

''ओहर इक्कीस बार मरे हे।''

''बने बता, पूरा, साफ–साफ बता।''

''पुरूस लास मन करा एकर अधार कारड मिले हे। दूसर दिन एकर मरे के खबर भी छपे। अइसने इक्कीस घँ करे हे। ओ सब लास मन लावारिस होईन हे। अऊ विसेस बात ए रहीसे कि ओ सब झन के मुड़ी कुचराय रहीसे। सबो लास करा हमेसा अधार कारड मिलिसे। ओ अधार कारड मन सफा–सफा कभू नी दिखिस। कभू–कभू अंक के सुरू ह मिटाय रहे, त कभू आखिरी अंगत ह। नाम हर भी अइसने पूरा नी दिखे। कभू सुरू के ह, त कभू आखिरी के ह नी दिखत रहे। सबले बड़े बात ए कि एहर काकरो करजा नी खाय हे, कोई ल एहर नी मारे ए, कोई बम काण्ड नी करे हे, कोई डाका नी डाले हे, एकर नाम से कोनो पुलिस रिकार्ड नीए। एकर नाम से कोई रिपोट नी करे ए। हमन समझ नी पाथन कि एला छोड़ी या राखी।''

''वेरी इन्टेरेस्टिंग। एकर से भी मिलहूँ। अभी तो साम होगे। जाथों। अब ए चारों झन ले रईपुर म ही भेट करहूँ।''

छत्तीसगढ़ही बोलईया, छत्तीसगढ़ म घटना करोईया अऊ रहोईया अपराधी मन बर जेल म अलग से ब्लाक बने रहीस। ओ समे सिरिफ चार कोठरी ही भरे रहीस। एक कोठरी म एकेच झन ल राखे जाथे। आईपीएस सीरीनयना घलो छत्तीसगढ़ के मूल निवासी आए अऊ छत्तीसगढ़ही बोलथे–समझथे, तेकरी सेंथी एला सरकार डाहर ले एमन के इसपेसल अधिकारी बनाय गे रहीसे।

तीसर अऊ चउथा कोठरी के अपराधी दुनों मन आईपीएस सीरीनयना के दिमाग म रात के बनेच समे तक रहीन। एकर दई नयना ह कई घँ बता दार रहीसे कि कइसे काजल के ददा ह ओला देखे आय रहीसे। तरह–तरह के प्रस्न पूछे रहीसे। नाक बाजथे कि नीही, घलो पूछे रहीसे। अब सुते आदमी का जानही कि ओकर नाक बाजथे कि नीही। ई गोठ ल क–क के सब कोई कई घँ खलखला के हाँसे रहीन हे। हाँसी–मजाक के जे घँ मूड होय, एमन के घर म दादू के ई प्रसंग ह छिड़बेच करे। फिर आगे ए बात घलो होय कि कइसे नयना ह ओमन ल गोठ म फटकारे रहीसे। एक झन ह तो अपन के चप्पल तक ल पींधे बर भुला गे। कइसे भुलाय काजल के ददा ल ? ओई काजल के ए अब्दुल ह सोसण करीस अऊ मार घलो दिस, छीः। कइसे छोड़े काजल के अपराधी अब्दूल ल ?

चउथा कोठरी के बहुरूपिया के कहानी ह घलो दिलचस्प हे। काकरो संग अन्याय नी करीसे, काकरो पईसा नी खाइसे, बीमा के पईसा भी नी पाईसे अऊ इक्कीस घँ आने–आने नाम से मर गे। गजब ! वा रे एकर किस्मत! एकर से मिलेच बर लागही। चल रईपुर जाके मिलहूँ एकर ले।

दूसर दिन, दूसर काम म व्यस्त होगे। एति, कछेरी ले कुछु कागज बनाय के बाद ओ चारों झन ल रईपुर भेज दिए गीस। तीन महीना बाद एकर ट्रांसफर छत्तीसगड़ होगे।

❑❑❑

तमनार म सेक्टर स्तरीय महिला खो–खो प्रतियोगिता के आयोजन होत रहीस। मुखिया पहुना बन के छेतरा के सांसद मेडम पहुँचीन। संग म घरघोड़ा के एसडीएम मेडम जेकलीन अऊ बड़े दरोगा नयना भी रहीन। सांसद मेडम के पीए अऊ कुछु नेता मन ल तो रहनच रहीस। उद्घाटन के बेरा आगे। कालेज के खेल प्रभारी ह नारियल अगरबत्ती के बेवस्था करे रहीस। सांसद मेडम ह छातरा मन ल सम्बोधित करके कुछु बोलिस। एमा ओमन कहीन कि ''नारी मन, लड़की मन अब सब जगा आगे आत हें, हर काम ल करत हें। सेना म भरती होथें। पायलट भी बनत हें। अंतरिक्छ में भी जाथें। तुहुँ मन आगे बढ़ा, देस के नाम रोसन करा।'' ताली बजे के बाद सांसद मेडम मन अगरबत्ती जलाईन। तहाँ ले नारियल ल एक अंगत के खम्भा करा चड़हाय के बाद, जय बजरंग बली कके जइसन ही नारियल ल धर के फोरे बर हाथ ल ऊपर उठात रहीन, ओमन के पीए ह 'राहा मेडम' कके रोक दीस अऊ ''नोनी पिला मन नी फोरें'' कहीस। मेडम ह 'अच्छा' कके नारियल ल खालहे पका दीस। खेल सुरू होगे। देखोईया मन बिकट ताली बजात रहीन।

सब नास्ता करीन, पईसा हजम होगे।

छे टीम आय रहीस, खेल खतम होगे।।

आघू–आघू एसडीएम के गाड़ी जात हे। पीछू म सांसद के गाड़ी जात हे। पीछू म तीन ठन अऊ गाड़ी रहीस, जेमा लोकल नेता मन ठूँसाठूस भराय रहीन। पतराकार मन बाईक म आय रहीन, पहिलीच चल दीन। जाय के पहिली खेल प्रभारी ल मेटर बना के वाटसप कर देबे कहे बर नी भुलाईन।

एसडीएम – ''का नाँव ए तोर ?''

बड़े दरोगा – ''मेडम जी, नयना।''

''कहाँ रथस ?''

''रइपुर।''

''ओ ! मम्मी तोर किस्सा कई बार बताए हे, जेखानी हमन प्रामरी इस्कूल म पढ़हत रहेन।''

''तुँहर मम्मी कोन ए ?''

''में भेकलीन के बेटी ओं।''

''अच्छा ! हमन ओला भकली कथन। तहीं हर जकली अस का ? सारी मेडम।''

''हव, कुछु नी होय। मोला सुरता आत हे, सिरने अऊ सुने। सिरने ल तो जानत हों, आईपीएस बन गेहे। सुने के का हाल–चाल ए ? आठमीं पास होय सकीस कि नीहीं !''

''सुनयना ह नम्मी म दू घँ फेल होगे। तहाँ ले एक दिन एक ठी बेग म अपन के समान ल धर के निकल गे। जाय खानि कहीस कि तुमन मोला झिन खोझिहा।''

''ओ...... ! त अभी ओ ह कोन मेर हे, कुछु पता–अता ?''

''सुने हों, घुम–घुम के कत्था कथे। देखे नीयों।''

''हूँ...। चल एक दिन भेंट हो जाही, चिंता–संसो झिन कर।''

''में संसो नी करत हों। संसो तो ओमन करें, जेमन ल ओ ह कत्था सुनात होही।''

फेर दुनों झन खलखलाके हाँस दिन। थोरकुन के गेय ला गंभीर होके जेकलीन कथे – ''आंटी, ये बता, दुनिया ह अतकी तरक्की कर दारीसे, तेकर बाद भी मई लोगन मन नरिहर काबर नी फोर सकें ? अभी खेल के उद्घाटन म तहुँ देखे होबे, सांसद मेडम ह जेखानी नरिहर फोरे बर होत रहीस, ऊही बेरा म ओकर पुरूस पीए हर ओला रोक दीस।''

नयना – ''देखें में। धियान से देखें।''

जेकलीन – ''मईलोग मन नरिहर फोड़हीं त, का भगवान नराज हो जाही? पुरूस जात हर ही फोड़ही त, भगवान खुस होही ? ए का बात होईस ? मोर विचार से, यदि काकरो सरधा कोनो भगवान के ऊपर हे, त ओ ह अपन के सरधा ल बताय के जे भी उपाय करे, कर सकत हे। जईसे ओ ह आरती कर लेय, भजन गा लेय, दीया–बाती दिखा देय, अगरबत्ती जला लेय, धूप जला लेय, बंदन लगा लेय, नरिहर फोड़ लेय, सलगा सुत के पाँ पर लेय या थोरकुन कोंघर के पाँ पर लेय, ओकर मन ए, चाहे बाबू पिला रहे, चाहे मईलोग; भगवान ओला काबर रोकही या ओकर ले काबर नराज होही ? सबो प्रकार के विधि–विधान ल तो मईलोग मन करथें, लेकिन नरिहर ल ही काबर नी फोड़ें ? नरिहर म कुछु गड़बड़ हे, भगवान म गड़बड़ हे या मई लोगन म ही कुछु गड़बड़ हे; एहर रिसर्च के विसय ए। फरमान जारी करे बर लागही।''

नयना – ''हूँ... (कुछु गुन के) भोग लगाय म घलो समाज अऊ संसकीरिती ल आपत्ति हें।''

जेकलीन – ''सही बात ए। पुरूस मन ही पुजारी बन के भगवान ल भोग लगाहीं तभे भगवान हर ओला पाही ? मईलोग मन पुजारी बन के भोग लगाहीं या नरिहर फोड़हीं तेला भगवान नी पाय का ? चर्च म फादर ही होथे, मदर काबर नी होय ? मईलोग मन हवाई जहाज चला सकत हें, फउजी बन के आतंकवाद ले लड़ सकत हें, बड़खा–बड़खा कम्पनी म सीईओ बन सकत हें, कोनो देस के रास्ट्रपति हो सकत हें, त एक पूजा घर के पंडित, फादर, मउलाना काबर नी हो सकत हें ? अक्सर ए काम ल पुरूस मन ही काबर करथें ? मईलोग मन पुरूस के हर काम कर सकत हें, लेकिन पुरूस मन मईलोग के हर काम नई कर सकें। मतारी यानी कि बच्चा पईदा करे के काम सिरिफ मईलोग मन ही कर सकत हें। ए करा पुरूस मन ए क सकत हें कि मईलोग मन बाप नी बन सकें। एकर जबाब ए हे कि बच्चा पईदा होय के पहिली या पईदा होय के कुछु दिन म ही ओकर पति यदि मर जाथे, त लईका के पाले–पोसे, पढ़हाय–लिखाय, बड़खा करे, नउकरी धराय के काम ला ओकर दई हर ही बाप बन के करथे। करथे कि नीही?''

नयना – ''ठीक कहत हस नोनी। मईलोग मन देस अऊ समाज के सबो छेतरा म जादा हिस्सादारी निभात हें, जादा काम करत हें; तभू ले एमन ल

ओतकी महत्व नी मिलत हे। कुछ जगा म एमन ल तो पूरा मना कर देथें। जइसे कि हर महीना एमन ल चार–पाँच दिन तक महीना होथे। ओखानी मंदिर म पेलन नी देंय, घर म आरती–दीया नी दिखान देंय, रंधनी खोली म रांधन नी देंय, अचार–कलीर नी छुअन देंय, बरी नी बनान देंय।''

जेकलीन – हूँ.....। बनेच बदले बर लागही। एमसी ह तो एक सारीरिक किरिया ए। एकर होय ले कोई आने काम ह का फरक पड़ही ? कोनो छूत मोर हिसाब से तो नी लगना चाहिए भई। एहर तो बहुत अच्छा चीज ए। एकर होय ल ही मईलोग मन माँ बनथे। एहर पवितरा किरिया ए। ईहर नी रथीस त हमन–तुमन कोई पईदा नी होथेन, ई संसार हर ही नी रथीस। कई झन मईनसे मन के मन म मईल भरे रथें, आने मन बर खीक–खीक गुनत रथें अऊ चारी कर–कर के नुकसान पहुँचाय के कोसिस करत रथें। कई झन मन तो कोई ला मारे के, पीटे के, कहुँ अंगत चोरी करे के, कोई ल छेड़े के, काकरो संग जबरन गलत करे के, काकरो पईसा ल हड़पे के, कोई ल नीचा दिखाय के बिचार अपन दिमाग म लात रथें। अइसने आदमी मन जब भगवान के जगा, जईसे मंदिर म पेल के पूजा–पाठ कर सकत हें, त ओ मईलोग मन काबर नी जा सकत हें, जेमन ल पीरियड होय रथे। ए ह तो सारीरिक मईल ए। सरीर के मईल ले जादा खतरा मन के मईल होथे। सरीर के मईल ल तो पानी ले धो सकत हें, लेकिन मन के मईल ह बनेच धोखा खाय के बाद ही मिटथे, ओ भी पक्का नीए कि ओ ह मिटही, कुछु दिन के बाद फेने मन म आ जाथे, मन के मईल ह मरे म ही जाथे, काबर कि एहर ओ मईनसे मन के मूल सुभाव रथे, जेहा जनमते ही आ जाथे, सुरू–सुरू म दबे रथे, बाद म सही मउका मिलथे त अपन रंग ल दिखाथे। एक बार का होईस, में मोर दई संग एक घँ मंदिर गे रहे। कुछु सत्संग चलत रहीसे। में ओखानी छोटे रहें लेकिन बुद्धि आ गे रहीसे। सत्संग म थोरकुस ऊँच अकस जगा म एक झन संत ह बईठ के गोठियात–समझात रहीस। ओ कहत रहीस– ''जे–जेखानी कुछु पूजा–पाठ के समे आथे, ओकर ले कुछु दिन पहिली ले हमी मन के मांझा के मिस्तरी जईसे एक आदमी जेला हमन मूर्तिकार कथन, ह माटी के मूर्ति बनाथे। ओकर ऊपर रंग लगाथे, कपड़ा पहिराथे, मुकुट धराथे, कान के बाली पहिराथे, घेंच म माला पिंधाथे, काजल, बिंदी सब लगाथे, जो ओला अपन रूप के अनुसार चाही। फिर लाईन के बार अपन के कुरिया म राख देथे।'' अचानक मोर धियान मोर बगल के बगल में एक झन मई लोग अऊ ओकर बगल

के बाबू पीला बईठे रहीस तेकर अंगत गीस। ओमन कुछु–कुछु टुडुफुसु गोठियात रहीन। बने नी सुनात रहीस। बने धियान देंय, त सुरू–सुरू म कम सुनाईस, बाद म फुट्टा सुनाईस। ओमन दुनों झन संत अंगत ल देख के गोठियात रहीन, जेकर से कोनो सक झन करे।

बाबू पिला – ''सुन।''

मई लोग – ''काए ?''

बाबू पिला – ''तोर आघू म सातवाँ लेडिस ल देख।''

मई लोग – ''हूँ।''

बाबू पिला – ''हरियर साड़ी पींधे हे।''

मई लोग – ''हाँ, पींधे हे, त का होगे ?''

बाबू पिला – ''ओकर जउनी बाखा ल देख, एक लड़की बईठे हे, लाली रंग के कुरती पींधे हे, ओला में पियार करथों।''

मई लोग – ''त में का करों ?''

बाबू पीला ह मई लोग के हाथ म पाँच सव के एक ठी नोट ल धरा दीस।

मई लोग – ''ए हा काए ?''

बाबू पिला – ''धर ले, पाँच सव ए।''

मई लोग – ''काबर ?''

बाबू पिला – ''जाय खानी आमापाली घुसे के पहिली सीट वाला एक ठन घर हे।''

मई लोग – ''होही, मोला का मालूम ?''

बाबू पिला – ''ऊँहा ओला लेके आबे।''

मई लोग – ''धर तोर पईसा ल, नी सकों में।''

बाबू पिला – ''पाँच सव के एक ठी अऊ नोट धर।''

में बीच–बीच म संत अंगत के भी गोठ ल सुनत रहें। संत कहत रहे – ''जेला एक मईनसे ह सब कुछ देथे अऊ बनाथे अपन के हाथ ले, ओकरे करा

हमन मोला नउकरी दे दे, पईसा दे दे, सुंदर घरवाली/घरवाला दे दे, बीमारी दूर कर दे अऊ आनी–बानी के कई ठन मांगथन। का एहर सही ए ? हमन ओकर करा मांगी, जे ह हमन ल बनाय हे। जे ह हमन ल बनाय हे, ओ ह सबके भीतर बिराजमान हे। बाहर कोनो मंदिर–मस्जिद–चर्च म नीए। अपन के भीतर हिरदय तक अपन के मन ल पहुँचावा, ओला अनुभव करा, जाना अऊ आनन्द ल पावा। ओ ह एक बक्सा म बंद हे। ओकर चाबी मोर करा हे। ज्ञान रूपी चाबी मोर से लेवा अऊ एक निस्चित पद्धति ले भजन करके ओ परमानंद ल अनुभव करा। फिर जीवन म सुख – ही – सुख हे, सांति – ही – सांति हे। हमन के मूर्खता देखा, जेहा हमन ल बनाय हे, पूरा दूनिया ल रचे हे। जल–थल–वनस्पति सब कुछ ल बनाय हे; ओई ला हमन ओकरेच बनाय चीज के नानकन हिस्सा ल देत हन। ओकरेच बनाय पूरा जगत के फूल–पउधा में ले कुछु पान–पतई, ओकरेच बनाय पूरा अनाज में ले एक मूठा चऊर, ओकरेच बनाय समंदर में ले एक लोटा पानी ओही ल ही देत हन। अइसने करे ल का ओ ह खुस हो जाही ? संत समाज मन सुना, तुँहरेच चीज ल, में तुमन ल ही दहाँ, त का तुमन खुस हो जाहा ?'' सब झन कहीन – ''नहा, नी होन।'' संत आगे कहीन – ''त हमन ओला अईसे चीज दी कि ओ ह खुस हो जाए। जइसने प्रकार ले कोनो लईका ह अपन के दई करा ले बिछड़ जाय रथे, फिर जेखानी ओ लईका ल कोनो ओकर दई करा मिला देथे, तेखानी दुनों दई अऊ लईका भारी खुस होथें। ओईसने, हमन जेकर अंस अन, ओकर ले जब मिलथन अर्थात् हमर मन कहा या आत्मा कहा, जेखानी ए ह घट के अंदर बिराजमान आनन्द के खजाना 'परमानन्द भगवान' से जुड़थे त भारी आनंद मिलथे। रोज भजन करके अर्थात् धियान करके एकर से रोज जुड़ा, फेर देखा, जिनगी म आनंद – ही – आनंद रही।'' बीच–बीच म, मोर तीर म बईठे रहीस तेकर तीर के बईठोईया मन के बात ह मोला सुनात रहीस।

मई लोग ह कहीस – ''का करना हे मोला, ठीक से बता अब।''

बाबू पिला – ''जाय खानी ओ लड़की ल किसनो करके, भुलवार के तोर संग लेगबे। फिर सीट वाला एक घर मिलही रद्दा म। फईका ह सोझे ढकलाय रही। ओला ढकेल के तुमन अंदर पेलिहा। गुंधवा डोर वाला एक ठी खटिया रही भीतर म। ओला बईठार के तें भीतर अंगत जाबे, जाय खानी कबे – ''बईठ, पानी वा पी ली, तहाँ ले जाबो, एहर मोर भई–भउजी के घर ए, भउजी हर कोला अंगत बुता करत होही या बरतन धोत होही बोर करा।'' तहाँ ले भीतर अंगत ले एक गिलास पानी लान के ओला देबे। एक गिलास पानी ह पहिलीच ल कीचन म माढ़हे रही। थोरकुस के गेय ल तें चल देबे। एक घण्टा बाद फेने आबे।''

मई लोग – ''हूँ, मोला फँसाबे मत लेकिन।''

बाबू पिला – ''तें सन्सो झिन कर। ऐ ले अऊ पाँच सव धर। कोई ल झिन कबे।''

एति संत ह कहत रहे – ''ए सब ह विसवास करे ल होथे। तुमन का करथा, जब भी कोनो मुसीबत आथे या कोनो काम पड़थे, अपन के ईस्ट देव ल सुरता करथा अऊ कथा कि हे भगवान! तें मोला ई परीछा म पास करा दे या डोली के झगड़ा ह खतम हो जाय या ओ ह मोर करा फँस जाय या मोर गँवाय फूली ह मिल जाय, गँवाय पँयरी ह मिल जाय या ओ रिस्ता ह खप जाय त में एक किलो लड्डू चढ़हाँहा। जे ह पूरा संसार बनाईसे, हमन ल बनाईसे; ओकर ऊपर विस्वास नी करना ए बल्कि कोई अंगत जाना रथे त हमन एक आटो करा जाके डारेक्ट ओमे बईठे रथे ते आदमी ल ए कथन कि चल हमन ल नया बस स्टेंड ले चल। ओकर करा हमन चल तोर ड्राइभिंग लाइसेंस दिखा नी कहन। तें आटो चलाय जानथस कि नीही, घलो नी पुछन। रेट पूछ के अपन जिनगी ल ओकर हवाले कर देथन। एक मईनसे जेला हमन कभू देखे नी रहन, ओकर बारे म कुछु जानत नी रहन, तेकर ऊपर ओतके विस्वास ? त मोला ए कहे बर हे कि हमन ल ओकर ऊपर विस्वास करे बर लागही, जेहा हमन ल बनाय हे अऊ हमर भीतर बिराजमान हे। हमन ल अपन के धियान ल जे ह बाहर अंगत भटकत हे, ओला कम–से–कम दिन म एक घँ भीतर अंगत ले जाके आनन्द के अनुभव करे बर हे।''

संत के गोठ ह सिरा गे। परसाद के पहिलीच थोरकुन होसियार आदमी मन भीड़ ले बचे खातिर चल देय रहीन, एमा ओई बगल के बगल के बाबू पिला ह घला हे। जे ह पईसा पाय रहीस, ती मईलोग ह परसाद खाके गीस। ओ बाबू पिला ह अपन के दु झन संग के संग म गीस। आमापाली डाहर के सीट वाला सुन्ना घर म ओमन ताला खोल के पेलीन। ए घर ह ओ बाबू पीला के भई–भउजी के घर रहे। ओमन गाँ गे रहीन, ताला लगा के कुची ल ई ल देय रहीन, हमन के आत ल घर ल देखबे, कके। भीतरी जाके हबर–हबर एक गिलास पानी म माते के पावडर मिला के हला के कीचन म राख दिन। ओकर बाद भीतर के कमरा म जाके तीनों झन चुपेचाप बईठ गीन अऊ फईका म नानकन भुलका रहे, ओमे ल एक झन ह बाहर परछी अंगत झांकत रहे। जईसने ओ बाबू पिला ह पईसा देके ओ मईलोग ल समझाय रहीस, ओ ह उसनेच करीस। टुरा के प्लान ह सक्सेस

होगे। एक दिन पीछू बारी तीर के झूंझाट म ओ लड़की ह बेहोस पड़े रहीस। त आंटी, में ए कहत ह कि ओ बाबू पिला अऊ मईलोग मन के मन म कतकी मईल भरे रहीसे, तभू ले ओमन एक पवितरा जगा म, मंदिर म घुसे सक दारीन अऊ जे मईलोगन म सिरिफ सरीर के मईल रथे, ओमन ल अइसने मंदिर सहीं पवितरा जगा म काबर घुसन नी देंय? पूजा–पाठ, धियान ए सब ह सरीर के काम नोहे, मन के, आत्मा के काम ए; तभू ले एमा सरीर ल काबा देखथें? मईनसे के सरीर म अपने आप कई ठो किरिया होथे, जईसे साँस चलथे अऊ सीओटू बाहर निकलथे। एहर हमेसा होत रथे अऊ सबो प्राणी म होथे, चाहे ओहर नर रहे या मादा। ए सीओटू हर मईनसे मन के काम के चीज नोहे। मईनसे मन सीओटू निकालथे कके कोई जगा जाय से एमन ला मना नीए। काबर कि ए मईनसे म पुरूस जात घलो सामिल हे। लेकिन सिरिफ मईलोग मन मे अपने आप अइसने घलो होथे, जेहर महीना म एक घँ होथे, अहू हर काम के चीज नोहे; त ए समे म मईलोग मन ल मंदिर जाय बर अऊ अइसने कई ठो काम करे बर काबर रोके जाथे। बनेच कस बंदिस ह मईलोग बर ही काबर हे ? तें देखे होबे, सउगंध फिलिम म अक्छय कुमार ह बलि देय ले हीरवईन ल रोक देथे। देखे हस कि नीही ?

नयना – ''लेकिन कुछ संस्था जइसे गायतरी परिवार के परिजन मन कुछु बने काम करत हें। एमन नर–नारी एक समान के नारा लगाथें। एला ओमन कुछु हद तक पूरा घलो करथें। हरिद्वार म मईलोग मन यग्य घलो कराथें। गायतरी परिजन मन गाँव–गाँव दीप यग्य कराथें, एला कई घँ मईलोग मन पूरा करथें।''

जेकलीन – ''हूँ... ओमन ले पूरा समाज ल कुछु सीखना चाही। लेकिन अभी भी बड़खा मंदिर रहे या छोटे मंदिर रहे, ऊँहा पुरूस पुजारी ही रथें। कोनो मंदिर म यदि मईलोग र भी गीन त ओ ह पुजारिन बन के नी रहे, पुजारी के दासी बन के रथे। बनेच सुधारे बर लागही, तभे नर–नारी एक समान के नारा सच हो पाही। कई घँ तो ए मईलोग मन के सोसण भी होथे। सोसण करोइया ओकरेच मंदिर या आसरम के बड़खा पुजारी/भगत/साधू हर ही होथे। निन्यानबे परसेंट मन परसाद समझ के सोसण ल मान लेथें। एक ले भी कम परसेंट मन अवाज उठाय के कोसिस करथें। ऊहू मन में जेकर साथ मीडिया वाला मन अऊ हमन–तुमन देथन, ओही ला नियाय मिल पाथे।''

नयना – ''नोनी, हमन पुरूस मन ले कतको आघू बड़ जाई, लेकिन पुरूस जात ह माने बर तइयार नीए। ओमन आज भी हमन ल अपन गोड़ के पनही समझथें। देखे होबे, जब सादी होथे तेखानी दूल्हा के पनही लुकाय के रस्म आथे आखिरी–आखिरी म। एमा पनही लुकाय के काम ल दूल्हन के बहन मन करथें। दूल्हन के बहन होय के नाम से एमन के घलो बड़ महत्व रथे अऊ बनेच सम्हरे रथे। तभू ले एमन दूल्हा के गोड़ म गिर के ओला मोजा पनही पिंधाथे। कतकी लजाय के बुता ए। अऊ तो अऊ, ए सब के हाँस–हाँस के फोटो–वीडियो घलो बनाथें।''

जेकलीन – ''ठीक कहे। ए सब ल सुरू करीन फिलिम वाला मन। कई घँ अइसे होथे कि देस म जो घटना होथे, ओला फिलिम म देखाथें अऊ जादा तो अइसे होथे कि फिलिम म जो दिखाए जाथे ओकर नकल युवा पीड़ही हर करथे। आंटी, तोला सुरता होही, 'हम आपके हँय कउन' फिलिम म पनही लुकाय के चलन ह सुरू होय रहीस। अब ओ ह कतकी बड़ गेहे। पाँच सव–हजार ले सुरू होय रहीसे अऊ अभी पाँच हजार हो गेहे। पहिली जमाना म पाँच हजार म पूरा सादी हो जाए, अभी ओतके कस रूपिया देके अपन के सारी मन करा पनही–मोजा ल पिंधत हें अऊ दुल्हन के बहिनी मन के इज्जत–मरजात ल सबके आघू म खीक करत हें। एला बंद करे बर लागही।''

नयना – ''लेकिन एला बंद करही कोन ? एकर ले सबला मजा आत जो हे। (थोरकुन गुने के बाद) एला तोर हमर ल ही बंद करे बर लागही। इस्कूल–इस्कूल जा–जा के सिक्छा देय बर लागही। हूँ, एहर ठीक रही।''

जेकलीन – ''अऊ इस्कूल–कालेज ह एला बंद करे खातिर चरचा–परिचरचा, भासण आदि आयोजित करही, त बनही। एकर बर में आफिसियल लेटर भी निकाल दुहुँ। एक लेटर फिल्म इण्डस्ट्री ल घलो लिखे बर लागही, जेमा ए लिखाय रही कि काकरो अपमान करे वाला सीन झन बनाए, बने अऊ नावा संस्कीरिती ल दिखाए। काबर कि आज के लइका–सियान सब्बो झन फिलिम के नकल करत हें अऊ ओकरे सहीं बन के उसने डाहर म चले के कोसिस करत हें। हीरो ह जोन इस्टाईल म बीड़ी–सिगरेट पीथे, उसनेच हमरो लईका मन पीए के कोसिस करथें। में तो ए भी लिखहूँ कि अपन हीरवईन के अन्ते भाग जाय म या छोड़ देय म या मर जाय म वियोग म हीरो ह दारू झन पीए, बल्कि एकर जगा म खुद ल बिजी रखे खातिर बड़हिया सहीं कुछु काम करे

या गीत गाए। अपन दुख या गुस्सा ल डांस करके खतम करे। दुखी होके सुसाइड करे वाला सीन तो मतीच रहे। मईनसे ह जइसने देखथे, उसने करथे। तेकरी सेंथी फिलिम वाला मन अच्छा दिखाए, जेला देख के मईनसे मन अच्छा करें, अच्छा गुने अऊ जिनगी ला अच्छा जीएं। बिना चिट्ठी लिखे काम नी चले, लिखेच बर लागही।''

गोठ–बात करत–करत एमन के गाड़ी ह घरघोड़ा के रेस्ट हाऊस कतक जोहान पहुँचीस, पता नी चलीस। ड्राइवर ह गाड़ी रोक के पीछू अंग ले किंदर के एसडीएम मेडम अंगत के कार के फईका ल खोलीस त एमन जानीन कि हमन पहुँच गेन। बड़े दरोगा नयना मेडम ह खुद फईका ल खोल के उतर गे। जय हिन्द बोल के 'फेने भेंट होही' कके पुलिस गाड़ी अंगत खड़ाप–खड़ाप करत चल दीस। पुलिस गाड़ी के ड्राइवर करा कुछु गोठ करे के पाछू, जइसे अचानक कुछु सुरता आगे, आईचदे फिर गे, ओकर बाद रेस्ट हाऊस अंगत ए दुनों झी गीन। ओमेर सांसद मेडम ल घेर के कुछ मईलोग मन ठाड़हें रहें, हाथ म फूल गुच्छा घलो धरे हें। थोरकुन के गेय ल एक छोटे बाल के मईलोग ह मेडम संग एक सेल्फी मारीस अऊ चलते बनीस। एकर मेडम करा कुछु काम नी रहीस।

❑❑❑

अब भेकलीन, रजनी अऊ दादू तीनों झन मिलके एक सामाजिक संस्था चलाथें। रजनी बनेच पड़हीस, लेकिन सरकारी नउकरी नी लगीस। फिर एक घँ प्राभेट संस्था के एक इण्टरव्यू म गीस। ऊँहा ओकर नउकरी तो पक्की होगे, लेकिन मालिक के गेस्ट हाऊस म हप्ता म दू घँ रथिया जाय बर लागही कहीन। ओ नउकरी ल रजनी एक दिन घलो नी करीस, लात मार के आगीस। फिर कभू प्राभेट नउकरी अंगत मन नी गीस। दादू ल नयना करा घुड़की मिले के बाद एहा पूरा संत बन गे, वैराग्य धारण कर लीस अऊ अब समाज सेवा म लग गीसे। भेकलीन ह जब ले अपन के पति सुंदर के मरे के समाचार पेपर म पड़हीसे तब ले घर ल बाहर कोति नई निकलत रहीस। एकर बेटी ह सरकारी अस्पताल म होईस। रजनी अऊ एकर बड़का भई दादू मन अस्पताल म एकर बड़ मदद करीन। जेकलीन पाँचमी तक संग म रके पड़हीस। ओकर बाद नवोदय म चयन होगे। स्नातक करे बर दिल्ली चल दिस फिर ऊहेंच कोचिंग करीस। जेकलीन के नवोदय म चयन होय के बादेच एकर दई भेकलीन हर घर ले निकले के चालू करीस, ऊहू ल रजनी अऊ दादू के बड़ कहई म। अब जगा–जगा कार्यकरम करके सिक्छित असिक्छित सबो परकार के मईनसे मन ल सिक्छा देथें, समझाथें,

गलत संस्कीरिती ल चिन्हारी कराके दूर कराथें अऊ बने कस नावा संस्कीरिति के डाहर म चले बर कहत हें।

भेकलीन के बेटी जेकलीन हर आईएएस बन गेहे। ओहा अपन करम ल करत हे, एहा अपन करम ल। ओकर नउकरी अऊ नाम के फायदा एहर कभू नी उठाईस। अपन के भासण म जेकलीन के नाम ल घलो नी धरे। अपन बलबूता म समाज सेवा ल एहर करत हे। एकर संग देथें, रजनी अऊ दादू। भेकलीन ह संस्था के अध्यक्छ हे। रजनी ह उपाध्यक्छ अऊ दादू ह महासचिव। कोसाध्यक्छ कोनो नीए। संस्था म पईसा के कोनो काम नीए। जेति बुराई दिकथे, ओती अपन खरचा म जाथें, अपन खरचा म आथें। जेकलीन ह कार ले देहे, बीच–बीच म पईसा भेज देथे। दादू ह कार ल चलाथे। गाँव–गाँव जाके गुँड़ी जइसे मांझा म बईठ के मईलोग अऊ बाबू पिला मन करा बात करथें, समझाथें। रथिया हो जाय म ओ गाँव के बने निकता आदमी ह खाना खिलाथे। खाना म एमन सादा भात, दाल अऊ सलाद खाथें। सब्जी नी खाएं।

एमन के समाज सेवा के काम हर बनेच वायरल होगे हे। तेकर सेंथी अब एमन मंचीय कार्यकरम करत हें। पुलिस बेवस्था घलो रथे अब। अधिकारी मन जान गिन हे कि भेकलीन के बेटी ह आईएएस ए। छेतरा म एमन के अब बड़ सम्मान हे। कार्यकरम बर एमन एको रूपिया नी लेंय, अहू हर एमन के सम्मान के परमुख कारन ए।

रजभार तहसील के जगुरम गाँव म अमरईया चउक करा नहर पार के तीर म एक ठी कार्यकरम होत रहे। दूसरईया दिन रहे। संझाती चार बजती भेकलीन, रजनी अऊ दादू मंच म बईठे रहें। घनस्याम ह मंच संचालन करत रहे। रजनी अऊ दादू दुनों झन गोठिया दार रहीन।

अब भेकलीन के पारी रहे। भेकलीन सांत, सरल भासा म बोले लागीस – ''बहिनी मन, भईया मन, लईका मन, सियान मन, सबले पहिली तो में बुद्ध, सावितरी, अम्बेडकर ल जोहार करत हों, तेकर पाछू आप सब करा ए गोहार करत हों कि सब झन पहिली सिक्छीत बना। एक कँउरा कम खावा, लेकिन अपन के लईका ल जरूर पढ़हावा। बाहर कति ईंटा बनाय ब या आने कुछु बुता–काम ब जायेच बर लाग गीस त अपन के लईका ल ओकर बबा–बई मन करा पढ़हे बर छोड़ के जावा, लईका के जिनगी ल खराब झन करा। में कथों, ईच करा बनेच बुता खुल गेहे, पावर प्लांट खुल गेहे, बाहर जाय के जरूरत

नीए। खुद सिक्छीत बना, लईका ल घलो सिक्छीत बनावा। फेर अपन के इतिहास ल पड़हा। राजनीति पड़हा, भारत के संविधान ल पड़हा। गुना, बिचार करा, तर्क करा। जे चीज गलत हे, तेकर विरोध करा; अइसे नीही कि लाठी, ठेंगा धर के कूद देवा। संविधान के कोन धारा, अनुच्छेद के अनुसार तुँहर संग गलत होथे, ओला लेटर म लिखा, फिर ओला कई झन मिलके साहब मन ल देवा, पावती लेवा। दिल्ली घलो कागज भेजा। कई घँ कागज भेजा। कई घँ कागज भेजे के बाद घलो काम नी होही त पाछू पड़ जावा, कईसे काम नी होही ? कईसे नियाय नी मिलही ? अहिंसा के डाहर म चले ल नियाय मिलबेच करही। नी मिले कस लागही, त भूख हड़ताल करा। आमरण अनसन करा। ए तो होगे, नियाय मांगे के तरीका। दूसर ए कि अपन के जीए के तरीका ल घलो सुधारा। जरूरी नीए कि जे परम्परा चलत आत हे बनेच पहिली ले, ओला अभी भी चलाई। ओमे के कुछ हर आज बंद करे के लाईक घलो होगे होही, कुछ हर ठीक होही। त जेहा बदले या बंद करे के लाईक होही, तेला बंद घला करा अऊ यदि कुछ नावा परम्परा चालू करे के लाईक होही, त चालू घला करा। मिलजुल के सोच–बिचार कर लेवा सब झन। एक ठी परम्परा हे – मरे के बाद दसकर्म करे के। पहिली का करें, चार–पाँच सव आदमी मन ल सकेल के, कभू–कभू हजार–दू–हजार घलो हो जाँए; त सब ल सकेल के गदबद खाना खाँए, आनि–बानि के मीठा घलो खाँए। लेकिन मोरेच कहे म ओ ह कुछु कम होय हे। दु ठन बरा खा के सरधांजलि देके अपन–अपन घर चल देथें अब। खाना के झमेला अब घर गोंसिया ल नी पड़त हे। लेकिन ए ह अभी सबो जगा चालू नी हो पाईसे। मोला सुरता आत हे, एक गाँव हे, फूलबंध। ऊँहा फिरतीन बाई ह खतम होगे। ओकर बेटा नीए। एके झन बेटी ए, ऊहु ह अपन के घरवाला ल छोड़ के अपन दाई करा रहत रहीसे। ददा ह पहिलीच ल खतम होगे रहीसे, ओ ह बीड़ी बनाय। त ओकर दाई के मरे के बाद काम करे के समे आईस त ओ ह काम म एकक झी खवाय सकहाँ कहीस। गाँ के सियनहा मन 'तें कभू नी खवाय हस, तोला झारीझार खवायेच बर लागही' कहीन। बेचारी का करे, समाज के डर म गरीबी हालत म अऊ दुखिया हालत म सब झन ल खवाय बर लागीस। समाज ल अईसने कट्टर नी होना चाही। समाज ह यदि काकरो मदद नी करत हे, नी रहे म जरूरत पड़े ल फीरी म पईसा नी चलात हे, कोकरो अड़हिया नी चलात हे, भूखन मरे म पेट नी भरत हे; त ए समाज ह कोनो ल तंग घलो झन करे अऊ समाज के नाम म एकर मुखिया ह अपन जेब ल भरे बर घलो कोनो ल तंग झन करे। दुख के समे म

तो बिल्कुल भी झन सताय। अऊ ए मरे म खवाय वाला सिस्टम हर तो पूरा गलत ए। मिरतु भोज ल तो बंद होना ही चाही, संग म एमे कुछु नावा परम्परा जोड़े के हिसाब रहीसे मोर, सबके मन आही त। में कहत रहें, मरे के बाद जे आदमी, मईलोग मन आथें, दुख मना के जाथे। ओमन जेकर दुख मनाथें, ओला तो देख नी पाँय, ओकर करा गोठ नी कर पाँय, सिरिफ फोटो ल देख पाथें। मरे रथे तहु हर नी जान पाय कि कोन–कोन आईस, कोन हाँसिस, कोन रोईस। मरे के दिन घलो कोन–कोन ओकर छेधा दरसन करथे, कोन–कोन सव यातरा म सामिल होथें; ऊहू ल ओ ह नी जान पाय। काकरो करा ओ ह छेधा गोठ नी कर पाय, अपन के मन के बात ल नी कर पाय। काबर कि ओ ह तो मर जाय रथे। तेकर सेंथी में ये कहत रहें कि जेखानी कोनो आदमी या मईलोग के समे ह कम बाँचे रथे, साँस के डोर ह टुटत रथे या कुछु दिन ही ओकर जिनगी के बाँचे रथे; जेखानी डाक्टर ह सुना देथे कि एला जे खाही ओ खवावा; ओखानी ओ ह थोर–थोर गोठ–बात करत रथे, मईनसे मन ल घलो थोर–थोर चिन दारत रथे, ओकर करा एको–दू महीना समे रथे; अइसने समे म ''आखिरी भेंट'' के नाम से एक ठी कार्यकरम होय, जेमा सब कोई आके ओकर करा भेंट करें, गोठ करें, ओकर बर खाय के लाने, गिप्ट घलो लाने। घर गोंसिया ह अपन के सक्ती अनुसार पहुना मन ल खाना खवाय। हँसी–खुसी के माहोल रहे, गाना–बजाना घलो चले। सब जान–पहचान करा सउक भर गोठियाय। मरे के पहिली एइसन झन रहे कि में ओला नी देख पाँय या ओकर करा गोठ नी कर पाँय। अच्छा, एक ठी अऊ बात हे, सादी बर बिहा होथे, त ओमे अईसे–अईसे आदमी मन ल बुलाथें या रिसेप्सन म अईसे–अईसे आदमी मन आथें, जेमन ल पहिली बार घर गोंसिया हर देखथे या जेमन पहिली बार ओ घर म आथें। ओमे के कई झन मन ल तुँहर घर के सुख–दुख ले कोनो मतलब नी रहे। त अईसे आदमी मन ल सुख म घलो छाती–बुका के आत ल बोजवाय के कोनो जरूरत नीए। जेमन तुँहर तरक्की ल देख के जलथें अऊ दुख परे ल मनेमन खुस होथें, ओमन ल दुख के समे रहे या खुसी के समे रहे, पालथी मार के खवाय के जरूरत नीए, बफर सिस्टम म ठाड़ कराके खवाय के तो बिल्कुल भी जरूरत नीए। बेकार के भीड़, सोर सराबा अऊ सराब ले बचा। हाँ, जेमन तुँहर सही आदमी ए, सुख–दुख ल अपन मान के चलथें, सुख–दुख म संग देथें, ओमन ल बिल्कुल बुलाहा, झन भुलाहा।

लईका मन के छोड़ सबो झन मन समझ गीन। ताली बजा के भेकलीन ल धनबाद दिन। ओ दिन, ए तीनों झन घनस्याम घर खाईन। दाल–भात–सलाद।

एहर अभी पी–एच.डी. करत हे। एमन के गोठ ल बने पतियाईस। ओकरे खातिर एमन ल खाना खवाईस। जेखानी एमन बिदा लीन, घनस्याम ह कहीस – ''मोर गोड़ म महुँ ह खड़ा हो जावाँ, तहाँ ले महु ह तुईमन सहीं समाज ल जगाहाँ।''

❑❑❑

तीन महीना के बाद जेकलीन के ट्रांस्फर रईपुर हो जाथे। अब एहर गृह मंतरालय में बड़े अधिकारी हे। ओती ले आईपीएस सीरीनयना भी रईपुर आ गे रहे। आईएएस जेकलीन ह सबले पहिली सामान्य परसासन विभाग अऊ संस्कीरिती मंतरालय ले समन्वय स्थापित करके कुछु बेकार संस्कीरिती ल खतम करे अऊ कुछु नावा बड़हिया संस्कीरिती ल अपनाय बर लेटर सबो विभागाध्यक्छ मन ल भेजवाईस। दुनों अधिकारी के मिल–भेंट एक ठी कार्यकरम म होथे। जेकलीन के रईपुर आय तीनेच दिन होय रथे कि एक दिन रथिया एकर दई भेकलीन के फोन आथे। फोन म ओहा कथे कि ''रजनी के तबियत बनेच खराब हे। डाक्टर मन अस्पताल ले छुट्टी दे दिन हें। एला घर ले आय हन। एहर कुछ दिन के ही पहुना हे। 'आखिरी भेंट' के कार्यकरम परनदिन रखे गेहे। तें आ जाबे।'' एक साँस म सब बात ल क दारीस। जेकलीन ह ठीक हे दई बोलीस। ओही कार्यकरम म रजनी के सबो रिस्तादार मन आए रहीन। कुछु अधिकारी मन अऊ कुछु समाजिक कार्यकरता मन घलो आए रहीन। ई कार्यकरम म दिल्ली कोचिंग के बाद पहिली बार सीरीनयना अऊ जेकलीन के भेंट होईस। घंटा भर एमन कई ठी विसय म बात करीन। सबो पहुना मन रजनी से भेंट करीन। कुछ मन गिप्ट घलो लाय रहीन। बनेच झिन मन रजनी संग फोटो खिंचाईन। खाना ल सब झी खाईन। मेडियम अवाज म गाना भी चलत रहीस। सबो पहुना मन खुस रहीन। रजनी घलो खुस रहीस। अपन के जूना सुरता ल रजनी ह सुरता कर–कर के संग–जहुँरिया मन करा गोठियाईस–बतियाईस। रजनी ह हाँसत रहीस, ती बतर म एक झन बनेच ऊँच के थोरकुन करिया आदमी कुर्ता–पइजामा पींध के एकर अंगत सरलग आईस, ए ह अपन हाथ म फूल के गुलदस्ता धरे रहे। आत ही गुलदस्ता ल रजनी ल देके कहीस – ''हलो, गुड मार्निंग रजनी जी। कइसन तें आखिरी भेंट कर देय, तोला अभी बनेच समाज सुधार करे बर हे।'' रजनी गोठियाय लागीस – ''नहीं आर्के सर, अब चोला ह संग नी देय कहुँक लागत हे। ओकरे बर में सोचें कि अब अपन आदमी मन ले एक घँ छेधउला भेंट कर लेथों, का पता कब परान निकल जाही। पाँ परत हों, आदरणीय सर।'' आर्के सर ह ओ आदमी ल का आसीरबाद देय, जेहा ए दुनिया ल ही छोड़ के जाय के

तययारी करत हे। तभू ले बनेच कन कुछु–कुछु गोठियाईस। रजनी ह कुछु सुन नी पाईस। सर के पाँ परे के बाद रजनी के मन ह अन्ते अंगत चल दीस। एला पूरा दृस्य दिखे लागीस। जेखानी रजनी अऊ भेकलीन पी. जी. के स्टुडेंट रहीन, ई आर्के सर ह एक ठन सेमिनार म ए दुनों झी ल दिल्ली लेगे रहे। सर ह नव बछर के ही एमन ले बड़खा रहीसे, तभू ले ओकर मन म कोनो पाप नी रहीस। सुंदर तो दुनोच झन रहीन, एक हेमा मालिनी सहीं, त दूसर सीरी देवी के बरोबर। रजनी के मूड़ के चूँदी ह कनिहा ले झूलत रहे, भेकलीन के चूँदी ह हिप्पी कट रहे। अभी उल्टा होगे हे। भेकलीन के चूँदी ह कनिहा ले झूलत हे, रजनी के चूँदी ह हिप्पी कट हे। त तीनों झन रथिया के ट्रेन म गीन। ट्रेन म रथिया तीनों पराठा–सब्जी खाय के बाद, सर ह कहत जात हे, एमन धियान लगा के सुनत जात हें। ''रजनी अऊ भेकली, मोला सरल नाँव बने लागथे। तोर नाँव भेकलीन ए, सब तोला भकली कथें, लेकिन में तोला भेकली कहूँ। तुमन ल नींद तो नी लागत हे।'' दुनों झी एक संग कहीन – ''नहा।'' आर्के सर – ''तुमन के कालेज म एदारी दूसरा साल ए। अभी बनेच कुछु सीखे बर हे। मोर गोठ ल धियान देके सुना – ''तुमन जानत ह कि में कालेज म हिन्दी के प्रोफेसर ओं। हमन साल भर कालेज म कुछु–न–कुछु कार्यकरम करत रथन। सबो दिवस ल मनाय के जिम्मा मोर ऊपर रथे। दू अक्टूबर के गांधी जयंती मनाथन, भासड़ होथे, सत्य–अहिंसा के रद्दा म चले के कसम खाथन, भण्डारा होथे, घर चल देथन। चउदा नवम्बर के बाल दिवस आथे, जवाहर लाल नेहरू के जीवन परिचय ल जानथन, ओकर नारा ल अपनाय के कसम खाथन, लईका मन ल चाकलेट, बूंदी खवा के बिदा कर देथन। अइसने विग्यान दिवस आथे, अम्बेडकर जयंती आथे, निराला जयंती आथे, जयसंकर प्रसाद जयंती आथे, प्रेमचंद जयंती आथे। जे–जे जयंती आथे, ओ सब के खूबी ल गुनथन अऊ ओकर बने–बने बात ल अपनाय के किरिया खाथन अऊ घर चल देथन। चउदा सितम्बर के हिन्दी दिवस आथे, घर म, बाहर म, आफिस म, संगी साथी म सबो कोती हिन्दी बोलबो कके किरिया करथन। नवम्बर आथे, अठाईस तारीक। छत्तीसगढ़ही भासा दिवस। हमर राज्य के बोली ल अपनाबो कके फेने किरिया खाथन, आत–जात रेल गाड़ी म घलो हमन हमर बोली म गोठियाबो कथन। त मोर कहना ए हे कि कोनो नेता के, महापुरूस के या विद्वान–वेग्यानिक–लेखक के जयंती जरूर मनाबो, लेकिन ओकर जईसे बने के कोसिस झिन करी, आने के तुलना अपन से झन करी। ओ हर ओ रहीस, हमन हम रही। हमन काकरो डुप्लीकेट नोहन, फोटोकापी नोहन। हमर सारीरिक–मानसिक–दिमागी बनावट अलग हे। हमर आँखि के पुतली के

बनावट अलग हे। हमर हाथ के अंगठा अऊ अंगठी के चिन्हा आने हे। त हमन ओकर जईसे कइसे बनबो। हमन अपन के नाम ल जग म चिन्हारी करी। तें भेकली बन के दिखा, तें रजनी बन के दिखा। तुमन ल गांधी, नेहरू, अम्बेडकर, सुभासचन्द्र बोस बने बर नीए। राम, सीता, रहीम, तुलसीदास, कबीर, जायसी, विवेकानंद घलो नी बने बर ए। तुमन भेड़–बकरी नोहा, मईनसे अ मईनसे, अ यूनिक परसन। अवोइया पीड़ही ह अपन के लोग–लईका मन ल तुमन के नाँव धर के सही रद्दा दिखाही। तुमन अईसे बना कि तुमन के उदाहरण देके अवोइया पीड़ही ह अपन के लईका मन ल सिक्छा देय। हाँ, एक बात जरूर हे कि हर आदमी म कुछु गुन होथे, कुछु दोस होथे। जेकर जयंती मनाथन, ऊहू मन म घलो दोस हे। हमन ओमन के गुन ल धरी, दोस ल छोड़ दी। ओ जईसे खाथे, जईसे चलथे, जईसे अंगठी घुमा के गुनथे, जईसे मुस्कुराथे, जईसे सिगरेट पीथे, जईसे चसमा पहनथे, ओला अपनाय के जरूरत नीए। ए सब ह ओमन के इस्टाईल ए। हमन अपन इस्टाईल खुद बनई अपन के छमता अनुसार। कई बार हमन देखथन कि हमर पसंदीदा हीरो या पुलिस अधिकारी ह कुछ गुत्थी सुलझाय के समे सिगरेट पीथे। एहर ओकर दुर्गुन ए। एला हमन ल नी अपनाय बर हे। कई घँ हमर पसंद के हीरो ल ओकर प्रेमिका ह छोड़ के भाग जाथे, त ओकर वियोग म हीरो ह सराब पीए के चालू कर देथे। ए ह हीरो कु दुर्गुन ए। एला नी अपनाय बर हे। अइसने, अपन के पसंद के हीरोईन ल ओकर प्रेमी ह छोड़ देथे, त हीरोईन ह डोंगरी अंगत जाके खालहे कूदके जान देय के कोसिस करथे, एहर भी हीरोईन के दुर्गुन ए, एला भी हमन ल नी अपनाय बर हे। हमन ल सिरिफ गुन ल धरे बर हे। हमन ए कोसिस करी कि हमन कोनो एक डाहर ल धरी अऊ ओमा चल के विख्यात हो जई, अपन नाँव ल उजागर करके प्रसिध हो जई। कई ठन डोंगा म पाँ ल झन राखी, डोंगा ह डगमगा जाही। एक ठी काम ल ढंग से करी। ठीक हे नोनी मन। ए जरूरी नीए कि हमन बड़खा आदमी के ही गुन ल धरी, हमर आस–पास के सधारण आदमी, गरीभा आदमी, कोनो खीक आदमी, कोनो प्राणी, जीव–जन्तु, छोटे कीरा–मकोरा, कोई भी रहे ओ, यदि ओकर म कुछु गुन दिखत हे, त ओला हमन ल तुरंत केच करना हे। ठीक हे।''
ठीक ओई खानी टीटी आईस, टिकिट देख के मुस्कुरा के चल दीस। मुस्कुराय के मतलब ल रजनी ह आज तक नी समझ पाईस। आगे आर्के सर ह पानी पी के फेर कहे लागीस। सायद सर ह तईहा के कुटी वाला गुरू–चेला वाला परम्परा के चेला मन ल ओ दिन पाय रहीस। सर ह कहत जात हे– ''पहिली खुद ल बना। पोट सिक्छीत बन, धनवान बन, अपन के व्यक्तित्व ल बने मांज, गुनी बन।

एकर बाद समाज ह, राज्य ह तोला ऊपर म अपने आप बईठा दीही। तोला कुछु करे बर नी लागे। सधारण के कोनो पूछन्ता नीए। ओकरे बर नोनी हो, पहिली तुमन खुद के तरक्की करा। जेखानी तुमन के पोट नाम होय बर लागही, तेखानी समाज ह खुद तुमन करा आही अऊ कही कि तें हमन के अघवा बन, हमन ल डाहर दिखा; तुमन ल समाज करा जाय बर नी लागे। जेकर नाम, तेकर दाम, जेकर करा दाम, ओकरे करथें सलाम।'' सर ह खाना खाके चल दीस। कुछ समे बाद भेकलीन ह आके देखथे कि रजनी के आँखि ले आँसू गिरत रहे। भेकलीन पूछथे – ''का होगे रजनी ?'' रजनी कथे – ''कुछु नीही बहिनी, आर्के सर ल देखें, त ओ दिल्ली जात रहेन तेखानी के बात ह सुरता आगे रहीस।'' भेकलीन घलो रजनी के तीर म जोर से साँस लेके छोड़के बईठ गे। भेकलीन कहे लागीस – ''सर का जबरदस्त गियान देय रहीसे ओ दिन, हमर लाईफ हर ही बदल गे। आज जे हमर स्थिति हे, सर के परसाद ए।'' जूना दिन म दुनों झन कुछु समे तक खोय रहीन, ओकर बाद एक संग खाना खाईन।

तीन महीना के गेय ल रजनी ह सतलोक सिधार गे। दसकर्म म जादा आदमी ल नी बुलाय रहीन। जेमन आय रहीन ओमन बर फूल अऊ दुदी ठी बरा के बेवस्था करे गे रहीस। फूल सरधांजलि देय बर, बरा खाय बर। फूल चड़हाय के पाछू अऊ बरा बाँटे के पहिली दादू ह ओमेर जुरे रहीन तेमन ल कुछु कहीस – ''आज मोर छोटे बहिनी के काम होथे। अपन जिनगी म ओकर जे इच्छा रहीस, सब ल पूरा कर दारीस। मइनसे मन ल जे समझाना रहीस, ओ सब ल ओ ह भकली अऊ मोर संग म घुम–घुम के समझा दारीस। जाय के पहिली सब झन ल 'आखिरी भेंट' घलो कर दारीस। अपन के जीवन ल सफल बना दारीस। जीवन, ए मइनसे जीवन का होथे ? 'मँय' का होथे ? एहर पाँच हिस्सा ले मिलके बने हे। पहिली, रूप अरथात् ए सरीर। दूसरा, वेदना अरथात् अनुभूति, एमा सबो प्रकार के अनुभव आथे, दुख के अनुभव, सुख के अनुभव या कुछु अनुभव नी होय ऊहू हर एमा सामिल हे। तीसरा हे– संग्या, एहा रंग, अवाज या कोनो ल चिन्हे–पहचाने से संबंधित ए। चउथा– संस्कार, एकर मतलब मइनसे के जून्ना आदत होथे। छेधा म पाँचवा हे– विग्यान, एकर अर्थ चेतना या बोध होथे। ई पाँचों ल स्कंध कथें। ई पाँचों ले मिलके मइनसे के जीवन ह चलत हे। मइनसे के जीवन ह ई पाँचों स्कंध के अस्थायी जोड़ ए, जेहा हर पल बदलत रथे। ए जो बदलत हे या नावा पईदा होत हे, ए सब ह बिना कारण के नी होय। कारण एकेठी नी होय। एक ठन मुख्य कारण होथे, जेला हेतु कथें। एकर कुछु सहायक

कारण या परिस्थिति भी होथे, एमन ल प्रत्यय कथें। सहायक कारण मन जब मुख्य कारण से मिलथे, तभे परिणाम या फल मिलथे। जईसे कोनो बीज हे, ए ह मुख्य कारण ए अर्थात् हेतु ए। बाहर के माटी–पानी–हवा ह सहायक कारण ए, जेला प्रत्यय कथें। जब बीज ह ए सहायक कारण मन ले मिलथे, तभे एक बृक्छ बनथे। एक उदाहरण अऊ, जईसे क्रोध हमन ल कब होथे ? हमन के भीतर म मुख्य कारण के रूप म 'हमर आदत' या 'गहरा असुरक्छा के विचार' पहिली ले रथे। जब ए हेतु ह सहायक कारण ले मिलथे अरथात् काकरो 'कटु वचन' ल सुनथन, तभे हमन ल क्रोध आथे। बिना प्रत्यय अरथात् सहायक कारण के क्रोध पईदा नी हो सके। जून्ना आदत ह बीज के समान ए अऊ बाहर के कोनो मइनसे के कड़वा बोली ह माटी–हवा–पानी के समान ए, दुनों के मिले ल ही बृक्छ रूपी क्रोध पईदा होथे। एक भी सहायक कारण ल अलग कर देय ल परिणाम नी मिले। एक कारण ह दूसर परिणाम ल जनम देथे अऊ अगले ही पल ए परिणाम ह एक नावा कारण बन जाथे। वास्तव म, जो जीवन हे, ओ ह ई कारण अऊ परिणाम के एक सिरिंखला के नाँव ए। यदि कोई पथरा ह पहाड़ ऊपर ले गिरत हे, त उतारू के कारण ओ ह खालहे गिरत जाथे, ओकर म डाहर बदले के कोनो छमता नी रहे, काबर कि ओ ह निर्जीव ए। लेकिन मइनसे म चेतना रथे, जेमें देखे के छमता हे, जागरूकता के छमता हे। ओकरे सेंथी ओ ह कुछु नया कर सकत हे। कोई नदी हे, एला पीछू अंगत के पानी ह ढकेलत रथे, तभे आघू अंगत के पानी ह आघू अंगत जाथे, ए ह ओई दिसा म जाथे, जेती पहिली के पानी ह जात रथे। लेकिन ओकर धार के मांझा म यदि बड़खा पथरा राख देय ल नदी के धार के दिसा ह बदल जाथे। पाछू अंगत के पानी ह कारण ए या अतीत ए, मांझा के पथरा ह जागरूकता ए, जेकर चलते परिणाम ह बदल जाथे। यदि कारण ह अग्यान से पईदा होथे त ओकर फल दुख होथे। लेकिन जे समे अग्यान पईदा होथे, ओई समे जागरूकता आगे, त परिणाम ह नावा दिसा म मुड़ जाथे। परिणाम या जो फल मिलथे तेकर करा लड़े ल कुछु नी होय, कारण ल देखे के छमता अरथात् जागरूकता पईदा करा, कारण ल देखा अऊ बदला, फल अपने आप बदल जाही। लगाव के कारण यदि दुख मिलत हे त दुख से लड़े के बजाय अरथात् परिणाम करा लड़े के बजाय मुख्य कारण लगाव ल खतम करा, काबर कि इहर ही मुख्य कारण ए या हेतु ए। हमर बहिनी ह मुख्य कारण ल देखीस, जागरूकता के साथ देखीस; तभे ए ह सुखद परिणाम ल पाईस, दुख नी पाईस। सब ल भेंट करके संतोस रूपी धन पाके सतलोक ल गीस।'' एला सुने के बाद बड़खा मन जादा जोर से ताली बजाईन, छोटे लईका मन बड़खा मन ल देख के

घलो ताली बजाईन, लेकिन लईका मन के ताली के अवाज नी आईस, एमन नी समझ पाईन, एमन देखा–सीखा ताली बजाईन।

कुछु ताम–झाम नी रहीस। बरा ल बाँट दीन। काम ह होगे। संझा के होत ल घरउधा पहुना मन रूके रहीन। रथिया बेरा सुन्ना, जेमन पहिली ल रहीन, ओईच मन रहीन। लेकिन रजनी ह तीन महीना पहिली सबो झन ल भेंट दारे रहीस, आखिरी इच्छा ल पूरा कर दारे रहीस, तेकरी सेथी ए बात हर पक्का ए कि ओकर आत्मा ह सरीर के नस्ट होय के बाद घलो खुस होही। दसकर्म के दिन नयना के पूरा परिवार, भेकलीन के पूरा परिवार दादू के घर म सांझ तक रूके रहीन। सांत वातावरण रहीस। कोई हल्ला–गुल्ला नी। कोई खरचा–बरचा नी। दादू ल दसकर्म बर एक रूपिया के कर्जा लेय बर नी लागीस। सब पहुना मन पहिलीच ल रजनी के मनमाफिक खा–पी दारे रहीन। जादा निजी पहुना मन ल ही अभी बुलाय गे रहीस। ऊहु मन जल्दी चल दिन। बिना ताम–झाम के, बिना खरचा के दसकर्म ल देखके जेकलीन अऊ सीरीनयना खुस होगे। सीरीनयना ल सुरता आगे, एक घँ ओ ह छत्तीसगढ़ के कोनो मंतरी के घर गेय रहीस। ऊँहा काकरो काम होत रहीस। बड़ अकन पहुना–पाही जुरे रहीन। भात खायके बेरा म बरा पोरसीन। संग म जलेबी घलो एकक–ठी पोरसत रहीन। सुरू–सुरू म एकक ठी सईघो जलेबी दीन, पाछू आधा–आधा कुटी जलेबी बाँटे बर लाग गे। ''खइरखा म दही बाँटे, आधा फिरीन बिन चाँटे।'' ''खइरखा म पँइरा गादा घलो नी पूरे।'' काम म हजार–बजार मइनसे मन ल जोर दारथें, बेवस्था हर बिगड़ जाथे। कई झन मइनसे मन खाय के बेरा म भात–साग के गादा के तीर म बईठथें, ताकि जल्दी मिल जाय। कई घँ तो अईसे घलो होथे कि खीर बँटोईया ल आत देखके कोनो–कोनो मन पहिली के परोसाय खीर ल सुरक्का मार के एके घँ म पी देथें। कई झन मन सुरूच म एके घँ बनेच भात–साग ल झोंका लेथे। एमन बनेच अनुभवी रथें, एमन जानत रथें कि परोसना के आत ल भात–साग ह सिरा जाही, अईसने होथे घलो कि कई झन बर साग ह खंग जाथे या भात ह खंग जाथे। घर गोंसिया ह कहत रथे कि थोरकुन बईठा, अन्हा ह गरम हे, ओईचदे भात ह चुर जाही, पताल ल सुवारी मन फतकाथें, आत होही। जतकी झन काम म आय रथें ओकर पंचानबे परसेंट मइनसे मन मरोईया के पत्नी करा या पति करा या बाप करा या बेटा करा भेंट घलो नी करें। एमन ल काम घर के दुख ले कोनो लेना–देना नी रहे, छाती के आत ल ठूँस–ठूँस के पेट भरे ले ही मतलब रथे, पेट भरीस तहाँ ले अटरत अपन के घर चल देथें। जात–जात ए

जरूर कथें कि साग ल बड़हिया बनाय रहीन जी, चोक्खा रहीस, मस्त लागीस, कोई कथे– ''में तो खीर ल दू गिलास पीएँ, मस्त लबोदहा रहीस, काजू–बदाम घलो पाँय।'' कोई कथे– ''मोर अंगत पताल झोर ह तो आबे नी करीस।'' सिरिफ पाँच परसेंट या एकर ले भी कम मइनसे मन ही दुखियारी या दुखियारा के संग भेंट होके ओकर दुख ल बाँटथे। ए तो आज बहुत अच्छा होईसे कि ओई पाँच परसेंट मन ही आय हें अऊ बेकार के खवोईया सगा के भीड़ ह खतम होगे। खाना–पीना के झमेला घलो नीए, अहू अच्छा होईस। सीरीनयना ल एक बात अऊ सुरता आगे– जेखानी ए अऊ जेकलीन दिल्ली म कोचिंग करत रहीन, बलदेव सर ह जून्ना–जून्ना बात ल कोचिंग के माहोल हल्का करे बर बताय अऊ हँसवाय। सर ह एक घँ कहे रहीस कि ओ ह एक गाँव के दसकरम म गेय रहीस। ओकर बगल म नव साल के एक झी लईका ह खाय बर बईठे रहीस। घर गोंसिया घर के एक झी तेरा साल के लईका ह बरा पोरसत रहीस। नव साल के लईका ल ओ ह दू ठी बरा दीस, सबो झन ल दुदी ठन ही बरा देत रहीस। नव साल के लईका ह अऊ दू ठी बरा मांगीस। तेरा साल के लईका ह भाग बे, नी मिले कके आघू अंगत जाय बर लागीस। फिर नव साल के ह कहीस– ''झन दे न, मोर बबा मरही त तोला महुँ नी दों। हमन तो रसगुल्ला घलो बनाबो, ऊहू ल नी दों।'' अईसने ही दुख के बेरा म घलो कम्पीटिसन होत हे। पहिली बईठ के खाँय, अब खड़ा होके खात हें, एला बफर सिस्टम कथें। लकिन सीरीनयना ह रजनी के काम म बदलाव देखीस, एला बड़ सुघ्घर लागीस। भेकलीन, दादू अऊ रजनी के बनाय संस्था 'भकली–जकली' हर जे कथे, तेला करके दिखाथे।''

सुनयना ह गेरू रंग के ड्रेस म रजनी के दसकरम म सामिल होय रहीस। नम्मी म दु घँ फेल होय के बाद एहा कासी चल दीस। थोरकुन दिन ठोकर खा–खा के विस्वनाथ मंदिर म रथिया बिताय ब पड़ गीस एला। फिर एक दिन एक ठन चबूतरा म जगा मिलगे। ऊँहा श्रीमदभागभत कथा कहे के अऊ भजन गाय के सिक्छा लीस। कपड़ा के रंग बदल गे, बोल–चाल, चाल–ढाल सबो बदल गे। सात साल सीखे के बाद एहा कई–कई लाख रूपिया म कथा कहे बर बाहर जाय के सुरू कर दीस। अब एकर नाम ह सीरी सीरी 108 सुसीरी सुनयना होगे हे। जेखानी एहा अपन घर म रहीस, अपन के बड़खादाई संग ए मंदिर, ओ मंदिर घुमे। नम्मी पड़हत रहीस, ते समे अपरेल म एकर ममा गाँ म श्रीमदभागभत होत रहीस। एकर बड़खादाई कथा सुने बर ऊँहा गीस। एला नी लेगीस, तभू ले एहा रो के पीछू–पीछू चल दीस। जाय खानी, एकर दाई नयना ह पोट पीटे रहीस। तीन दिन बाद फिरीस। एक ठी पेपर ह होगे रहे। एमा अब्सेंट

होगे। दू ठन म कम नंबर आगे। कुल मिलाके एहा नम्मी म फेल होगे। एक साल अऊ पड़हीस ओईच कक्छा ला। फेने फेल होगे। ओकर बाद एके झिन घर ले भाग गे। ए ह बचपन ले सुघ्घर रहीसे। बाड़हे के बाद अऊ सुघ्घर होगे। गाना भी बने लय म गाथे। एकर कथा सुनोइया मन एक घरी ब घला बाहर कोति नी जाँय। कोनो गाँव म जाथे, त सात लाख लेथे। सहर बर गियारा लाख लेथे। छे झन के ग्रुप हे, जेमा तीन झन मन बाजा बजाथें, एक झन ह गाना ल झोंकथे। एक झन ह यूटूब म लाईब दिखाथे। कई झन मन कथें, एकर स्विस बेंक म घलो खाता हे। ए ह रजनी के काम होय के बाद रेंगत–बुलत एक झी मईलोग करा थुरा गीस। दुनों झन हाल गीन। ईहा जादा हालीस। लहुट के देखीस त आघू के ह पाछू अंगत चल दे रहीस अऊ अपन के दई ल दई क के कुछु गोठियात रहीस। ए ह फिर गे, ओमन करा जाके कथे– तें बड़की दीदी सिरने अस का ? नयना कथे– हाँ, बेटी, ए तोर दीदी सिरने ए। बड़की बेटी, ए ह छोटकी नोनी सुने ए, ए ह अब कत्था कथे घूम–घूम के अऊ सुने, सिरने ह बड़खा पुलिस अधिकारी बन गेहे। सीरीनयना अच्छा क के ओकर गले लग जाथे अऊ आ बईठ के के हाथ खींचत राउण्उ टेबल के आघू म ले जाथे। दुनों झन कुर्सी म बईठे हें। दुनों बहिनी बनेच दिन म भेंट होय रहीन, त दुनों म गोठ–बात घलो बनेच चलीस –

सीरीनयना – ''का हाल चाल हे तोर अऊ तोर भगवान के ? कथा वाचिका नोनी।''

सुनयना – ''भगवान के आसीरवाद ए, ओकर किरपा ले सब कुसल–मंगल हे, में भी खुस हों। तोर भगवान नी, हमन सब के भगवान। ओई हर हम सब ल ए दुनिया म भेजे हे। हमन पहिली जनम म जे पूजा–पाठ, भजन–भक्ति करे हन, ओकरे कारण हमन ल ई जनम म सुख से रहे बर मिले हे, अऊ एक चीज हे, हमन मइनसे जनम ल पाय हन। ए दुनिया म चउरासी लाख योनि म कई किसिम के जीव–जंतु मन हावें। ओमे सिरिफ मइनसे हर ही धरम के काम ल कर सकत हे। हमन मइनसे होके यदि धरम के काम ल नी करबो, पूजा–पाठ ल नी करबो, भाव–भक्ति ल नी करबो त अगले जनम म कीरा–मकोरा योनि म जनम लेबो। ओकरे सेंथी हमन सब जे जनम ल पाय हन ओला सारथक करी अऊ हरि के गुन ल गाई।''

सीरीनयना – ''भगवान के किरपा ले नी, हमन अपन के कर्म के कारण सुख पाथन या दुख पाथन। जे काम हमन करथन, ओकर फल हमन ल कुछु दिन बाद मिलथे। जईसे जुलाई म एडमिसन लेके कोनो कक्छा ल पड़थन,

मार्च–अप्रेल म परीच्छा देथन, ओकर बाद जून आसपास म ओकर फल ल पाथन। कम पड़हे रथे तेहा कम नंबर पाथे, जादा पड़हे रथे तेहा जादा नंबर। परीच्छा कापी म कोनो विद्यार्थी ह उत्तर नी लिख के कोनो मंतरा लिखही त ओहा फेल हो जाथे। जनम पाय के बात म, तें जे कहत हस, ऊहू मोला जमत नीए। आमा के रूक म आमा के फर लगथे, पाके के बाद खाके ओकर गोंहिया ल भिंया म हमन फेंक देथन। जेखानी बरसात आथे, ओखानी ऊँहा ले एक पउधा निकलथे। बाड़हे के बाद ओहर आमा के ही रूक बनथे, आने कोनो पेड़ जईसे बमरी, जाम, कउहा, बोईर नी बने। जीव–जंतु ल घलो देख ली– टेटका ह जे अंडा देथे, ऊँहा ले भी टेटकच जनमथे, गरवा, भँईसा नी जनमे। साइंस ह एला सिद्ध करे हे कि अपनेच समान जीव जनमथे। जींस के कारण गुण ह घलो ओकर म ट्रांस्फर होथे। कभू–कभू हाईब्रिड या संकर जीव घलो पईदा होथे। जईसे– घोड़ा अऊ गधा प्रजाति के मिलन होय ल खच्चर जनमथे। रहीस बात मइनसे के पाप करे म या अधरम करे म तें कहत हस कि ओहा कीरा–मकोरा, कुकुर–बिलाई, टेटका–घीरक्खा, सूरा–गधा जनमही; त सुन, मरे के बाद मइनसे के सरीर ह तो नस्ट हो जाथे। साँस टूट जाथे। सब खतम हो जाथे। फिर कहाँ ले ओ ह जनमही ? जे सरीर ओ ह पाय रथे, चाहे ओ ह मइनसे के सरीर पाय रहे, चाहे कुकुर–बिलाई या गरवा–भँईसा के सरीर पाय रहे, मरे के बाद ओ सब ह खतम हो जाथे, नस्ट हो जाथे। ओइच्छ ह दुबारा नी जनमे। मइनसे ह मइनसे नी जनमे, कुकुर ह कुकुर नी जनमे, हाथी ह हाथी नी जनमे; ए सब मन एक समे के बाद नस्ट हो जाथे; बल्कि मइनसे मन ले मइनसे जनमथे, हाथी मन ले हाथी जनमथे, कुकुर मन ले कुकुर जनमथे। जनमे के अलग कथा ए, साइंस के अनुसार, एकर बर नर अऊ मादा जीव चाही। दुनों के संसर्ग ले नावा ओकरेच जईसे जीव पईदा होथे। कोनो–कोनो प्रजाति म नर अऊ मादा के अंग ह एकेच जीव म रथे। त बहिनी, मोर कहना हे कि मइनसे ह मइनसे नी जनमे, बल्कि मइनसे ले मइनसे जनमथे। अऊ तें कहत हस कि मइनसे ह पाप करथे त ओ ह कुकुर–बिलाई जनम जाथे। एमा में कहत हो कि पाप करम करे ल कोनो कुकुर–बिलाई नी जनमे, ओहा मइनसेच जनमथे, ओकर जिनगी ह कुकुर–बिलाई जईसे हो जाथे। तें देखे होबे, कई झन मन मंदिर के आघू म भीख मांगत रथें, दुख पात रथें, करलई जिनगी जीयत रथें। एमन मइनसे जनम लेके घलो कुकुर–बिलाई ले भी जादा दुख पाके जियत रथें। त अलग से पाप करम वाला मइनसे मन ल कुकुर–बिलाई जनमे के का जरूरत हे ? ओमन तो कुकुर ले भी बदतर जिनगी जीयत रथें। त नोनी, पुनरजनम जईसे कोनो बात नीए। मइनसे ल मइनसे जनमे बर मइनसे माता–पिता चाही, ओ ह खुद जनमे नी सके। अऊ मइनसे ले कुकुर–बिलाई जनमे के कोनो उपाय नीए, ओ ह मइनसेच

जनमही, ओ भी अपन के दई–ददा ले, भले ही कुकुर–बिलाई जईसे दुख पाही त पात रही अपन करम के कारण।''

सुनयना – ''कुकुर–बिलाई जईसे नी, कुकुर–बिलाई ही जनम के दुख पाथें। यदि कोनो मईलोग ह तीजा उपास के समे पानी पी दीही त अगले जनम म मछरी जनमथे, भात खा दीही त सूरा, बंदरिया बनही, झगड़ा करे ल कुकुर बनथे, बिना सजे–सम्हरे उपास रही त अगले जनम म विधवा बन जाथे, कथा नी सुनही त साँप बनही, मांझा म उपास तोड़ दीही त सात जनम तक पति के सुख नी पाँय या ठड़गी हो जाँही, तीजा के दिन लबारी मारही त कउवा बनही, सास अऊ ननंद ल गारी दीही त बिलई बनही, बिन नहाय पूजा करही त चमगादड़ बन जाथें। समझे दीदी। एला में नी कहत हों, हमर पोथी–पुरान ह कहत हे, एला माने म ही हमर सुधार हे, सुख–सांति हे। उपास के संग म कथा हो जाय ल सोने म सुहागा ए। सीरीमद भागभत कथा सुने के बड़ फायदा ए। सीरीमद भागभत पुरान के स्कंध 1 अध्याय 3 के स्लोक 40 म लिखाय हे– 'निगमकल्पतरोर्गलितं फलं शुकमुखादमृतद्रवसंयुतम्। पिबत भागवतं रसमालयं मुहुरहो रसिका भुवि भावुकाः।।' एकर अर्थ हे कि ए जो भागभत बेद होथे, ओ ह कल्प बृक्छ के समान पाका फर ए। ए ह सुकदेव मुनि के मुहुँ ले अमृत बन के निकलथे। एला बार–बार पिए करा। ए स्लोक के अनुसार कथा सुने के बड़ फायदा ए। स्कंधः 12.3.51 के अनुसार, कलि जुग म सात दिन सिरिफ कथा सुन लेय ल मुक्ति मिल जाथे। सात दिन कथा सुनीस त परीछित ल मोक्छ मिल गीस। स्कंधः 1.2.17 के अनुसार, भागभत कथा सुने ल करोड़ों जनम के पाप नस्ट हो जाथे। स्कंधः 1.2. 18 के अनुसार, मन साफ होथे, भगवान बर भक्ति जागथे। जे घर म भागभत कथा होथे, ऊँहा सात पीढ़ही के पीतर मन तर जाथें। स्कंधः 1.18.13 के अनुसार, जिहाँ कथा होथे ऊँहा ले भूतवा मन भाग जाथे। जेमन कथा सुनथे, ओमन बिन मउत के नी मरे। पद्म पुरान के अनुसार, सात दिन कथा सुने ल सव अस्वमेध यग्य के बराबर पुन मिलथे। गंगा म एक लाख बार नहाय ले जे पुन मिलथे, ओ हर एकेच घँ कथा सुने ल मिल जाथे। जेकर लोग–लईका नी होत रथे, ओकर लईका हो जाथे। गरूड़ पुरान के स्कंधः 2.4.77 के अनुसार, जिनगी म जे ह एक घँ भागभत कथा ल सुन दारथे, ओकर तीर म जम के दूत नी आ सके, ओला सीधा विस्णु के दूत लेहे आथे। स्कंध 12.3.52 के अनुसार, कलि जुग म सिरिफ कथा सुन दारे ल भगवान मिल जाथे। सुने ओ दीदी।''

सीरीनयना – ''सिरिफ कथा सुने ल या कथा कहे ल या कोनो सब्द या

मंतर ल बार–बार कहे ल कुछु नी होय, चाहे कोनो जुग रहे। में तोला एक बात पूछत हों– तोला पियास लागही, त तें पानी–पानी सब्द ल कई बार कबे या बार–बार पानी–पानी सब्द ल सुनबे त तोर पियास बुझाही या सही म भउतिक रूप म पानी नामक पदारथ ल पीबे त पियास बुझाही ? पियास बुझाय बर पानी रूपी पदारथ ल मुहुँ के भीतर ग्रहण करे बर लागथे, पानी–पानी बोले या सुने ल पियास नी बुझाय नोनी। नउकरी–नउकरी कहे ल नउकरी नी मिले। एकर बर पढ़हे बर लागथे, परीच्छा देय बर लागथे, इंटरबियू देय बर लागथे, तब जाके नउकरी लगथे। कथा सुन के भगवान मिलथीस त सब कोई कथा ल ही सुनथीन अऊ भगवान ल पाके अपन मन के कुछु भी बर मांग लेथीन, नउकरी–चाकरी, दुकान–मकान, धन–दउलत, सुघ्घर जोड़ी–जाँवर सब मांग लेथीन, पढ़हे के कोनो जरूरत ही नी पड़थीस, कमाय के घलो जरूरत नी पड़थीस।''

सुनयना – ''दीदी,, जेला भगवान मिल जाथे, ओला सही म कमाय बर नी लागे। ओ ह भगवान–भजन म अपन जिनगी ल बिता देथे। बड़खा–बड़खा मंदिर म जाके देख, ऊँहा के पुजारी मन ल कुछु करे बर नी लागे। भगवान के भजन म ही अपन के जिनगी ल बितात हें। ओमन भगवान के सरण म चल दीन हे। एमन मरे के बाद सरग जाहीं। गरूड़ पुरान म लिखाय हे कि जे मइनसे मन गया, कासी, हरिद्वार या प्रयाग में जाके नहाथे, ओ ह सरग जाथे। गाय के सेवा करे ल भी मइनसे सरग जाथे। सीरीमद भागभत गीता के अध्याय 18 के स्लोक 65 म भगवान किरिस्न ह कहे हे कि भगवान के नाम ल जपे ल, कीरतन–भजन करे ल, भगवान के सरण म जाय ल सरग मिलथे, ए ह सबले सरल डाहर ए अऊ सबो बर ए। सीरीमद भागभत के स्कंध 12.3.51 के अनुसार राजा परीछित ह सात दिन कथा सुनीस त ओला सरग मिलगे अऊ अजामिल ह मरेक खानी अपन के बेटा जेकर नाँव नारायण रथे, ओला ओकर नाँव धर के बुलाईस त एला विस्नु के दूत मन लेहे बर आईन, अरथात् एला मोक्छ मिल गे। अपन के बेटा के नाँव धर के बुलाय म एला सरग मिल जाथे। अऊ सुन, गरून पुरान के अनुसार अईसे कई ठन कारन हे, जेकर चलते मइनसे मन नरक म जाथें। ओ कारन म एक ठी हे – बराम्हन हत्या करे ल या गउ हत्या करे ल नरक मिलथे।''

सीरीनयना – ''सरग का होथे, नरक का होथे ? ए सब ह मन गड़हन्त कहानी ए। सरग–नरक जईसे कुछु जगा नीए दुनिया म। ए ह मइनसे मन ल डरवाय के अऊ लुटे के उपाय ए, बस। तें कहत हस बराम्हन मन के हत्या करे ल नरक मिलथे। त ए बता, आने मन मइनसे नोहे का ? सिरिफ बराम्हन नी, कोई

भी वर्ग के मइनसे ल, कोई भी जात के मइनसे ल मार देय ल नरक मिलना चाही। अऊ ए नरक होथे का? नरक के अवधारणा कहाँ ले आईस ? ए सब ह बकवास बात ए। यदि सरग–नरक होथे भी, त ए ह मरे के बाद कईसे मिलही ? मरे के बाद तो मइनसे के सरीर ह ईहेंच नस्ट हो जाथे। फिर यदि सरग मिल भी जाही त ओ ह सुख–भोग कईसे कर पाही ? ओकर नाक ह तो मरे के बाद जल गे, फिर सरग में कोन अंग ले ओ ह अच्छा–अच्छा खुसबू ल सूंघ पाही। आँखि ह इहेंच जल के राख होगे त सरग म ओ ह सुघ्घर–सुघ्घर चीज ल, सुघ्घर–सुघ्घर मइनसे मन के सुघ्घर–सुघ्घर नाचा ल, प्रकृति ल कोन आँखि ले देख पाही ? सरग म ओला काजू–कतली अऊ रसमलाई मिल घलो गे, त ओहा कोन मुहुँ–दांत–जीभ म खाही, मुहुँ ह तो इहेंच मरघट्टी म जल जाय रथे। यदि ओला नरक मिलत हे, त जम के दूत मन कोन सरीर ल डबकत तेल के कराही म डबकाही, सरीर के कोन करा ल कोर्रा म मारही; सरीर ह तो इहेंच नरवा तीर म लेसा जाय रथे। मान ले, यदि सरग–नरक होथे भी, त ए ह मोर अनुसार मरे के बाद नी मिले, जियत म ही मिल जाथे, प्रतीक रूप म, वास्तव म नीही। यदि कोनो मइनसे ह नाती–पोता देख दारीस, बेटा–बहू ओला बड़हिया खाना–पीना दीस, बेटा ह या पोता ह बृधासरम नी भेजीस, बीमार पड़े म घर के मइनसे मन ओला बने जतनीन, गरमी म कूलर बेवस्था कर दीन, दू–चार जगा ल घुमा दीन, सरीर स्वस्थ रहे म खवईया ब खाना, पीवईया ब पानी के बेवस्था कर दीन, ओकर बेटा–पूता सक्सेस होगे, करिअर बनगे; तहाँ ले ओला अऊ का चाही ? कल्पना म जे सरग रथे, ओ ह ओला मिल जाथे, सरग के समान सुख–सांति मिल जाथे। सरग बस नी मिले, काबा कि सरग कहीं नीए। कल्पना म जे नरक हे, ओ ह कोन ल जीते–जियत मिलथे, बतात हों अब। जेला बीमारी म देख–रेख नी मिल पाय, बेटा–बहू गारी देथे या मारथे, ठीक से खाना–पीना नी मिल पाय, सरीर म बहुत तकलीफ हो जाथे या दुख पाथे, अपन आँखि के आघू म अपन परिवार के छोटे–छोटे मन ल मरत देखके छटपटाथे; त ओला नरक भोगत हे, कहे जाथे। नरक वास्तव म नीए, बल्कि जिनगी के रहत–रहत भारी कस्ट जे पाथे, ओला नरक के समान भोगत हे कथें। त नोनी, सरग–नरक ह कुल मिलाके डरवाय के अऊ लुटे के खेल ए। जे मइनसे ह डर जाथे, ओला अऊ डराय जाथे। 'जे ह लोभिया रथे, ओई हर ही अऊ पईसा गँवाथे।' सरग मिलही, पुन मिलही, अगला जनम म राजा बनबे बोल–बोल के दान करवाथें, पईसा ल लुटथे। नरक मिलही, पाप मिलही, अगला जनम म अंधवा–खोरवा बनबे, कुकुर–बिलाई बनबे, गरीभा

बनबे बोल–बोल के दान करवाथें, पईसा ल लुटथे; कथें कि 'दान करबे त ए सब पाप ले मुक्ति मिल जाही।' लालच दिखा के अऊ डरवा के, दुनों म ही पईसा ल लुटथे। चित भी ओमन के, पट घलो ओमन के अरथात् तुमन के। कुछु मइनसे मन कथे– 'ई जनम म बने पुन कर, दान कर; जेमे कि अगला जनम म राजा बनबे, बड़खा नउकरी पाबे, दुख नी पास।' में पूछथों कि अगले जनम म तें बड़खा आदमी बन घलो गेय त का तोला सुरता रही कि तें पहिली जनम म का अच्छा काम करे रहे या बड़खा आदमी नी बन पाय या दुख पाय त का तोला सुरता रही कि तें पहली जनम म का खीक करम करे रहे ?' मोर कहना हे नोनी, कि 'जो कुछ तोला करे बर हे, ईच जनम म कर अऊ ईच जनम म ओकर फल ल घलो पा, चाहे निकता पा या खीक पा।' नोनी, तें सोचत होबे, में नास्तिक ओं। में नास्तिक नोहों। में तर्कसील मइनसे ओं। पड़हे–लिखे हों। संविधान पड़हे हों। का ह सही अऊ सम्भव ए, का ह गलत अऊ असम्भव ए, एकर गियान रखथों। झूठ–मूठ के कहानी म विस्वास नी करों में।''

सुनयना – ''दीदी, तें नास्तिक अस। ओकरे सेंथी तें भगवान किरिस्न के लीला ल समझ नी पात हस। भगवान राम के मरयादा आचरण, तेज प्रताप ल नी देख पाथस। जा तो किरिस्न के बृंदाबन–मथुरा में, राम के अयोध्या में, सिव के कासी में; लहुट के नी आस। वहींच बस जाबे। तोर मन ह ऊँहेच रम जाही। सुने हस, एक झन पुलिस अधिकारी ह राधा बन के सब जगा नाचत फिरत रहीस। सिव के भक्ति म लीन होके सत्यनारायण बाबा ह कोसमनारा रईगड़ म दिनन रात तप करत हे। सिव लिंग म अपन के जीभ ल चड़हा देत हें मइनसे मन, अईसने नी चड़हात हें ओमन, भगवान सिव के किरपा हे ओमन के ऊपर। अयोध्या म एक साथ हजारों–लाखों दिया बरत हे। साँप चाबे रथे त कईथा (हसउद–बिर्रा) के माटी ल चटा देय ल जहर उतर जाथे, ए ह भगवान सिव के ही प्रसाद ए। बईदनाथ, बदरीनाथ, केदारनाथ, हरिद्वार, कासी अईसे धाम ए, जिहाँ जाय भर ले ही मइनसे के पाप कट जाथे। कहे गेहे कि 'काश्यां मरणान् मुक्तिः' अरथात् कासी में मरे ल मोक्छ मिलथे। ऊँहा जमराज के पावर नी चले। कासी के गंगा में नहाय ल करोड़ों जनम के पाप खतम हो जाथे। बरम्हत्या जईसे पाप घलो मिट जाथे। कासी में मरे ल सीधा सिवलोक मिलथे, फेने जनम लेय बर नी लागे। दीदी, भगवान मन के लीला ल समझ, गुन अऊ भाव–भजन म लग जा।''

सीरीनयना – ''हूँ.... सोचे बर लागही।''

कम आवाज म ए ह गुनगुनाथे –

''पाहन पूजे हरि मिले, तो मँय पूजूँ पहार।

ताते ये चाकी भली, पीस खाय संसार।।''

सुनयना – ''ठीक हे दीदी, बनेच समे होगे, चली। आज तो दादू अंकल के घर म ही रहे बर लागही।''

चलत–चलत सुनयना ह एक ठन पथरा म हपट गे। पथरा ह नी दिखत रहीस। मेट के भीतर रहीसे। कोंघर के गोड़ ल देखीस, खून नी निकले रहीस। उठीस अऊ पीछू अंगत ल देख के मुस्कुराईस। सीरीनयना ह ओकर मुहुँ–कान म हँसी के भाव नी देख पाईस। सायद सुनयना ह ठग–ठियाली के हाँसीस।

दसकरम म सुनयना ह दू झन बंदूकवाला बाडीगाड के संग म आय रहे। दूरिहा ले आय रहीस, तेकर सेथी रथिया दादू के घर म सुते बर लाग गे। रथिया एहा सुतही का ? फूल रथिया ए ह जागत रहीस, नींद न परीस। ईंहा एकर संस्कीरिती के धज्जी उड़ गे रहे। दीदी संग बहस म जीत तो गे, लेकिन अंदर ले हार गे। गुनत रहीस कि एकर संस्कीरिती के डाहर ह बने ए या सिरने अऊ 'भकली–जकली' संस्था के डाहर ह। उन्नीस–बीस साल म पहिली बार अइसे होईस कि बिहना पहाय म नहा–धो के, एहा पूजा–पाठ नी करीस, गेरूवा कपड़ा नी पहनीस।

❑❑❑

छत्तीसगढ़ राज के बाहर जोन अपराधी मन ल पकड़े गेय रहीसे, ओमन ल कुछु दिन बाहर रखे के बाद रईपुर ले आईन। अइसने मन ल एके करा नी राख के अलग–अलग कोठली म राखे गेय रहीसे। आज दुनों अधिकारी सीरीनयना अऊ जेकलीन के ओई कोठली म दउरा रहे। आघू–आघू वरदी म एसपी सीरीनयना खड़ाप–खड़ाप जाथे, पाछू–पाछू आईएएस जेकलीन चलत हे। सबले पहिली अब्दूल के कोठली म गीन। अब्दूल के केस डिटेल्स ल सीरीनयना ह जात–जात जेकलीन ल बता दार रहीसे कि कइसे एहा काजल ल मारे रहीसे। एकर कोठली म पहुँचे के बाद अब्दूल ह एक ठन नावा खुलासा करीस। बोलीस– ''सर मोला झन मारिहा, में सबो गोठ ल सच–सच बताथों। मेहा रूप

बदलके दू महीना पठानकोट म घलो रहें। फिर एक झन हिन्दू लड़की ल बहला–फुसला के ओकर संग बिहा करें। फिर छे महीना के बाद मोर करा जो भी मोर आतंकवादी साथी आईन, ओकर करा ओला सुते बर भेजों। बदला म मोला बनेच कन पईसा मिले। चार–पाँच ठन रिवाल्वर तो मोर करा पहिलीच ल रहीसे। फिर एक दिन मोर संस्था ले पर्यटक मन ल नाम अऊ जात पूछ–पूछ के मारे के आदेस आईस। में खुस हो गेंय। बिना आदेस के कोई ल मार नी पात रहें। में बिना मारे तड़पत रहें।'' दुनों अधिकारी अब्दूल के मंसा ल सुन के अवाक् रह गीन। का अईसे भी हो सकत हे कि कोई आदमी मारे बिना तड़पत रथे ? एकर उल्टा जरूर हो सकत हे कि कोनो ल मार के कोई आदमी पस्चाताप म तड़पथे। एकर बारे म दुनों अधिकारी मन एकर फाईल म फाँसी रिकमेंड लिख दीन। फिर दु सव मीटर के दूरिहा म एक ठन अऊ कोठली रहे, ऊँहा गीन। एसपी ह चलत–चलत आघू कोठली के केस हिस्ट्री ल बताईस, ''एकर नाम कई ठो हे। तेकर सेथी एला बहुरुपिया कथन। एकर विरूद्ध म काकरो रिपोट नीए। एहर इक्कीस बार मरे हे, तभू ले जिंदा हे।'' गोठ करत–करत ओकर कोठली तक पहुँच जाथें। कड़क अवाज म सीरीनयना ह पूछथे– ''तोर नाँव बता।'' करिया रंग के गघरी ले पानी पिए के बाद बहुरुपिया ह अराम से एमन अंग मुड़ीस अऊ मुस्कुरा दीस। मुस्कुराय के नेत नमूना ल दुनों अधिकारी मन नी देख पाईन। बहुरुपिया ह मुस्कुराय के एहसास ल खुद करीस, मुस्कुराय के समे मुहु के जो रूप बनीस, तेहा ओकर दाड़ही के चूँदी म तोपा गे। मन म एहा कहे लागीस – ''तुमन तो तुमन अ, तुमन के दाईमन घलो मोला नी चिन पाँय।'' अब के बेरा जेकलीन ह पूछथे– ''तें का करके जेल म आय हस ?'' सीरीनयना के जबाब तो एहा कभू नी देय रहीस। काकरो जबाब नी देय रहीस। कोनो अधिकारी मन एकर गोठ नी सुने रहीन। जेकलीन के गोठ म का जादू रहीसे कि ओला सुन के एला गोठियाय के मन लागीस। बहुरूपिया ह कहीस – ''सॉरी, धोखा देंय हों सबो झन ल।'' फिर अपन मन के आँसू निकल गे ओकर। फेर कथे – ''मोला मार साहेब, फिर बताहूँ।'' थोरकुन के गेय ल कोई आने अधिकारी ह एकर हाथ म पुलिसिया डंडा धरा दीस। जेकलीन ह जईसे ही एकर तिर म जाके डंडा ल उठाथे, लाईट गोल हो जाथे। एहा ओला नी मार पाय। पुलिस अधिकारी मन अचम्भा हो जाथें कि सबो कोठली म इनवर्टर लगे हे। लाईट भी गोल नी होय हे। गोल होथीस त बेटरी ह काम करथीस। आने सबो कोठली म लाईट जलत रहे। तुरंत टार्च मार के लाईट के कनेक्सन ल अऊ इनवर्टर बेटरी के पानी

ल चेक करीन। कुछु नी बिगड़े रहे। सब परेसाान। थोरकुन वेट करे के बाद, दुनों अधिकारी मन मन म कुछु गुनत–गुनत कोठली ल निकल गीन। जईसे ही एमन निकलीन, कोठली म लाईट आगे। पाछू मूड़ के एमन देखीन घलो। लेकिन नी फिरीन। दूसर दिन साम के एसपी सीरीनयना ह आईएएस जेकलीन ल फोन म खबर करीस कि बहुरूपिया ल गवाहा, सबूत के अभाव म छोड़ दिए गीस।

पन्दरा दिन बाद कोट डाहर ले अब्दुल बर फाँसी के सजा एलान होईस। तीन दिन के बाद अब्दूल बीमार पड़ गे। अस्पताल लेगीन। रथिया खिड़की अंगत ले कूदके भाग गे। आन दिन पुलिस मन देखीन त ओकर कपड़ा ह झूँझाट म परे रहीस। ओई रथिया एहर एक ठन तरिया म चुपे–चाप बुड़े रहीस। बीहान दिन अब्दूल सकल के आदमी एरिया भर के सीसीटीवी म नी दिखीस। दुनों कोठली ह खाली होगे रहे।

❑❑❑

जेकलीन ह सोम्मार, बुधवार अऊ सुकुरवार रथिया कलेक्टर बर बनाय गेहे, ती सरकारी बंगला में रथे। मंगल, गुरबार अऊ सनिचर–एतवार के अपन दई भकली के घर में रथे। आफिस खतम होय के बाद रोज अपन के बंगला जा के थोरकुन सुरताथे। तेकर पीछू सहर के हाल–चाल जाने बर बहिर कोती निकलथे। ई बेरा म अपन के प्राभेट गाड़ी ल खुद चलाथे। नेम प्लेट नी लगाय। साधारण जनता बन के घुमथे अऊ सुख–दुख ल अनुभव करथे। जेकलीन अऊ सीरीनयना ह जे दिन अब्दूल अऊ बहुरुपिया के कोठली के निरीक्छण करीन, तेकर पन्दरा दिन के बाद वाला सुकुरबार के दिन जेकलीन ह अपन बंगला ले निकल के सहर अंगत जाते रथे। एक करा आघू अंगत बनेच भीड़ दिखीस। थोरकुन लकठा गीस त देखीस कि कोनो रयली जयकारा लगात जात रहीसे। ओई खानी एक ठी कुकुर ह कँई–कँई करत अऊ थोर–थोर खोरात बाखा अंगत गीस। एक मिनट के गेय ल पाछू अंगत ल एक ठन एम्बूलेंस आईस। सायरन के अवाज सुन के एहा साईड दे दीस। एम्बूलेंस ह आघू बड़ गे। ओकर पाछू म ए ह अपन गाड़ी ल लगा दीस। धीरे–धीरे दूनों गाड़ी जात हे। एम्बूलेंस ल साईड ले नाहके के जगा नी मिलत रहे। ट्रेफिक पुलिस वाला मन घलों कोसिस कर देखीन, एम्बूलेंस ल पार नी कराय सकीन। पाँच मिनट के डाहर ल पार करे बर डेड़ घण्टा लग गे। जइसने रयली ह अम्बेडकर अस्पताल पार करीस, एम्बूलेंस ह सीधा अस्पताल घुस गे। जेकलीन ल अन्ते जाना रहीसे, तभो ल ए ह पता नी का

सोच के अस्पताल अंगत अपन के गाड़ी ल पेला दीस। उतर के सीधा स्ट्रेचर के पाछू–पाछू दउड़े लागीस। फिर एकदम से एकर गोड़ ह रूक गे, अइसे लागीस जईसे गोड़ ल कोनो खोभिया के धर दीसे। स्ट्रेचर के पेलत ही डाक्टर–नस लग गे रहीन संग म। चलते–चलत डाक्टर ह स्टेथिसकोप ल मरीज के छाती म लगा–लगा के देखत रहीस। फिर अचानक ले रूक गे। डाक्टर कहीस– ''आई'म सारी।'' नस मन सादा कपड़ा ल ढाक दीन। डाक्टर ह संग के आदमी मन अंगत ल देख के कहीस– ''थोरकुन जल्दी लाय रथा त मेंहा एला बचा दार रथें।'' ए गोठ ल जेकलीन भी सुनीस। मरीज के संग म दु झन मईलोग रहीन, ओमन मुहुँ ल छबक–छबक के सुसके लागीन, बीच–बीच म दु परकार के रोय के अवाज घलो निकल जाय। फिर कोई खानी घेंघरी अवाज घलो निकले। तीन झन बाबू पिला भी रहीन। एमन नी रोईन। लेकिन बीच–बीच म नाक पोंछे के बहाना म आँसू घलों पोंछ लेत रहीन। जेकलीन ह फिर गे। अपन गाड़ी म बईठ के अऊ कहूँ अंगत नी जाके सीधा अपन के सरकारी बंगला अंगत इस्टेरिंग ल घुमाईस। आन दिन ड्रेस चेंज करके हाथ–गोड़ धो के पूजा घर म पेले। लेकिन ओ दिन सीधा पेल गे। थोरकुन रोनी सूरत म अपन के दई के फोटो के आघू म सिकायत करीस – ''सारी दई, आज मेहा एक झन के जान नी बचा पाँय। मोर कलेक्टरी म कुछ तो दोस हे, जेकर चलते मेहा ट्रेफिक के सही बेवस्था नी कर पाँय। में कोनो धरम के भगवान के या कोनो देवी–देवता के रयली या आंदोलन के रयली या विग्यापन सँउपे बर जाथें ते रयली के डाहर के निर्धारण नी कर पाँय। एमे काकर दोस ए दाई ? मोर दोस ए या जनता के ? या भगवान के ? भगवान के तो बिल्कुल नोहे। जनता के भी काबर रही ? एमन सिरिफ भीड़ करथे अऊ भीड़ के कोनो दोस नी रहे। भीड़ के बुद्धि घलो नी रहे। एमा मोरे दोस ए, मोर परसासन के दोस ए। हर फंक्सन म रयली निकालना जरूरी ए का ? विग्यापन देय चार आदमी नी जा सके का ? आंदोलन के समे नारेबाजी करना अऊ सहर म भीड़ करना जरूरी ए का ? आंदोलन वाला मन एक ठी मयदान म या इस्टेडियम म कई ठी आने–आने डाहर ले आके–सकलाके नाराबाजी नी कर सके का ? भीड़ के खातिर एम्बूलेंस ह आज डाहर नी पाईस, त मरीज ह सही समे म ईलाज नी पाईस अऊ मरगे। कई झन के अमरजेंसी कई ठी काम रथे। काकरो परीच्छा रथे। काकरो इंटरबियू रथे। रयली के भीड़ म सब फँस जाथें अऊ काम बिगड़ जाथे। रयली करे ल ही भगत मन के पुकार ल भगवान ह सुनथे का ? मन म आराधना करे ल नी सुने ? कोनो महापुरूस के जयंती खानी ओकर

जुलूस निकालना जरूरी ए का ? सांति ले कोनो एक जगा म बईठ के गोठ–बाठ करे ल काम नी चले का ? हल्ला मचा के पूरा सहर ल बताना अऊ दिखाना जरूरी ए का ? ए दाई, मोला कोनो उपाय दिखा, में एला ठीक करना चाहत हों।'' जेकलीन के आँखि अंगत ले आँसू गिरत रहे। एहा अपन के दई के फोटो के आघू म ठाड़हे हे। फोटो म ताजा फूल के माला चड़हा के, अगरबत्ती जलाके, दीया जला के प्रणाम करीस। आँसू पोंछ के बईठक रूम म आगे।

जेकलीन ह जे दिन सरकारी बंगला म रथे, ओ दिन रोज बिहना अपन के दई के फोटो के पूजा करथे, माला चड़हाथे, अगरबत्ती–दीया दिखाथे। लेकिन आज दू घँ होगे। बिहना रोज करथे, अपन के आदत के अनुसार; आज संझा भी पूजा करीस, माफी मांगे बर, पस्चाताप करे बर, कलेक्टरी ठीक से नी कर पाईस तेकर बर। जेकलीन ह दई के घर म जे–जे दिन रथे, ओ दिन पूजा नी करे, डारेक्ट पाँव परके, गले लगके आसीरबाद ले लेथे।

एकर दई भेकलीन ल घलो मालूम हे कि जेकलीन ह ओकर सरकारी बंगला म एकर फोटो रखे हे, जेमा जेकलीन ह माला पिंधाय हे अऊ ए ह ओ फोटो के रोज पूजा करथे। भेकलीन ल गर्व हे अपन के बेटी के ऊपर। अपन के दई के अतकी मान–सम्मान कोन करथे आज के दुनिया में ? लेकिन एकर बेटी ह करत हे, ए ह ओकर दई ल देवी मानथे। बड़भाग हे भेकलीन के। मरे के बाद कुछु होय या झिन होय एकर संग, कोनो संसो नीए। अभी एकर पूजा होथे, बड़ सुघ्घर बात ए। भेकलीन ह जानत हे कि कोनो आदमी के मरे के पाछू ही ओकर फोटो म हार चड़थे। लेकिन जीयत म कोनो आदमी ह जब हार पींध सकत हे, जईसे कि सादी के खानी दूल्हा–दूल्हन मन, वोट के समे जीत दारे ल नेता मन, मंच म स्वागत के समे मुखिया पहुना, अध्यक्छ, विसिस्ट पहुना मन, खेल म जीते के बाद खिलाड़ी मन; त ओई जियत आदमी के फोटो म जीते–जीयत काबर हार नी चड़ सकत हे ? भेकलीन ह फोटो म हार चड़हाय के बारे म अपन के बिचार ल कई घँ मंच म कहे–कहे हे। भेकलीन ह कहे हे कि ''मोला माला पिंधा या जेकरा में नियों ओकरा मोर फोटो ल माला पिंधा, ओईच बात ए। त नही, दुनिया ह मोर मरे के बाद मोर नाँव ले चउक बनाही, मोर नाँव ले रोड बनाही। में जीते–जीयत देख दारिहा त का होही कि मोर कतका नाँव होत हे। मोर मरे के बाद मोर फोटो म गोंदा के फूल चड़हा या गुलाब के या कहर–कहर मोंगरा के या बरगंडा के खीक फूल, मोला का फरक पड़ही ? मोर नाँव ले चउक म मूरती राख या मोर नाम ले कालेज बना या पुरसकार एलान कर। खइत्ता ए।''

जेकलीन ह आँसू पोंछ के चुपेचाप बईठक रूम म बईठे हे अऊ गुनत हे– ''में मोर दई के जीते–जीयत पूजा करत हों। का एहा गलत ए ? मोला मोर दई के मरे के बाद पूजा करना चाहिए का ? न, एहर गलत ए। में कतका ओकर सम्मान करथों, ऊहू ल पता चलना चाहिए, ओ भी जीते–जीयत, मरे के बाद नीही। दई के पूजा करहाँ त ओमे फूल माला तो लगबे करही चड़हाय बर, अगरबत्ती अऊ दीया घलो लगही दिखाए बर। मोला मालूम हे कि हमर संस्कीरिती म मरे के बाद ही फोटो म हार चड़हाथें, लेकिन ये संस्कीरिती ह जेखानी सुरू होईस होही, तेखानी अजीब नी लगीस होही ए ह कि मरे आदमी के फोटो म अईसने हार कोन चड़हाथे ? हार तो जीयत म पिंधाथे। लेकिन जब ए ह संस्कीरिती के रूप म चल पड़ीस त, चल पड़ीस, सब मानत हें अब। अब जीयत म फोटो म हार चड़हाबो त अजीब लगही, कुछु दिन लगही, फिर ए ह संस्कीरिती के रूप धारण कर लीही त आदत हो जाही, फिर अजीब नी लगे। अईसने, जेखानी पहिली बार काकरो मरे म जलेबी, अईरसा, गुलाब जामून या खीर खाईन होही त अजीब लगीस होही। अब नी लागे, काबर कि एकर आदत होगे अऊ ए ह संस्कीरिती के रूप धारण कर लीसे। जब कोई रिवाज ह पहली बार समाज म आथे त ओ ह अजीब लगथे अऊ ओकर बिरोध घलो होथे, लेकिन धीरे–धीरे ओकर आदत पड़ जाथे, फिर ओमे अच्छाई नजर आय लगथे अऊ ओ ह संस्कीरिती के रूप म समाज ल स्वीकार हो जाथे। राजाराम मनोहर राय अऊ ओकर संगवारी मन जे समे राँड़ी मईलोग मन के फेने बिहा करवाय के उदीम करीन, तेखानी ओकर बिरोध नी होईस होही का ? ओ मईलोग के सास–ससुर मन का कहीन होही ? कहीन होही कि देख तो रे, एमन मोर बहुरिया के बिहा करत हें, एमन ल लाज घलो नी लागत हे, मोर बेटा के आत्मा ह एमन ल का कही ? मोर बेटा के आत्मा दुख नी पाही का ? जे समाज म ए चलत रथे कि कोनो मईलोग के मांग म जिनगी म सिरिफ एक घँ सिंदूर चड़थे, ओई समाज म ई बुता ल फेने करे के कोसिस होही त ओकर बिरोध तो होबेच करथे। बिरोध घलो होईस होही ओ समे, लेकिन सुरू–सुरू म। अब एकर आदत होगे, त बिरोध नी होथे। अब ए ह संस्कीरिती बन गे अऊ सबो ल ए ह बने लागत हे, सबो विधवा–विवाह ल अब बने मानत हें। आज महूँ जीयत दई के फोटो के पूजा करके बिरोध सह लीहों। देखथों, कोन का किही ? आज में नावा संस्कीरिती बनाहूँ। कई झन मन अपन के दई–ददा के फोटो ल पर्स म धर के घुमथे। कई झन मन तो अपन के मयारू के फोटो ल पर्स म धर के घुमत रथें अऊ बीच–बीच म ओला मया म चुमत घलो रथें। त जब कोनो फोटो ल मया कर सकत हन, त

का ओकर पूजा नी कर सकन ? ए करना हे, ओ नी करना हे या ओ करना हे, ए नी करना हे; ए सब पाखण्ड ए, ढोंग ए। तोर दिल जे कहत हे, ओ कर। कोनो धरम के मन पनही पींध के पूजा करत हें, कोनो धरम के मन पनही ल हेर के। भगवान ल दुनों मंजूर हे। भगवान तो एक होथे, एहा दुनों परम्परा म कुछु नी कहत हे, ए सबो ढोंगचाल ल मइनसे हर अपन के स्वारथ बर बनाय हे। मोर मानिहा त अपन दिल के सुना अऊ करा, कोनो धरम के भगवान रहे, ओ ह काबर नराज होही ? एदे, अभीच के बात ए, रयली म चिल्ला–चिल्ला के भगवान ल पुकारत रहीन मइनसे मन, भगवान तो सुनीस नीही; उल्टा एक आदमी ओमन के चलते मरगे। एमन ल कइसे समझाँव में कि भगवान ल सांति पसंद हे, हल्ला नी। ए दाई, का उपाय करँव में एमन बर ?'' फिर अचानक ले जेकलीन ह चुप होगे। कुछु गुने बर लागीस। अवोईया सोम्मार के डीएसपी ट्रेफिक ल ए ह दस पेज के एक लेटर भेजथे।

एक दिन जेकलीन ह संझा अपन के आदत के अनुसार कार म एक आम नागरिक बन के सहर म घुमत रथे। आघू म कुछु कुरिया दिखथे। एकर मन होईस कि एमन ल सरकारी खाद्यान्न योजना के लाभ मिलत हे या नीही, पूछा जाय। कार ल एक जगा पार्किंग करके उतर के चले लागीस। पूछीस त पता चलीस कि ओमन चार महीना ले ओमेर हें अऊ ओमन चउर नी पात हें। ओमन के नाम, पता पूछ के एक कागज म नोट करीस। तुरंत काल करके मूल निवास म पता करीस। एमन ल बकायदा ऊँहा चउर मिलत हे। ले जाने वाला कोने, पता नीए।

फिर जेकलीन ह एमन ल पुछीस, ''तुमन करा मोबाईल म कुछु ओटीपी आथे का हर महीना ?''

एमन कहीन– ''हाँ, आथे तो।''

जेकलीन– ''चउर मिलही तेकर ओटीपी ए कथें का ओमन ?''

एमन कहीन– ''ना, इसने तो कुछु नी कहें। देखबे फोन म एक ठन नंबर जाही, बताबे ओला कथे।''

पूरा कथा समझ जाथे कलेक्टर ह। गुनत–गुनत फिरत रथे ओमेर ल। ओई खानी बाखा के एक ठन वेल्डिंग के दुकान म वेल्डिंग होत रहे, ओती अंगत ल एहा देख पारथे। जउनी आँखि ह जगम ल करीस। कार म बईठ के ओ दिन

अऊ कोनो अंते अंगत नी जाके, सीधा घर आ जाथे। आठ दिन के भीतर म तीन कर्मचारी सस्पेंड हो जाथें। सरकारी खाद्यान्न के दुकान ह अन्ते अंगत चल देथे। ओ कुरिया के रहोइया मन करा पूरा चार महीना के चउर आ जाथे। लेकिन बिहानेच दिन ल एकर जउनी आँखि ह थोर–थोर पिराय के चालू कर देय रथे। लोकल डाक्टर मन करा अपन के आँखि ल दिखाईस, लेकिन कोनो फायदा नी होईस। फेर दु–तीन दिन के गेय ल 4442271500 नंबर म चेन्नई फोन करके अपन के समस्या ल बताईस। गोठ–बाठ करे के बाद डाक्टर एस ए ए करा एपाइंटमेंट तय हो गीस। एक हफता के गेय ल रईपुर ले फलाईट नंबर छे ई दू जीरो जीरो दू म आठ बजके पचपन मिनट म बोर्डिंग करीस। एकर पीएनआर नंबर रहीसे– डबलू भी वन एल आर आर। सीट नंबर उन्तालीस सी म बईठ गे। रथिया नव बजके चालीस मिनट म जहाज ह चेन्नई बर उड़याईस। रथियच चेन्नई पहुँच गे। बिहान दिन कालेज रोड मेन बिल्डिंग ननगम्बक्कम संकर नेतरालय चेन्नई में जाके नव सव पचास रूपिया देके ईलाज सुरूच करा दिस। डाइलेट करे के बाद डाक्टर चेक करीस फिर अंग्रेजी म बोलीस। डाक्टर के पीए ह अंग्रेजी ल छत्तीसगढ़ही म बदल के गोठियाईस अऊ कुछु अपन तरफ ले घलो कहीस– ''अभी ईच पटाव म अऊ ऊपर म चार–पाँच जगा चेक होही, ओकर अलग से पईसा लागही। खालहे म लहू चेक होही। तोर एमाराई होगे हे, अऊ नी लागे। घेंच के नस ल चेक करे बर अंते जाय बर लागही। सब के रिपोट ल लान के ई करा डाक्टर ल दिखाबे।'' पाछू घलो डाक्टर मन जे–जे कथें, ओला ओमन के पीए मन एला छत्तीसगढ़ही म ही समझाथें। जेकलीन ह अंग्रेजी समझथे, गोठियाथे अऊ लिखथे घलो। लेकिन एकर पर्ची म पता ह छत्तीसगढ़ के लिखाय हे, तेकरी सेंथी डाक्टर के पीए मन एला छत्तीसगढ़ही म समझाईन। ए ह दुखियारी बन गे ऊँहा गे रहीस, ओकरे बर पावर नी झाड़ीस, चुपेचाप ओमन के गोठ ल सुनीस अऊ मानीस। पूरा चेक होय के पाछू बिहान दिन संतरा पट्टी ल हाथ म बांध के फेने अस्पताल गीस। संग के ह हरियर पट्टी बांधे रहीस। डाक्टर ह चेक करे के बाद कहीस, जेला पीए ह कहीस, ''तोर जउनी आँखि ह पूरा खराब होगे हे अऊ डेरी म मोतियाबिंद हे, लेंस लगाय बर लागही। डेरी आँखि के सर्जरी परनदिन कर दहाँ ओकर तीन दिन बाद एक घँ दिखा लेबे। ओको झी आँखि दान करोईया पाबे त या खरीद सकबे त एक हफता बाद सर्जरी करके नावा आँखि लगा देबो। ठीक हे।'' जेकलीन कथे– ''ठीक हे।'' एक दिन बाद डेरी आँखि म लेंस लग गे। फिर डाक्टर ह जेकलीन ल समझात हे, अहु ल

पीए कहीस– ''प्रेडनिजोलोन एसीटेट एक परसेंट एक हफता तक दिन म आठ घँ, अगला हफता दिन म छे घँ, अगला हफता चार घँ, फिर तीन घँ, दु घँ, फिर छठवाँ हफता दिन म एक घँ एकेक बूद डेरी आँखि म डालना हे। सिप्रोफलाक्सेसीन जीरो पाइंट तीन परसेंट एक हफता तक दिन म छे बार एकेक बूंद, फलर आई ड्राप दस एमेल तीन महीना तक दिन म तीन–तीन घँ एकेक बूंद डालना हे। जिंकोविट टेबलेट दिन म एक घँ पन्दरा दिन तक खाना हे। बुखार या दरद होही त पइरासिटा एक गोली तीन दिन तक ले लेबे। कोई भी ड्राप रहे, पाँच मिनट के गेप म डालबे।''

एति डराप डाले के काम चलत हे, ओति व्हाटसप के स्टेटस म जेकलीन ह एक मेसेज डाल दिस, ''एक आँखि के जरूरत हे, पईसा म। इच्छुक सुभचिंतक सम्पर्क करा, में अभी चेन्नई में हों, ईच ह मोर नंबर ए।'' दस दिन कहत म, आपरेसन थिएटर म जेकलीन के जउनी आँखि के जगा म नावा आँखि लग गे रहे, ओ भी बिना पईसा के। चमत्कार होगे, भगवान कोनो आदमी के रूप में आके फीरी म जेकलीन ल अपन के आँखि ल दे देथे। ठीक होय के बाद जेकलीन ह डाक्टर के पीए ल पूछथे, ''मोला आँखि दान करोइया कोनो ए, मोला बतावा।'' डाक्टर के पीए ह कथे, ''ओ ह मोला किरिया खवा के नाम–पता नी बताय बर कहे हे।'' रिपन बिल्डिंग के आघू अंगत के बावा लाज म ए ह कुल एक महीना रहीस, बीच–बीच म संकर नेतरालय चेकप कराय जाय। छेधा चेकप के बाद जे दिन डाक्टर ह पीए करा कवहईस कि ''अब तोर आँखि ल जाँच करे के जरूरत नीए, सब ठीक हे, तें जा सकत हस। छे महीना के गेय ल तें एक घँ जउनी आँखि ल चेक कराय आ जाबे या दूरिहा परही त हमरेच ब्रांच कलकत्ता घलो जा सकत हस। डेरी आँखि जेमा लेंस लगाय हन, ओमे जईसे कहे हों उसने ड्राप डालत रबे।''

जेकलीन ह ओईच दिन बिहान दिन बर जहाज बुक कर दारीस। छेधा चेकप होय के बाद जेकलीन ह फुरसत होगे। बारा बजे के बाद ए अऊ एकर केयर टेकर दुनों झी मरीना बीच घुमे बर गीन। पूर्व मुख्यमंत्री के मूरती के आघू म जेकलीन ह अचानक ले रूक जाथे अऊ नरिया दारथे– ''सर, सर!''

एक घँ के नरियाए म कोनो नी सुने। एक घँ अऊ नरियाथे– ''सर! एति जउनी बाखा अंगत।''

एक झन बुड़हऊ आदमी करिया चस्मा लगाय रथे, अन्ते अंगत ल देख के कथे– ''कोन, कोन? मोर आघू अंगत आ।''

''में ओ जेकलीन।''

''अच्छा बेटा, तें अस, अभी तोर कलेक्टरी कहाँ हे ? तें किसे ईंहाँ ?''

''रईपुर में हे। आँखि म समस्या आ गे रहीसे, त संकर नेतरालय आय रहें। होगे काम। कल वापस होथों। आप मन किसे हा सर ? ईंहाँ किसे ?''

''महुँ ठीक हों। थोरकुन आँखि ह झूँझरात रहीसे। उम्र होगे हे, तेकर सेंथी ए। अस्पताल के डाक्टर ह कहीस– 'जउनी आँखि के नस पूरा सूख गेहे, ठीक नी होय। डेरी के ह सूखे के सुरू होईसे।' अब मोला तीस परसेंट दिखथे। ओकरे बर तोला दूरिहा ले नी देख पाँय। सुगर अऊ कोलेस्ट्राल ल कंट्रोल राखे बर डाक्टर कहीसे। आयोटिम डराप दीसे, बिहना–संझा दु टेम लगाबे कहीसे। एहा आँखि के प्रेसर ल कम करही। एक ठन विटामिन गोली दीसे– नेरोबियान फोर्ट, रोज नास्ता के बाद खाबे कहिसे। सुगर कंट्रोल रही त डेरी आँखि ह अऊ खराब नी होय, ठीक तो नी होय, लेकिन अऊ नी बिगड़े।''

''ओह नो... अच्छा के साथ बुरा ही होथे, बुरा के साथ अच्छा। अपन खियाल राखिया सर। सन्सो मत करिहा। में हो न। मोर जब भी काम पड़ही, एक घँ मोला बता बस दहा। मोला अपन के बेटी ही समझा। सर, तुँहला सुरता हे कि नीए, एक घँ मोला चीला रोटी खवाय रहा दिल्ली में।''

ए सर ह दिल्ली म जेकलीन अऊ सीरीनयना ल कोचिंग देत रहीसे। ओ समय सर ह नी जानत रहीसे कि एहा काकर बेटी ए। छत्तीसगढ़ के ए कके सिरिफ जानत रहीसे। बीच म बनेच दिन बीत गेहे त ए ह जान दारिसे कि एकर दाई कोने अऊ ए ह छत्तीसगढ़ म कोन जगा के रहोईया ए। एकर मोबाईल नंबर घलो जानत हे। सर ह जेकलीन के स्टेटस ल रोज देखथे अब। जेकलीन के गोठ ल सुन के सर ह भावुक होगे। आँखि डाहर ले आँसू निकले लागीस। अपन के करिया चस्म ल हेर के डेरी आँखि ल पोंछिस। जउनी आँखि डाहर ले आँसू नी निकलीस। करिया चस्मा ल फेने पींध के लउठी टेकत–टेकत कुधरा भीतर के मारकेट अंगत चल दीस। जेकलीन अऊ ओकर संगवारी ह सर संग बईठ के सर ल कुछु नास्ता कराबो गुनत रहीन अऊ कुछु बीसा के गिप्ट देबो कहत रहीन। लेकिन सर ह चल दीस। सर ह भावुक होके अपन के आँसू पोंछे लागीस,

ई बीच म जेकलीन मन अपन के मन के गोठ ल भुला गीन। सर ह थोरकुस चलीस, फिर डेरी अंगत घुम के आने डाहर म चल के रोड आ गीस। आटो रुकवा के लाज आगे। जेकलीन मन मारकेट अंगत ल देखथें, सर नी दीखे। थोरकुस चल के घलो खोजथें, सर ह नी मिलीस। जेकलीन सोचथे– ''अभी सर करा मिलेन, ते ह मन के भरम ए का ? जागत–जागत कुछु सपना तो नी रहीसे ए ह ? ओ ह कोनो चमत्कारी बाबा तो नोहे, जेहा सर के रूप बना के हमन ल दिखाई दीस ?''

बनेच उलझन म दिखत हे जेकलीन ह। अपन के केयर–टेकर ल पुछीस– ''अभी सर करा हमन भेंट होय रहेन का ?''

केयर टेकर– ''हाँ, गोठ तो करे तें, एक झन करा।''

''सच में ?''

''हाँ, मेडम, सच में।''

कुछु गुने के बाद समंदर तीर अंगत जेकलीन ह दउड़े लागीस, अइसे लागीस, जईसे सर ह समंदर अंगत जात–जात पानी म बूड़ गीस। आँखि भी तो नी दिखे सर के। ओह दई, का करों ?

सर के काम हो गे रहे। बिहान दिन दस बजे कम्प्यूटर दुकान जाके तत्काल टिकट करथे, तीसरा दिन कहत म, अपन के घर आ जाथे। एदारी दिल्ली नी जाके रईपुर आथे। दिल्ली ले चेन्नई जाय के खानी कोचिंग सेंटर म ए ह रेजिकनेसन लेटर दे के आय रथे। कोचिंग देवई ल बंद कर देथे। जिनगी के छेधा लक्छ पूरा हो जाय रथे। मनेमन म जे वादा करे रहीसे, ओ ह पूरा हो जाय रथे। टेरेन म बईठ के मनेमन म सर ह बुदबुदाथे– ''मोर काम पूरा हो गे।''

❑❑❑

अब्दूल ह लकर–लकर चलत हे। तीन–तीन मिनट म पीछू अंगत ल लहुट के घलो देखत रहे। पीछू अंगत ले कोई नी आत रहीन। पुलिस के सायरन सुनाई दीस। अब्दुल ह रोड ले खालहे गद ले कुद दीस अऊ पूलिया के तरी में ढोल भीतर खुसर गे। सायरन के अवाज थोर–थोर कम होगे। अब्दुल ह पूलिया भीतर ले निकलीस, आक–पाक ल देखीस। कोई नी दिखीन, रोड म चड़ गे। वापिस ओई अंगत चले लागीस, जेती अंगत ल आय रहीस।

मुंधियार होत रहे। दादू ह भिंयाँ म पड़े हे। एकर मूड़ अंगत ले लहू बोहात हे। भेकलीन, दादू के बेटा, बहू मन थोर–थोर अवाज म रोत रहें। सुनयना अऊ एकर गवोईया–बजोईया मन, कुछ रिस्तादार मन ओईच मेर ठाढ़हे हें। सीरीनयना अऊ पुलिस दल मन अपन के काम ल करत रथें। ओई बीच म अब्दूल ह घलों जाके खड़ा होगे। एक घरी म पुलिस गाड़ी वापिस आगे। एक स्टार वाला पुलिस ह कहीस– ''नई मिलिस कोनो, ए डाहर।'' अब्दूल ह भीतरे–भीतर मुस्कुराईस अऊ मनेमन म कहीस– ''मोर पूरा बदला होगे आज। अब मोला पुलिस पकड़े सके चाहे झन पकड़े सके।'' मन म सोचत–सोचत लास ल संग म अहु उठाय लागीस। एम्बूलेंस म जोरीन। पोस्टमार्टम बर गाड़ी अस्पताल अंगत चल दीस। सीरीनयना, भेकलीन अऊ पवन पाछू–पाछू पुलिस गाड़ी म अस्पताल गीन। करमू, रामनाथ, सुनयना अऊ बाँचे–खोंचे सबो झन मन दादू के घर गीन, अब्दूल घलो दादू के घर गीस।

टेरेन ल उतर के बलदेव सर ह जईसे ही अपन के एरिया म पहुँचथे, दादू के घर म ओकर दसकरम के खबर ल सुनथे। ए ह सीधा दादू के घर जाथे। दादू के फोटो के तरी म 'भारत का संविधान' पुस्तक ल पीढ़हा ऊपर राखे हें। बाखा में एक ठन बउगा म फूल ह अधियाय रहे। ए सब ल देख के सर ह भारी खुस होथे। बरा पोरसे के जिम्मा सर ल मिलथें। सर के हाथ म चरिहा हे, जेमा बरा भरे हे। बरा के चरिहा ल धरे–धरे सर ह गुनत हे– ''पहिली, चंदनपान के बेरा म हिन्दू मन धार्मिक गरंथ रमायण ल पीढ़हा म राख के पूजा करें, ओकर चउपाई–दोहा ल पढ़हे–गाएँ, मईलोग मन ओकर आरती उतारें, पईसा चढ़हाँय। अब मइनसे मन सिक्छीत हो गीन हे, तर्क करे बर सीख गीन हे, कत्था–कहानी म विस्वास नी करत हें। का ह सही ए, का ह गलत हे; मइनसे मन सब समझत जात हें। सिक्छीत मइनसे मन अपन के अधिकार ल जाने बर, नियम–कानून ल जाने बर संविधान ल घलो पढ़हत हें अब। लेकिन कुछु आदमी मन पढ़ लिख के घलो कई ठी चीज म अंधविस्वास कर लेथें। जे चीज या जे घटना होय नीए या जेकर होय के कोनो संभावना आज के विग्यानिक जुग म घलो नी दिखत हे, तेकरो ऊपर बड़खा–बड़खा पढ़होईया–लिखोईया मन आँखि मूंद के विस्वास कर लेथें। एही हर सिक्छा के गलत फल ए।''

अचानक एक झन ह कथे– ''ले न कका, अब बरा ल बाँटे के सुरू कर गा।''

हड़बड़ाके सर ह कथे– ''अई, हाँ–हाँ।''

थोरकुस सोंचे के बाद सर ह कथे– ''रा न रे दऊ, थोरकुन गोठियान दे, तहाँ ले बाँटहाँ।''

सर ह कहे के चालू करथे– ''दऊ, बाबू, नोनी हो, नउकरी के परीछा मन म तर्क सक्ति के प्रस्न काबर रथे, जानत ह गा ? एकर बर रथे कि परीछारथी मन तर्क करे बर जाने, आँखि मूंद के कोनो घटना के पाछू झिन दउड़े; जेहा संभव नीए, तेला झिन माने। पहिली गुना कि का ह मइनसे मन ल भोकवा–जोजवा बनात हे, का चीज म मइनसे ह भुलाय परे हे, कोन डाहर ह मइनसे मन ल पाछू डाहर अंगत ले जात हे अऊ सिक्छा ले दूरिहा राखे के काम करत हे, धरम–संस्कीरिती के का चीज ह हमन ल गुलाम बनाए के कोसिस करत हे। एला भी गुना कि का पढ़हे ल हमन बुधियार बनबो, हमर अधिकार ल जानबो, हमन काकरो गुलामी करे से बचबो, संसद भवन म जाके राज करबो अऊ हमर विकास–प्रगति बर कानून बनाबो। अपन के पसंद के विसय ल तो पढ़बेच करा, संग म डॉ0 अम्बेडकर के बनाए संविधान ल घलो पढ़हा, जेला अभी रमायण के जगा म राखे ह। संविधान ह सिरिफ पूजा करे के अऊ सम्मान करे के ही गरंथ नोहे, एला पढ़ के समझे अऊ जानकारी ल अमल म लाय के पुस्तक ए, अधिकार ल जाने के किताब ए, हमर ऊपर होवत अन्याय ल दूर करे के पवितरा गरंथ ए, देस म समता लाए के विचार ए, छुआछूत दूर करे के हथियार ए, कलम धरे के ताकत ए, बोले के अजादी ए, सिक्छा पाए के आदेस ए घलो एहा। जय भारत संविधान, जय अम्बेडकर महान।''

धरे–धरे थक जाथे त सर ह बरा के चरिहा ल खालहे म राख देथे, पानी पीथे, करिया चस्मा ल हेर के पोंचछे, पींधथे तहाँ ले फेने गोठियाय के सुरू करथे– ''डाक्टर अम्बेडकर ह 'भारत का संविधान' के अनुच्छेद 5 म कोन–कोन भारत के नागरिक कहलाथें, ओला लिखे हे– जेमन भारत म रहत हें अऊ ओ खुद या ओकर दाई या ददा में से कोनो एक झन भारत में जनम लेय रहे या ओ ह भारत म कम–से–कम पाँच साल तक रहे, उसने मइनसे मन भारत के नागरिक कहलाथें। आर्टिकल 13 म बाबा साहब ह लिखे हे– जतकी अऊ जईसन मउलिक अधिकार हमन ल संविधान म मिले हे, संविधान लागू होय के पहिली ओकर से संबंधित सबो नियम, आदेस, प्रथा, रूढ़ही ह सून्य हो जाही अरथात् खतम हो जाही अऊ ई आर्टिकल 13 के बात ह आर्टिकल 368 के अनुसार संसोधन घलो नी हो सके। आर्टिकल 14 के अनुसार, कानून ह सबो मइनसे बर बरोबर ए, सरकारी नउकरी वाला रहे चाहे कोई भी रहे। आर्टिकल

15 म लिखे गेहे कि धरम, मूलवंस, जात, लिंग अऊ जनम स्थान ल लेके कोनो मइनसे ह आने कोनो मइनसे करा भेदभाव नी कर सके। सब झन के भलाई बर जे सड़क बनाए गेहे, कुआँ बनाए गेहे, दुकान खोले गेहे, होटल खोले गेहे, मनोरंजन के जगा बने हे, तरिया अऊ नहाय के घाट बने हे, जुरियाय के या गुड़ी करे के चउक बने हे, ओ सब जगा के उपयोग सब मइनसे मन बिन भेदभाव के करहीं। आर्टिकल 17 म छूआछूत ल सफा खतम कर देय गेहे। छूआछूत ल लेके कोई भी मइनसे ल अयोग्य नी ठहराय जा सके। आर्टिकल 18 म लिखाय हे कि राज्य ह सेना अऊ विद्या ल छोड़के आने कुछु भी पदमी कोनो ल नी देय सके। आने देस ले कोनो पदमी लेय के अधिकार कोनो ल नीए। सरकारी मइनसे मन रास्ट्रपति ल पूछे के पाछू ही आने देस ले पदमी, भेंट, उपलब्धि ले सकत हें। आर्टिकल 19 (1) म हमन ल अधिकार मिले हे कि हमन अपन के बात ल बोल सकत हन अऊ राख सकत हन, व्हाटसप म घलो अपन के बात ल राख सकत हन, बिन हथियार के सांति से एक जगा म सकला सकत हन, संगठन बना सकत हन, भारत म कहीं भी आ–जा सकत हन, कहीं भी रह सकत हन अऊ बस सकत हन, हमन कोनो भी धंधा कर सकत हन; कोई हमन ल कुछु नी कहे। आर्टिकल 20 (2) कथे कि कोनो अपराधी ल एकेच अपराध बर एक ले जादा घँ सजा नी देंय। आर्टिकल 20 (3) म लिखाय हे कि अपराधी ह खुद के विरूद्ध कोई ल गवाही देय बर जबरदस्ती नी कर सके। आर्टिकल 21 (क) म ए बात कहे गेहे कि सरकार ह छे से चउदा साल के लईका मन ल बिना फीस लेय सिक्छा देय के बेवस्था करही, सरकार ल ए बुता ल करेच बर लागही। आर्टिकल 22 (1) म ए लिखाए हे कि बिना कारण बताए पुलिस ह कोनो मइनसे ल जेल म नी धांधे सके। अपराधी ल ए अधिकार हे कि ओ ह अपन पसंद के कोनो वकील धर सकत हे, ओकर ले सलाह ले सकत हे। आर्टिकल 22 (2) कथे कि कोनो अपराधी ल जेल म जे समे राखे जाथे, ओई मेर ले किसनो कर के 24 घण्टा के भीतर म ही (जाय के समे ल छोड़के) ओ अपराधी ल लकठा के कोनो जज के आघू म ले जाय बर लागथे, पुलिस ह नी ले जाय सकही त ओकर बर जज करा ले अनुमति लागथे। सुप्रीम कोट ह डी के बासु केस म कहीसे कि गिरफतारी के सूचना परिवार या दोस्त मन ल देय बर होथे। आर्टिकल 23 (1) ह हमन ल बताथे कि फोकट म काम कराना अऊ जबरन काम कराना ह अपराध ए। आर्टिकल 24 के अनुसार 14 साल से कम उमर के लईका मन ल कोनो फेक्टरी, खदान या जेमा खतरा हे, ओमा काम नी कराए बर हे। आर्टिकल 25 के स्पस्टीकरण (1) म लिखाय हे कि सिख मन किरपाण धर सकत हें अऊ धर के

चल सकत हें, ए ह ओमन के धरम ए। आर्टिकल 26 म लिखाय हे कि मइनसे मन ल धरम संबंधी काम के बेवस्था करे के छूट हे, संग म ओमे के धन–संपत्ति के ऊपर विधि अनुसार राज करे के घलो छूट हे। आर्टिकल 27 ह कथे कि अपन धरम के परचार करे बर या ओला चलाय बर जे पईसा–कउड़ी मिलथे, तेकर ऊपर कोनो टेक्स देवई जरूरी नोहे। आर्टिकल 28 (1) ह हमन ल बताथे कि सरकारी स्कूल–कालेज म कोनो परकार के धरम संबंधी सिक्छा नी देहे बर हे। आर्टिकल 29 (1) म हमन ल अपन के भासा, लिपि अऊ संस्कीरिती ल बनाए रखे के अधिकार मिले हे। आर्टिकल 29 (2) ह सफा–सफॉ कथे कि जे स्कूल–कालेज मन पूरा सरकारी ए या सरकार डाहर ले सहायता पाथें, अईसे संस्था म पढ़हे बर भरती होय खानी धरम, जात, मूलवंस अऊ भासा ल लेके रोके बर नोहे। अनुच्छेद 32 ल संविधान के आत्मा कहे गेहे, एकर अनुसार यदि हमर मउलिक अधिकार ल कोई छिनत हे त हमन एकर बर सीधा सुप्रीम कोट जा सकत हन। अनुच्छेद 39 (क) में राज्य ह बाबू पिला, मई लोग अऊ सबो मइनसे मन ल जीए बर बरोबर अऊ पर्याप्त साधन पाय के अधिकार दीही, गरीब मन ल फोकट म कानूनी सलाह देय के अर्थात् ओमन बर वकील करे के जिम्मा सरकार के रही। एकरेच (घ) म मई लोग अऊ बाबू पिला दुनों ल बरोबर काम बर बरोबर वेतन मिलही कहे गेहे। (अंगा) म ए कहे गेहे कि कोई भी मइनसे ल पईसा के आवसकता संबंधी मजबूरी म अईसे काम नी करे बर हे जेहा ओकर उमर अऊ ताकत के हिसाब से ठीक नोहे। ए सबो के बेवसथा राज्य ह करही। आर्टिकल 46 म लिखाय हे कि राज्य ह अनुसूचित जाति अऊ जन जाति के मइनसे मन के पढ़हाई–लिखाई अऊ पईसा कमाय संबंधी भलाई के काम ल बढ़हाही, समाजिक अन्याय अऊ सबो परकार के सोसण ले रक्छा करही। अनुच्छेद 47 म सरकार ह सराब ल बंद करही, सराब ल सिरिफ दवा के रूप म ले सकत हें। संविधान के आर्टिकल 51 म हमन के मूल कर्तव्य ल बताय गेहे। एकर (क) म लिखाय हे कि भारत के सबो मइनसे मन ल संविधान ल माने बर लागही। (अंगा) के अनुसार, अइसे प्रथा ल छोड़े बर हे जेहा मई लोगन मन के अपमान करथे। एकर (झ) ह कथे कि हमन ल सरकारी संपति ल बचा के राखे बर हे, तोड़–फोड़ नी करे बर हे। (ट) म हमर अहू कर्तव्य ए कि हमर खुद के लईका रहे चाहे आने के लईका रहे, यदि ओकर लालन–पालन हमन करत हन, त ओला छे से चउदा साल तक पढ़हाबो। एकर (निया) म हमर ए कर्तव्य घलो बताय गेहे कि हमन व्यक्तिगत अऊ सामूहिक गतिविधि के सबो छेतरा म आघू बढ़हे के कोसिस करबो। अनुच्छेद 340 म समाजिक अऊ आर्थिक रूप ले पिछवाय ओबीसी मन के

आरक्छण के बेवस्था करे गेहे, ईच अनुच्छेद म पिछड़ा वर्ग आयोग के गठन भी होथे, ओबीसी म कोन–कोन जात के मइनसे मन आहीं, तेकर लिस्ट बनाय के अधिकार राज्य सरकार ल मिले हे। आर्टिकल 341 म एससी आयोग के गठन होथे अऊ एमन के आरक्छण के बेवस्था मिलथे, एससी म कोन–कोन जात के मइनसे मन आथें, तेकर लिस्ट ल भारत के रास्ट्रपति ह बनाथे। आर्टिकल 342 म एसटी आयोग के गठन होथे अऊ एमन के आरक्छण के बेवस्था मिलथे, एसटी म कोन–कोन जात के मइनसे मन आथें, तेकर लिस्ट ल भारत के रास्ट्रपति ह बनाथे। आर्टिकल 375 म ए सफा–सफा लिखाय हे कि देस के सबो अधिकारी–कर्मचारी मन ल संविधान के अनुसार काम करे बर लागही।''

अपन मुहुँ के गेलछा ल पोंछे के बाद सर ह कथे, ''कुछु बात अऊ बतात हों। घरेलू हिंसा अधिनियम 2005 के अनुसार, पत्नी ल ससुराल के घर म रहे के अधिकार हे, घर ह यदि पति के नाम म रही तभू ले पत्नी ल ओ ह नी निकाल सकें। एला राईट टू रेसिडेंस कथे। धारा 46 (4) के अनुसार, पुलिस ह बेर बुड़े के बाद अऊ बेर उवे के पहिली अरथात् रथिया के बेरा म कोनो मई लोग ल गिरफतार नी कर सके। गंभीर केस रही त जज के लिखित अनुमति लीही पुलिस ह, तब जाके मईलोग मन ल पुलिस ह रथिया के बेरा म गिरफतार कर सकत हें। धारा 46 (1) के अनुसार, कोनो महिला ल कोनो महिला पुलिस अधिकारी हर ही गिरफतार कर सकत हे, पुरूस ह नी कर सके। महिला पुलिस अधिकारी नी रही त पुरूस पुलिस अधिकारी ह महिला ल सिरिफ रोक सकत हे, छू नी सके। धारा 160 (1) के अनुसार, पुलिस ह कोनो मईलोग ल थाना बुलाके पूछताछ बर मजबूर नी कर सके अऊ 15 साल ले कम उमर के लड़की करा ओकर घर म ही कोनो महिला पुलिस के आघू म पुछताछ होही। धारा 51 (2) के अनुसार, सिरिफ महिला अधिकारी हर ही कोनो महिला के तलासी ले सकत हे, ओ भी सालीनता के साथ। धारा 498 (ए) म कहे गेहे, पति या ससुराल वाला मन यदि कोनो मईलोग ल दईज बर तंग करही त अपराधी ल तीन साल के सजा अऊ जुर्माना होही, एमे जमानत नी होय। दईज प्रतिसेध अधिनियम 1961 के धारा 3 अऊ 4 के अनुसार, दईज लेवई, देवई अऊ मंगई तीनों अपराध ए, एमा 5 साल तक सजा होथे संग म पन्दरा हजार रूपया या दईज के पईसा जेहर भी जादा रही ओतकी जुर्माना होथे। आईपीसी के धारा 304 (बी) म लिखाय हे कि दईज बर कोनो महिला ल, बिहा के सात साल के भीतर जान से मार देय ल

मारने वाला ल सात साल से लेके जिनगी भर बर जेल म धांधे के सजा मिलथे। आईपीसी के धारा 306 ह कथे कि यदि कोनो मईलोग ल दईज के कारण आत्महत्या करे बर उकसाय जात हे, त जेहा उकसाही तेला 10 साल तक जेल के सजा होही अऊ जुर्माना घलो होही। ए सब बर लकठा के महिला थाना म या सी ए डबलू यानी कि क्राईम अगेंस्ट वोमेन सेल या एसपी आफिस या 112 डायल करके या महिला हेल्पलाईन नंबर 1091 म काल करके या आनलाईन नेसनल कमिसन फार वोमेन के पोर्टल ल खोल के सिकायत कर सकत ह। एकर बर दईज में जे समान देय रथा ओकर लिस्ट, बिल, फोटो–वीडियो लागथे। काल रिकार्डिंग, व्हाटसप चेटिंग जेमा दईज मांगे के सबूत रहे, दिखाय बर घलो लाग सकत हे। बिहा के फोटो घलो लागथे, ई ह तो बिहा होय के सबूत ए। डीव्ही एक्ट 2005 के धारा 498 (ए) के अनुसार मईलोग मन ल ए भी अधिकार मिले हे– 1. प्रोटेक्सन आर्डर – पति मार–पीट नी कर सके, 2. रेसिडेंस आर्डर – ससुराल के मन मईलोग ल घर ले नी निकाल सकें, 3. मेंटेनेंस – मईलोग ल हर महीना खर्चरी मिलही, 4. कस्टडी आर्डर – लईका मन के देखभाल करे जाथे। ए सब ह बिना एफ आई आर करे 60 दिन म मिल जाथे। अच्छा, एक बात अऊ सुना, अगर महिला मन अपराधी हो जाथें त एमन बर का नियम ए ? जेल में धांधे के बाद महिला मन ल कुछु अगराहा सुरक्छा दिए गेहे– महिला अऊ पुरूस कयदी मन ल एकेच लाक अप में नी रखे जाए, रथिया के बेरा म महिला कयदी के सुरक्छा बर संग म महिला पुलिस रथे। अगर महिला गर्भवती हे त जमानत असानी ले मिल जाथे अऊ यदि फाँसी होवईया रथे त ऊहू ह टल सकत हे। गेर जमानती धारा लगे रथे तभू ले महिला, बीमार मइनसे अऊ सोला साल ले कम उमर के लईका मन ल जमानत मिल सकत हे। अगर पुलिस नियम तोड़ देथे त 112 या 1091 म काल करके सूचना देवा, पेसी के खानी जज करा सिकायत करा, मानवाधिकार आयोग म सिकायत करा, फिर गिरफतारी ह गेरकानूनी घोसित हो जाही। हिन्दू मन बर जे नियम–कानून हे, ऊहू ल सुना। पिता के संपति म बेटी मन ल बेटा के बरोबर अधिकार मिले हे। सादी के बाद घलो ए अधिकार ह नी खतम होय। ए ह 2005 ले लागू हे। यदि बाप ह बिन वसीयत लिखे मर जात हे, त बेटी ल घलो बेटा, पत्नी, दाई के बरोबर हिस्सा मिलही। अईसने पत्नी ल घलो बरोबर हिस्सा मिलथे, एला 'विधवा का हक' कथें। दाई के संपति म घलो बेटी–बेटा ल बरोबर अधिकार रथे। सादी म दईज

के रूप में जे समान मिलथे, पईसा अऊ गहना मिलथे, ओ सब ह सिरिफ ओ महिला के ही संपति होथे, जेकर सादी होय रथे। ससुराल के मन या ओकर पति ह ओ सब समान ल नी ले सके। 2005 के बाद तो दईज मंगई ह घलो अपराध ए। मुस्लिम मन में थोरकुन अलग होथे– यदि एक बेटी हे त बेटा के आधा, बेटी ल मिलथे। जईसे– पिता करा कुल तीन लाख के संपति रहे म बेटा ल दु लाख मिलही, बेटी ल एक लाख मिलही। इसाई अऊ पारसी म– बच्चा रही त विधवा ल एक बटे तीन हिस्सा, बच्चा नीए त पूरा संपति विधवा ल मिल जाथे। बेटी ल बेटा के बरोबर हिस्सा मिलथे।''

पानी पीए के बाद सर ह फिर कथे– ''अभी 1 जुलाई 2024 ले भारत म नावा कानून लागू होगीस ए। एला भारतीय न्याय संहिता अरथात् बी एन एस कथें। एहा इंडियन पेनल कोड अरथात् आई पी सी के जगा म आईसे। गलत ईरादा ले कोनो महिला ल हाथ लगाए म या ओकर कपड़ा खींचे म बीएनएस के धारा 74 लगथे। गंदा ईसारा करे म, अस्लील कमेंट करे म, पोर्न वीडियो दिखाय म या सहवास के मांग करे म बीएनएस के धारा 75 लगथे। कोनो मईलोग ल जबरन न्यूड कर देय ल धारा 76, नहात या कपड़ा बदलत देखे या फोटो खींचे ल धारा 77 लगथे। पीछा करे ल या काल–मेसेज करे ल धारा 78 लगथे। सार्वजनिक जगा म अस्लील बात करे ल धारा 79 लगथे। आनलाइन अस्लील मेसेज भेजे या फोटो भेजे ल धारा 67 के अनुसार 3 साल के जेल अऊ 5 लाख जुर्माना होथे। योन सामग्री भेजे ल धारा 67 (ए) म 5 साल जेल अऊ 10 लाख जुर्माना होथे। निजी फोटो ल बिना मर्जी के सेयर करे ल धारा 66 (ई) के अनुसार 3 साल के जेल अऊ 2 लाख के जुर्माना हो जाथे। कोनो मईलोग के सिकायत ल महिला पुलिस हर ही लिखथे। बयान घलो महिला जज/पुलिस के आघू म होथे। जरूरत परे म महिला डाक्टर हर ही 24 घंटा म मेडिकल जाँच करथे। जे मईलोग ह पीड़ित रथे, ओकर बयान परदा म होथे, केमरा लगे रथे अऊ ओला घरी–घरी बलाय घलो नीही। पीड़ित मईलोग के नाम अऊ फोटो कोई करा नी छापें, ए ह आईपीसी के धारा 228 (ए) के अनुसार अपराध होथे, एमा 2 साल तक के सजा हो जाथे। अठारा साल के कम उमर के नोनी मन के मामला म पास्को एक्ट लगथे। एमे लड़की मन के सहमति ल सहमति नी माने जाए अऊ अपराधी ल कड़ा सजा होथे। पास्को एक्ट अऊ आईपीसी के धारा 354, 354 (बी), 354 (सी), 354 (डी) लगे ल पईसा लेके केस वापस नी ले सके। अगर केस ह लबारी साबित हो जाथे त आईपीसी के धारा 211 के अनुसार 7 साल तक के सजा हो

सकत हे। भारतीय नागरिक सुरक्छा संहिता ल बी एन एस एस कथें। एकर धारा 35 के अनुसार 7 साल ले कम सजा के अपराध म सीधा गिरफतार नी करें, पहिली नोटिस देथें। धारा 47 के अनुसार, पुलिस ह बताथे कि ओ ह का गलती करे हे अऊ एमा जमानत हो पाही या नीही। धारा 53 के अनुसार, गिरफतार मइनसे ह पिटान के सबूत राखे बर मेडिकल के मांग कर सकत हे। एकर धारा 58 के अनुसार, 24 घंटा के भीतर म अपराधी ल जज करा ले जाय बर ही लागथे, नहीं त, गिरफतारी ह गएरकानूनी हो जाथे।''

मुहुँ–कान पोंछे के बाद, सर ह फेर कथे, ''रोज के जिनगी म जेहा काम आही, ओला बतात हों अब। गारी देय ल या सार्वजनिक जगा म अस्लील हरकत करे ल बीएनएस के धारा 296 के अनुसार 3 महीना के सजा होथे। कोनो ल थपरा मार देय ल, मार–पीटान कर देय ल या साधारण चोट आ जाय ल बीएनएस के धारा 115 के अनुसार एक साल के जेल अऊ जुर्माना होथे। काकरो रद्दा रोक देय ल बीएनएस 126 के अनुसार एक महीना जेल के सजा हो जाथे। मोबाईल या पर्स चोरी करे म या साधारण चोरी करे म बीएनएस के धारा 303 के अनुसार तीन साल जेल के सजा होथे। काकरो पईसा ल ठग के ले लेय ल या काकरो संग धोखाधड़ी करे ल बीएनएस के धारा 318 के अनुसार 7 साल जेल के सजा होथे। झगड़ा करे बर कोई ल जानबूझ के बेइज्जत करे म बीएनएस के धारा 352 के अनुसार 2 साल जेल के सजा हो जाथे। जान से मारे के धमकी म, चाहे ओ ह सीधा आघू म बोले जईसे– 'तोला जान से मार दहाँ', 'तोर कुटी–कुटी कर दहाँ', चाहे ओ ह व्हाटसप म मेसेज करके कहे या काल म कहे, चाहे चक्कू–हथियार दिखा के कहे, चाहे गुमनाम चिट्ठी म लिख के भेजे, चाहे आने के माध्यम ले ओ ह कहे जईसे– 'ओला क देबे, निपटा दहाँ ओला', बीएनएस के धारा 351 (3) के अनुसार अपराधी ल 7 साल के सजा या जुर्माना या दुनों हो जाथे। साधारण धमकी म दु साल तक के सजा होथे। पईसा मांगे बर धमकी देय ल बीएनएस 308 के अनुसार 7 साल से लेके 14 साल तक के सजा होथे। सोसल मीडिया म धमकी देय ल बीएनएस के धारा 351 के अनुसार 3 साल से लेके 10 साल तक के सजा हो सकत हे। कोनो मईलोग ल धमकी देय अऊ पीछा करे म बीएनएस के धारा 78 अऊ 351 के अनुसार 5 साल से लेके 12 साल तक के सजा हो जाथे। गारी देके धमकी देय ल बीएनएस 352 के अनुसार 2 साल अगराहा जेल के सजा होथे। एससी या एसटी के मइनसे मन ल धमकी देय ल बीएनएस 351 के अनुसार 6 महीना जेल के सजा होथे।

सर ह एदारी डेरी अऊ जउनी अंगत घुमा के नरी के नस ल फोरीस, तहाँ ले फेर कहीस, ''अपन के बचे खातिर घलो कुछु धारा बने हे। अपन के जान अऊ समान ल बचाय के खातिर हमला करे ल बीएनएस के धारा 34–44 के अनुसार ए ह अपराध नी कहाय। रथिया कोनो चोर ह यदि काकरो घर म घुस गे त ओला पीट सकत ह, अपराध नोहे। अगर तुमन अपन के पत्नी, लईका या डोकरी–डोकरा दाई–ददा ल खर्चा–पानी नी देत ह त ओमन बीएनएसएस के धारा 144 के अनुसार गुजारा भत्ता मांग सकत हें। यदि कोनो ल गिरफतार होय के डर हे त ओ ह बीएनएसएस के धारा 482 के अनुसार अग्रिम जमानत ले सकत हे। अगर पुलिस तुँहर केस ल नी लिखत हे अरथात् एफ आई आर दर्ज नी करत हे त बीएनएस के धारा 199 के अनुसार पुलिस ऊपर केस हो जाही, ओला 2 साल जेल के सजा हो जाही। अऊ काम के चीज बतात हों, तुँहर ओटीपी या पासवर्ड चोरा के कोई पईसा निकाल लीही त ओला आईटी एक्ट धारा 660 के अनुसार 3 साल जेल के सजा हो जाही। एक बात अऊ हे, दारू पी के गाड़ी चलाहा त मोटर वेहिकल एक्ट 1988 के धारा 185 के अनुसार 10 हजार जुर्माना या 6 महीना जेल के सजा हो जाही, एला बने धियान दिहा। काकरो घर या जमीन म जबरन कब्जा करे ल बीएनएस के धारा 329 के अनुसार 3 महीना जेल के सजा हो जाथे। ट्रांसफर आफ प्रापर्टी एक्ट के धारा 106 के अनुसार मकान मालिक ह किरायादार ल बिना नोटिस देय घर ले नी निकाल सके, ओला 15 दिन पहिली नोटिस देय बर लागथे। लेवा ठीक हे अब। जय जोहार, जय संविधान।''

एकर पहिली दादू के बेटा–बहू मन, सीरीनयना अऊ सुनयना मन बोल दार रथें। भेकलीन ह बोल के घरंग बेवस्था देखे चल देय रथे, सर के बोले के खानी ए ह नी रहीस। जेकलीन घलो बोल दार रथे। ए ह चेन्नई ले सीधा कलेक्टरेट जाथे, जायनिंग करथे, अपन दई के घर घलो नी जा पाय रहे, दु दिन बनेच कन फाईल ल निपटाय के बाद दादू के 'बरा–फूल' कार्यकरम म सीधा जाथे। ओ दिन घलो जेकलीन ह चस्मा पींधे हे। डाक्टर ह तीन महीना चस्मा लगाय बर कहे हे। बोले के बाद सब झन मन बउगा के फूल ल निकाल–निकाल के दादू के फोटो म चड़हा दार रथें।

सर ह बोले के बाद पूछथे– ''अऊ कोई ल बोले बर हे ?''

एकझन– ''सब बोल दारे हें कका।''

सर ह फोटो म फूल चड़हाथे। चड़हाय के बाद बरा बाँटे के काम ला सुरू करथे। धीरे–धीरे बरा बाँटथे। दूदी ठन सब ल देथे। छेद होय के बाद सर ल एक झन अनजान मईलोग ह पोट चमकाथे, अंगठी फोरथे, ओ मईलोग ह चार ठन बरा नी पाईस त पहिली गारी देथे, पीछू समारथे। फेर पीछू, ओ ह सर ल रोवत देखथे त पछताथे घलो। ओ मई लोग ह समाज सुधारक भेकलीन रथे। ए, सतलोकी दादू अऊ सतलोकी रजनी के ही काम ए कि आज सिरिफ बरा अऊ फूल म ही दसकरम ह होईस। दादू के अचानक मडर होय के कारण एकर 'आखिरी भेंट' कार्यकरम नी हो पाईस, तेकरी सेंथी बरा–फूल म जादा आदमी आय रहीन। रजनी के समे 'आखिरी भेंट' होय रहीस, ओखानी दसकरम ह कम आदमी म सांति से होगे रहीसे।

ई भकली ह कभू–कभू बरा के लोभ कर दारथे, ओकरे सेंथी विधवा होय के बहाना करके करिया चस्मा वाला कका करा मजाक करीस। मजाक–मजाक म संस्कीरिती के अवगुन ल घलो बताईस। लेकिन सर ह ओईखानी बचपन के असरीरी पियार ल सुरता करत रहे। मईलोग के गियान ह चूल्हा के पेंदी अंगत जात रहे अऊ एकर डेरी आँखि डाहर ले आँसू झरत रहे। सर ल एक बात के दुख हे कि ए ह अपन दिल के संगवारी ल नी देख पाईस। सायद ई बात ह एकर दिल ल रोवाथे, एकरे सेंथी आँसू ह अपने आप झरत हे। पहिली, कह नी पाईस अऊ अब देख नी पाथे। ओ ह सर ल देख सकत हे, लेकिन एकर आँखि ह ओला चिन नी पाय। कुछु नी होय। एकर काम होगे हे। ओकर बेटी के जीवन ल संवारे बर ए ह अपन के जीवन ल त्याग दीस, अपन आँखि ल ही ओला दे दीस। एकर काम होगे। अब बलदू के आँखि ह रोज जकली के आँखि बन के भकली ल देखत रही।

आँखि म कम दिखथे, तेकर सेंथी ए ह हपटत–गिरत अपन घर ल गीस। जाय के बाद रईपुर बस्ती अंगत अऊ कभू घूमे नी जाय सकीस, एला ओ दिन के बाद कोनो नी देख पाईन, आँखि ह बनेच कमजोर होगे रहे। ठीक से कुछु ह दिखत नी रहे।

❑❑❑

एति, अब्दूल ह दादू के माटी के दिन अस ल कंधा देय के बाद, ओकर ‘बरा–फूल’ कार्यकरम म घलो सामिल रहीस। ए ह फोटो म फूल नी चड़हाईस, लेकिन बरा ल जरूर खाईस। ‘बरा–फूल’ होय के बाद ए ह ओईच डाहर म जाथे, जे डाहर म दादू के मडर के दिन जाय रथे अऊ थोरकुस के गेय ल पुलिया मेर ल फिरे रथे। पुलिया करा जाय के बाद आक–पाक ल देखीस, कोई नी दिखीन त पुलिया तरी अंगत कूद गे। ढोल भीतर म खुसर गे। ढोल म मड़िया के चलत–चलत जात हे, एक ढोल के बाद दूसर ढोल, दूसर के बाद तीसर, अईसने सात ढोल ल पार करे के बाद आठवाँ ढोल ह बंद रहीस। ए ढोल म एक ठन भुलका रहीस। भुलका करा अब्दूल ह अपन के आँखि ल लेगीस। ओति अंगत एक ठन केमरा लगे रहे, ओ ह हमेसा चालू रथे, ओ ह एकर आँखि के स्केन करीस। दु मिनट के गेय ल बंद ढोल ह खुल गे। ओ पार अब्दूल ह चल दीस। ढोल ह बंद होगे। अब अब्दूल ह एक ठन खाली कमरा म हे। ऊँहा एक ठी एटीएम जईसे मसीन हे। मसीन म अपन के मोबाईल ल रख दीस, ओ ह मसीन के अंदर चल दीस, ओकर जगा म एक ठी नावा मोबाईल निकलीस। अब्दूल ह ओला धर लीस। पहिली के मोबाईल म सिरिफ बाहर के आदमी मन ले गोठ होय, भीतर के आदमी मन करा सिरिफ मेसेज जाय। मेसेज जाय के बाद पाँच सेकेण्ड म ही सेंट मेसेज ह आटो डिलीट हो जाय। ओति भीतर अंगत जेला मेसेज जाय ओ ह एक ठन कम्पूटर म दर्ज होय, ए ह नी मिटाय। मेसेज देखे के बाद बाहर के आदमी करा सहायता पहुँच जाय। अईसने मेसेज करके अब्दूल ह जम्मू म रहत रहीस तेखानी रिवाल्वर पाय रहीस। ए नावा मोबाईल के नेटवर्क ह बाहर नी फइले हे, सिरिफ भीतर ही काम करथे, ओ भी सिरिफ फईका खोलवाय बर। एक आदमी ह दूसर आदमी करा डारेक्ट भेंट करथे। नावा मोबाईल म 32 डायल करे के बाद एक बड़खा हाल बर फईका ह खुलीस। जईसे ही ए ह बड़खा हाल म गीस, ऊँहा के आदमी मन ताली बजा के एकर स्वागत करीन। एक झन लम्बा दाड़ही वाला ह कहीस, ‘‘साबास अब्दूल, तें अपन काम ल पूरा करे। काजल अऊ ओकर बाप दादू ल मार के हमर सीना ल चउड़ा कर देय। अब हमर जेपी म खूब नाम होही। लेकिन तें अभी कुछु दिन ई मेर अंडर ग्राउण्ड र। कुछु दिन बाद निकलबे अऊ नावा काम ल अंजाम देबे। ठीक हे, अब्दूल।’’ अब्दूल कथे, ‘‘ठीक हे सर, जेपी।’’

अब्दूल ह हाल के भीथी अंगत जाथे, त देखथे पूरा माहोल ह आने होगे रहे। ए ह कई साल पहिली ईंहें ट्रेनिंग लेय रहीस। ट्रेनिंग पूरा होय के बाद बाहर

निकलथे अऊ आठेच दिन म ए ह काजल ल पटा दार रहीसे। अभी ई बड़खा हाल के भीथी तीर अंगत कई ठी नावा–नावा मसीन लग गेहे। एमा अलग–अलग प्रकार के गन बनत हे। सब ह एलेक्ट्रानिक ए। निसाना साधे बर नी लागे एमा। कुछु कोड लिखत ही गोली निकलथे अऊ ओला खोज के मार देथे, अवाज बिल्कुल नी आय। बस एक ही सर्त रथे कि ओ आदमी ह चुने हुए दूरी के रेंज म रहे, चाहे ओकर जेब या पर्स म अधार कार्ड ह रहे या झन रहे। कोड के रूप म अधार नंबर ल लिखत कि ओ आदमी के आँखि के पुतली ल गन के सिस्टम ह रीड कर दारथे फिर गोली ल ओला मारे के कमाण्ड मिल जाथे। गन म टाईमिंग घलो सेट करत बन जाथे। अगर बीस मिनट बाद के टेम सेट कर देय ल बीस मिनट बाद गोली ह छूटही अऊ ओ आदमी ल खोज के मार दीही। टेम नी सेट करे ल चोबीस घंटा म कोई भी टेम अपन सुविधा देख के गन ले अपने आप गोली निकलथे अऊ ओ आदमी ल कतको भीड़ रहे लग जाथे। अगर ओ आदमी ह दूरी के रेंज ले बाहर निकल जाही त गोली ह निकलबेच नी करे, कमाण्ड ह रिजेक्ट हो जाथे। अऊ बनेच कस खूबी हे नावा गन म। जईसे, जे आदमी मन वो संस्था के पंजीकृत सदस्य हें, ओमन के जउनी हाथ के इण्डेक्स फिंगर के निसान ह एक ठी बड़खा गन म दर्ज हे। ओई आदमी मन ही सहायक गन मन ल आपरेट कर सकत हें अर्थात् ओमन अधार नंबर डालहीं त डालेक खानी अंगठी के निसान के टच ले ही वो अंक ल गन ह एक्सेप्ट करही, कोई भी आदमी ह अधार नंबर ल गन म लिखही त गोली नी निकले।

बड़खा हाल के पाछू अंगत जाय के सीधा डाहर नीए। हाल मेर ले कहीं भी जाना रथे त ओमन नावा मोबाईल म दु अंक के नंबर डायल करथें, फिर ओ फईका ह खुलथे। एक साथ कई झन आदमी मन यदि डायल करत हें त एके घँ कई ठन फईका ह खुल जाथे, लेकिन जाय खानी ओई आदमी हर ही ओ मुहटा म पेल पाथे, जेकर हाथ म ओ मोबाईल रथे, जिहाँ ले नंबर डायल होय रथे। अगर कोई आदमी ल मयखाना जाना रथे त ओ ह 20 डायल करथे, बरा–सोंहारी रोटी खाय बर पाकखाना जाना रथे त 12 डायल करथे, गुसलखाना जाना रथे त 46 डायल करथे। भीतर मिनी पार्क हे, सबो चीज मिलथे ऊँहा। ऊँहा ले आय के डाहर ह सरल ए, जाय के डाहर ह बड़ कठिन ए। अब्दूल ह ओई कठिन डाहर ले पेले रहीसे। ऊँहा कोनो सरकार के नेटवर्क काम नी करे, सिरिफ ओईच मन के नेटवर्क चलथे। अब पुलिस अब्दूल ल सर्च नी कर सके।

अब्दूल ह ऊँहे रुक गे। एकर बल्दा म एक झन आने आदमी ह बाहर निकलथे। निकले के डाहर अलग हे। ओकर नाँव फिरदोस हे। बाहर आके ओ ह एक ठन पान ठेला म बईठ गे अऊ पेपर पड़हे लागीस। पेपर के ओ ह अईसे–अईसे घटना ल एक ठन डायरी म नोट करीस, जेमा ओकर धरम के अनुसार बदला लेय के गुंजाईस दिखीस। अईसने करे के आदेस ओला ओकर संस्था ले मिले रहीसे।

❑❑❑

दादू के 'बरा फूल' कार्यकरम होय के बाद, जेकलीन अपन के बंगला नी जाके अपन दई के घर गीस। भेकलीन ह पहिलीच चल दे रहीसे। हाथ मुहुँ धोय के बाद, जेकलीन ह अस्पताल के सब हाल–चाल ल बताथे। कथे– ''दई, एक अनजान मइनसे ह मोला आँखि दान करीस। डाक्टर ल ओ ह अपन के नाम–पता कुछु नी बताईस। देख न, अब ओई आँखि म मोला मस्त दिखत हे।''

भेकलीन – ''बता तोर आँखि ल, किसना दिखत हे ?''

जेकलीन चस्मा ल हेरथे। भेकलीन ह ओकर जउनी आँखि ल देखथे। तीर ल जाके बने देखथे। अपन–आप ओकर मुहुँ ले निकल जाथे– ''ए दाई! एहा तो बलदू के आँखि ए। देख न नीला रंग के बिन्दु हे सादा भाग म। में ओकर आँखि ल अच्छा से चिनथों।''

जेकलीन – ''कोन बलदू ?''

भेकलीन – ''मोर बचपन के संग। मोला ओ ह दिल से मया करे। जेखानी में लईका रहें, मोला आगि धरे ले बचाय रहीसे ओ ह। ओई समे ओकर करा में ओकर आँखि ल मांगे रहें। ओ ह हाँस के टाल देय रहीसे। आज ओ ह ओकर ओई आँखि ल जीते–जीयत तोला देके अपन दिल के वादा ल पूरा करीसे। (रोवत–रोवत) तें काबर अइसने करे बलदू ? कोई अपन के आँखि ल दान करथे का ? दान कर दीही कोई ह, त कामा देखही ओ ह संसार ल ? हत् रे पगला! तें मोला अतकी मया करत रहे, में जान नी पाँय। में ओकर मया म फँस गेंय, जे ह मोला जिनगी के मँझधार म एके झी छोड़ के चल दीस अऊ कभू मोर सुरता नी करीस। हाय रे मोर किस्मत!''

आज भेकलीन ह भकली होके रोवत हे। जेकलीन अबक् होके दई के रोनहा मुहुँ ल देखत हे। चुप दई घलों कहे सकत नीए। कोई खानि दई अंगत ल

देखथे, त कोई खानि दरपन म अपन के आँखि के नीला बिन्दु ल देखथे। कुछु गुन के अचानक मोबाईल ल धर लेथे अऊ दिल्ली आईएएस कोचिंग के हेल्पलाईन नंबर डायल करथे। ओती ले जवाब आथे– ''अच्छा, ओ रीजनिंग वाले सर तो मिस्टर बलदेव जी रहीसे। अभी थोरकुन दिन पहिली अपन के आँखि के ईलाज बर चेन्नई गीसे लेकिन हमन ल ए समझ नी आईस कि ईलाज बर गीस त छुट्टी लेथीस, ओ ह तो रिजाईन करके सब दिन ब चल दीस।'' जेकलीन ह जकली होगे रहे अब। संकर नेतरालय के हेल्पलाईन नंबर डायल करीस अब। कलेक्टरी रोब म पूछीस त ऊँहा के कर्मचारी ह सब उगल दीस। कहीस– ''मिस्टर बलदेव हेज डोनेटेड हीज ओन आई रिसेंटली।'' जकली के मुहुँ ल निकल जाथे– ''ओह नो!''

भकली भर्राय आवाज म पूछथे – ''का होगे बेटी ?''

जकली – ''दाई, ओ अंकल कोन ए, कहाँ हे ? सब समझ आगे। दिल्ली कोचिंग के समे जे ह मोला अपन टिफिन देके चिला रोटी खवाय रहीसे, ओहर ओई बलदू अंकल ए। चेन्नई के मरीना बीच म जेकर से मोर भेंट होय रहीसे, ओई सर ह बलदू अंकल ए। ओई बलदू अंकल हर ही मोला आँखि देईसे। मरीना बीच म ओ ह मोला चिन नी पाईस। काबर कि आँखि निकल जाय के कारण ओ ह ठीक से देख नी पात रहीसे। ओ ह ओ दिन कहे रहीसे– 'मोर काम होगे'। ओ दिन में ओकर ई बात के अर्थ नी समझ पाँय रहें। आज सब समझ आत हे। ओ ह अपन के आँखि ल निकलवा के, अँधवा होके, मोला जीवन देके, अपन काम कर दीस। ओ दिन तभे तो डेरी आँखि के आँसू ल ही पोंछीस, जउनी आँखि ल तो मोला दे दार रहीस, कहाँ ले आँसू निकलही पथरा के आँखि ले ? ए संसार ल त्याग के मोला संसार देवईया ओ अंकल ह कोई दिव्य आत्मा ए दई। आज दादू अंकल के 'बरा फूल' म जेहा संविधान के बारे म सिक्छा दीस अऊ बरा बाँटीस, ते ह आने कोनो नोहे, बलदू अंकल ए दई।'' अब बर जकली घलो रोवत हे।

भकली – ''सही कहे बेटी। बोलेक खानी में ह तो ओकरा नी रहें, घरंग आ गे रहें, लेकिन बरा बाँटे के समे रहें। आज बरा बर में ओकर से लड़ें, त मन म ओ ह नी लेके कोनो अन्ते अंगत गुनत रहीस अऊ गुनत–गुनत रो दारीस। रोय खानी सिरिफ डेरी आँखि ल ही ओ ह पोंछीस। में ओला चिन नी पाँय, मोर बुद्धि सिरा गे रहीस। लेकिन ओ ह तो मोला चिनथीस! कईसे चिनथीस ? नानकन के देखे हे मोला, कईसे चिनथीस ? ओकर करा तो आँखि घलो नीए। एक दिन

होटल म एक झन गरीभा लड़का आय रहीस, बनेच हो–हल्ला होय रहीस ओ दिन। में ओकर अवाज ल एक घँ सुने, बलदू कस लागीस, लेकिन धियान नी देंय। धियान काबर देथें ? मोर धियान ह तो सुंदर अंगत पूरा चल दे रहीसे। आज ओई बलदू ह अपन के मया के खातिर बेटी ल अपन के आँखि ल दान कर देहे।'' भकली के आँसू गिरत हे अऊ भूतही बरोबर बड़बड़ाथे –

''तोर सुरता म मोर नयना, रोवथे दिन रेना।
दरस करा दे बलदू, तरसे तोर फूलकेना।।

धर–धर–धर आँसू गिरत हे, जियरा म आगि धरत हे।
कोन बुझाही डाल के पानी, बिन बलदू, भकली मरत हे।।

मोर कोरा के तोता, मोर सुध तें लेना
दरस करा दे बलदू, तरसे फूलकेना।।

जे रद्दा म तें चले, ओ करा में बईठे हों।
कब फिरबे गुन के सुक्खा हाड़ा होगे हों।

सिसक के रोवय, तोर पिंजरा के मेना।
दरस करा दे बलदू, तरसे फूलकेना।।

आँखि म तें झुले, तोर चलना अब्बड़ खुले।
तरिया भरगे आँसू म, मोर बिरहा तें ले ले।।

कोन जगा होबे तें, तोर बिन जियों न।
दरस करा दे बलदू, तरसे फूलकेना।।

❑❑❑

दाई भेकलीन अऊ बेटी जेकलीन आज भकली–जकली होगे हें। आज एमन मया के असली रूप ल जानीन हें। सुन्दर जो करीस ओ ह कभू माफ करे के लायक नोहे अऊ बलदेव जो करे हे ओला कभू भुलाय नी जाय। एक अंग सुन्दर हे, जे ह सरीर ल मया करीस, अपना बन के अऊ सपना दिखा के भकली ल बीच रद्दा म छोड़ दीस। अपन के किडनेप खुद करा के एकर ले पीछा छुड़ा लीस। ओकर जईसे मया दुनिया म कोनो ल झन होय। दूसर अंग बलदेव हे, जे ह भेकलीन ल कभू नी छुईस। अपन के मया ल कभू कह के नी बताईस। अपन के मयारू ल सहयोग नी कर पाईस, त ओकर बेटी ल सहयोग करीस। अईसे

सहयोग कि आने कोनो नी कर सके, ओ भी बिन बताय। ए ह दिल ले मया करीस अऊ बिन देखे, बिन बताय अपन मयारू के जिनगी ले चल घलो दीस। अईसने मया सबो ल मिले। भकली–जकली के आघू म बलदू ह बरा बाँटथे अऊ घर चल देथे, लेकिन अब ओला कोई देख नी पाथें। कोनो कथे, ओ ह दिव्य–सिद्ध पुरूस ए, जेहा कभू ईंहाँ त कभू ऊँहा दिखथे। कोनो कथे, ओ ह भगवान बुद्ध, ईसा जईसे भगवान ए, जेहा कभू–कभू जनम लेथे ई संसार म।

सच बात ए हे कि ओ ह एक मइनसे ए, जे ह नी मरे ए तभू ले जकली ह अपन घर के आघू म चउक म ओकर बड़खा मूर्ति स्थापित करवाय हे। ओ चउक के नाम अब 'बलदू चउक' रखे गेहे। बलदेव ह नी मरे ए लेकिन एकर नाम से चउक बन गे।

बहुरूपिया ह आने–आने नाम ले अऊ आने मईलोग मन ल फँसाय के काम ल जारी रखे हे। पुलिस एला पकडथे, तहाँ ले गवाह बिना अऊ रिपोर्टकर्ता के बिना ए ह छूट जाथे। ई संसार ले धोखाधड़ी अऊ फँसाय वाला काम ह कभू खतम नी होथे, ई बुता ह सुंदर के रूप म हमेसा रही। कई झन मन कथें, बहुरूपिया ह भकली के बिहाता सुंदर जईसे दिखथे। अब्दूल ह आतंकवादी बन गेहे। पूलिस ओला नी पकड़ पाथे। आतंकवाद ई संसार ले कभू खतम नी होथे, अब्दूल के सकल म हमेसा रही। बलदू के अमर मया ल कोनो समझ नी पाथें। ओकर जईसे महादानी दूसर कभू नी होईन। भकली–जकली नाम ले एक संस्था चलत हे। संस्था के मइनसे मन अब घूम–घूम के उपदेस नी देथें। संस्था के संदेस ह सिरिफ यूट्यूब म आत हे। भेकलीन, सुनयना मन घलो एमे कोनो कंटेंट अपलोड नी करत हें। कोनो–कोनो कथें कि संस्था के माध्यम ले संदेस बलदू ह देथे। बनेच दिन के गेय ल सुने म आईस कि बलदू बन के आने कोई ह 'भकली–जकली' संस्था म कंटेंट अपलोड करत हे। सुने म अहु अईसे कि बलदेव के दिल्ली कोचिंग वाले चेला–चेली मन वीडियो–लेक्चर बना के डालत हें। ए ह कभू बंद नी होय। चेला के चेला, फिर ओकर चेला मन ए काम ल करत रहीं। अईसने 'भकली–जकली' संस्था ह देस–दुनिया ल सुधारे के काम, जगाय के काम, संस्कीरिती ल जीर्णोद्धार करे के काम ल करत हे।

सुंदर ह खतम होगे हे, लेकिन धोखाधड़ी अऊ फँसाय के काम ह ई दूनिया ले कभू खतम नी होईस, जिंदा हे। अब्दूल ह खतम होगे हे, लेकिन आतंकवाद ह ई दूनिया ले कभू खतम नी होईस, जिंदा हे। बलदेव ह कोनो आने रूप म हमेसा

जिंदा हे। 'भकली–जकली' ह कोनो आने रूप म हमेसा जिंदा हे। सुंदर अऊ अब्दुल ल पुलिस अऊ कानून ह सजा नी दे पाईस। ओमन मर गेहे लेकिन ओमन के काम ह कभू नी मरत हे। ओमन के सरीर ह नस्ट होगे हे, लेकिन ओमन के करम–जाल ह अमरबेल के जईसे संसार ले कभू नी मिटत हे। जकली ह गुनत हे– ''ओ दिन बहुरूपिया ल मारे बर में ह लउठी उठाँय त लाईट काबर गोल होगे ? बलदू ह अपन के आँखि ल मोला दीस, त अपन के नाँव–पता ला काबर छुपाईस ?''

सीरीनयना ह काजल अऊ दादू के अपराधी ल नी धर पाईस। भेकलीन ह अपन अपराधी पति ल सजा नी दे पाईस। जेकलीन ह अपन आँखि के असली मालिक ल नी चिन पाईस। बलदेव ह अपन के मया ल नी भेंट पाईस।

❑❑❑